ISLAM KE BUNYADI AQEEDE (HINDI)

जदीद व क़दीम तमाम मुसलमानों के लिये बेहतरीन किताब

《Welcome to Islam》

का तर्जमा बनाम

इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ीदे

(मअ़ दीने इस्लाम के बारे में 27 सुवाल जवाब)

ईमान

रोज़ा

नमाज़

हज

ज़कात

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा** । दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

अल्हम्दुलिल्लाह عزوجل **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त** (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़हा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ॽ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

जदीद व क़दीम तमाम मुसलमानों के लिये
बेहतरीन किताब

Welcome to Islam

का तर्जमा बनाम

इस्लाम के बुन्यादी अक़ीदे

मअ़ दीने इस्लाम के बारे में 27 सुवाल जवाब

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए इस्लाही कुतुब)

नाशिर

मक्तबतुल मदीना, देहली

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ الله

नाम किताब : इस्लाम के बुन्यादी अक़ीदे

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)

पहली बार : जुमादल ऊला, सि. 1437 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 02 जुमादल ऊला 1437 हि. हवाला नम्बर : 201

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلٰی اٰلہ و اصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"इस्लाम के बुन्यादी अक़ीदे"

(मत्बूआ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के हवाले से मक़्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
22-02-2015

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net
www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ीदे" के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "18 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر للطبرانی، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) याद दाश्त वाले सफ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर)

इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴿14﴾ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़ कम चार सफ़हात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴿15﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴿16﴾ इस ह़दीसे पाक 'تَهَادَوْا تَحَابُّوْا' एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطاامام مالك، ج٢،ص٤٠٧،الحديث:١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴿17﴾ इस किताब के मुत़ालए का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा ﴿18﴾ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)।

अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप का मुरत्तब कर्दा रिसाला "**सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े**" मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी*

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार***

क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है।

इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब
﴿3﴾ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
﴿4﴾ शो'बए तराजुमे कुतुब
﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत,

परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

पेशे लफ़्ज़

इस रूए ज़मीन पर मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और अदयान के मानने वाले आबाद हैं जो अपनी अपनी तहज़ीब और ए'तिक़ाद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं लेकिन ख़ालिक़े काइनात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे आ़लिया में मक़्बूल दीन "**इस्लाम**" है।

चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنَّ الدِّیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ
(پ۳،اٰل عمران:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** के यहां इस्लाम ही दीन है।*

और दूसरे मक़ाम पर है :

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۸۵﴾ (پ۳،اٰل عمران:۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वोह हरगिज़ उस से क़बूल न किया जाएगा और वोह आख़िरत में ज़ियांकारों से है।*

साबिक़ा तमाम अम्बिया عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام भी इसी दीने इस्लाम पर थे चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर, सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی आयत :

وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾
(پ۳،اٰل عمران:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसलमान हैं।*

के तहत फ़रमाते हैं : और येह भी मा'लूम होता है कि पहले अम्बिया عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का दीन इस्लाम था न कि यहूदिय्यत व नस्रानिय्यत।

इन तमाम जलीलुल क़द्र अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام ने लोगों को एक **अल्लाह** पर ईमान लाने और उसी की इ़बादत बजा लाने की दा'वत दी । सब से आख़िर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया और उन पर क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया और उन्हें अख़्लाक़े ह़सना का बेहतरीन नमूना बनाया अब रहती दुन्या तक क़ुरआने पाक और आप की सुन्नत ही दीन की बुन्याद हैं ।

इस्लाम एक फ़ित़्री और आफ़ाक़ी दीन है और इन्सानिय्यत के लिये कामिल हिदायत है इस की ता'लीमात और अह़काम ख़ालिक़े काइनात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाज़िल कर्दा हैं लिहाज़ा इन्हीं पर अ़मल पैरा हो कर दोनों जहान में कामयाबी मुमकिन है। हर एक को चाहिये कि इस्लामी ता'लीमात सीखे और अपने अ़क़ाइद, इ़बादात, मुआ़मलात और अख़्लाक़िय्यात वग़ैरा में अगर कुछ कोताही पाए तो इस्लाम की रोशनी में उस कोताही को दूर करे और मुकम्मल त़ौर पर इस्लामी ज़ाबित़ए ह़यात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने में कोशां रहे ।

ज़ेरे नज़र किताब में इस्लामी अ़क़ाइद को आसान अन्दाज़ में बयान करने की कोशिश की गई है और इख़्तिसार के साथ अरकाने इस्लाम पर भी रोशनी डाली गई है । आख़िरी अबवाब में इस्लामी अह़कामात व ता'लीमात से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ सुवालात क़ाइम कर के उन के आ़म फ़हम जवाबात दिये गए हैं और इस ज़िम्न में जा बजा क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे नबवी भी नक़्ल फ़रमाई हैं । हर एक के लिये इस का मुत़ालआ़ मुफ़ीद है । इस से क़ब्ल येह किताब मक्तबतुल मदीना से अंग्रेज़ी में welcome to islam के नाम से

शाएअ़ हो चुकी है और अब उर्दू में, शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह से अ़ता कर्दा "**इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ीदे**" के नाम से शाएअ़ की जा रही है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" येह किताब दर्जे ज़ैल ख़ुसूसियात से मुज़य्यन कर के बेहतर अन्दाज़ में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है :

۞....."**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" के अन्दाज़ के मुत़ाबिक़ इस किताब को भी ज़ेवरे तख़रीज से आरास्ता करते हुवे अह़ादीस व रिवायात की मक़दूर भर तख़रीज का एहतिमाम किया गया है।

۞.....जिन कुतुब से तख़रीज की गई है आख़िर में उन तमाम की फ़ेहरिस्त "माख़ज़ो मराजेअ़" के नाम से बनाई गई है और इस फ़ेहरिस्त में मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नाम मअ़ सिने वफ़ात, मत़ाबेअ़ और सिने त़बाअ़त भी ज़िक्र कर दिये गए हैं।

۞.....जा बजा मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब भी लगाए गए हैं।

۞.....आयात में क़ुरआनी रस्मुल ख़त़ (ख़ते़ उ़स्मानी) बर क़रार रखने के लिये तमाम आयात एक मख़्सूस क़ुरआनी सॉफ़्टवेर से (Corel Draw के ज़रीए़) पेस्ट की गई हैं।

۞.....आयाते क़ुरआनी का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान से पेश किया गया है।

۞.....आयात व तराजिम का तक़ाबुल "कन्ज़ुल ईमान" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) से दो मरतबा किया गया है।

۞.....अ़लामाते तरक़ीम (Punctuation Marks) या'नी कॉमा, फ़ुल स्टॉप, कॉलन, इन्वर्टेड कॉमाज़ (Inverted Commas) वग़ैरा का ज़रूरतन एहतिमाम किया गया है।

۞.....किताब को ख़ूब सूरत बनाने के लिये हेडिंग्ज़ (Headings) क़ुरआनी आयात, बा'ज़ इबारात, नम्बरिंग और बॉर्डर वग़ैरा की तरकीब डिज़ाइनिंग सॉफ्टवेर Corel Draw के ज़रीए़ की गई है।

۞.....दो मरतबा पूरी किताब की प्रुफ़ रीडिंग की गई है।

इस किताब में आप को जो ख़ूबियां नज़र आएं यक़ीनन वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इनायत से हैं और उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام बिल ख़ुसूस शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी ज़ियाई مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی के फ़ैज़ान का सदक़ा हैं और बावुजूदे एह़तियात़ के जो ख़ामियां रह गईं उन्हें हमारी त़रफ़ से नादानिस्ता कोताही पर मह़मूल किया जाए। क़ारेईन ख़ुसूसन उ़लमाए किराम دَامَتْ فُيُوْضُهُم से गुज़ारिश है अगर कोई ख़ामी आप मह़सूस फ़रमाएं या अपनी क़ीमती आरा और तजावीज़ देना चाहें तो हमें तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ फ़रमाइये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी रिज़ा के लिये काम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّم

शो'बए इस्लाही़ कुतुब

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अल्लाह तआ़ला पर ईमान

मुसलमान होने के लिये येह ज़रूरी है कि इन्सान अल्लाह तआ़ला की वह्दानिय्यत को माने और हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत व रिसालत को माने।

अल्लाह तआ़ला एक है, उस की खुदाई में, उस के कामों में, उस के अह्काम में और उस के अस्मा में कोई उस का शरीक नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वाजिबुल वुजूद है जिस का मा'ना येह है कि उस का वुजूद ज़रूरी है और अ़दम मुहाल है, वोह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, सिर्फ़ अल्लाह ही ग़ैर महदूद ता'रीफ़ों, मह़ब्बतों और इ़बादत का ह़क़्दार है।

अल्लाह तआ़ला किसी का मोह्ताज नहीं है बल्कि हर शै अल्लाह तआ़ला की मोह्ताज है।

अल्लाह तआ़ला की ज़ात का अ़क़्ल के ज़रीए़ से इहा़ता़ नहीं किया जा सकता, वोह हमारे ख़याल और समझ से वरा है, अ़क़्ल, दानाई, और हि़क्मत इन ज़राएअ़ से अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम ज़ात को जानना मुमकिन नहीं है, वोह ख़यालात से वरा है, वोह किसी ह़द में मह़दूद नहीं है।

किसी चीज़ को तसव्वुर में तब ही लाया जा सकता है जब उस की कोई तै शुदा शक्लो सूरत हो और अल्लाह तआ़ला शक्लो सूरत से पाक है, ला मह़दूद है और हर पाबन्दी से आज़ाद है, लिहाज़ा अ़क़्ल में उस की कोई भी शक्लो सूरत बिठाना मुमकिन नहीं है, अलबत्ता अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ पर ग़ौर और तदब्बुर करने से और उस के साथ साथ अल्लाह तआ़ला की दी हुई ने'मत अ़क़्ल को इस्ति'माल करने से अल्लाह तआ़ला के वुजूद की मा'रिफ़त मुमकिन है।

अल्लाह तआ़ला न किसी का बाप है और न किसी का बेटा और न ही उस की कोई बीवी है, जो येह माने या कहे कि अल्लाह तआ़ला किसी का बाप है या बेटा है वोह दाइरए इस्लाम से ख़ारिज है।

अल्लाह तआ़ला सारे कमालात का जामेअ़ है, हर नापाकी, ऐ़ब, ज़ुल्म, बद अख़्लाक़ी और बे ह़याई के कामों से पाक है, किसी नक़्स, कोताही या कमज़ोरी का उस की ज़ात में पाया जाना बिल्कुल ना मुमकिन है।

झूट बोलना, धोका देना, बद तमीज़ी, वह़शत, जहालत, बे रह़मी और इस जैसी दीगर मज़्मूम चीज़ें अल्लाह तआ़ला के लिये मुमकिन नहीं हैं।

अल्लाह तआ़ला वक़्त, जगह और सम्त की हुदूद से, शक्लो सूरत और हर वोह चीज़ जो मख़्लूक़ से मुशाबहत रखती है उस से पाक है।

अल्लाह तआ़ला को दुन्या में देखना येह हमारे आक़ा ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ख़ास है।(1)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मे'राज की रात अल्लाह तआ़ला का जागते हुवे सर की आंखों से दीदार किया।(2)

बाक़ी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने मुराक़बा या ख़्वाब की ह़ालत में अल्लाह तआ़ला का दीदार किया।(3)

रिवायत है कि ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में सो से ज़ियादा मरतबा अल्लाह तआ़ला का दीदार किया।(4)

1.....बहारे शरीअ़त हिस्सा 1,1/20

2.....बहारे शरीअ़त हिस्सा 1,1/68

3.....बहारे शरीअ़त हिस्सा 1,1/21

4.....منح الروض الازہر، ص ١٢٤ व बहारे शरीअ़त हिस्सा 1,1/21

इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के इलावा बा'ज़ औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को भी ख़्वाब में अल्लाह तआ़ला का दीदार होता है।

अल्लाह तआ़ला मालिकुल मुल्क या'नी सब से बड़ा बादशाह है, वोह जो चाहे जब चाहे जैसे चाहे अपनी मरज़ी से करता है किसी का उस पर क़ब्ज़ा या तसल्लुत़ नहीं है और कोई उस के इरादे से उसे फेर नहीं सकता। अल्लाह तआ़ला को न ऊंघ आती है और न नींद वोह सारे जहानों को हमेशा देखता है। अल्लाह तआ़ला न कभी थकता है और न उदास होता है, अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी इस काइनात की हि़फ़ाज़त करने वाला नहीं, वोह सब से ज़ियादा बर्दाश्त करने वाला, ख़याल रखने वाला, और मां बाप से भी ज़ियादा रह़म करने वाला है, उस की रह़मत टूटे हुवे दिलों का चैन है, सारी शानें और अ़ज़मतें सिर्फ़ उसी के लिये हैं।(1)

नबुव्वत पर ईमान

मुसलमान के लिये अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की सिफ़ाते ह़मीदा को मानना ऐसे ही ज़रूरी है जैसे अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात को मानना ज़रूरी है, नबुव्वत के बारे में इतना और सह़ीह़ इल्म ज़रूरी है कि जिस की वज्ह से अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की त़रफ़ ग़लत़ बातें मन्सूब करने, ग़लत़ अ़क़ीदे इख़्तियार करने और उन की अ़ज़मत व मर्तबे के ख़िलाफ़ कुछ कहने या सुनने से बच सकें।

---

(1).....बहारे शरीअ़त हिस्सा 1,1/22 माख़ूज़न।

अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام सब इन्सान थे

नबी एक ऐसा इन्सान है जिस पर इन्सानों की हिदायत के लिये **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से वह़ी नाज़िल होती है, ऐसे इन्सान को **अल्लाह** का रसूल भी कहते हैं।

जितने भी नबी तशरीफ़ लाए सब के सब इन्सान और मर्द थे, किसी औ़रत को कभी भी नबी के मर्तबे पर फ़ाइज़ नहीं किया गया, **अल्लाह** तआ़ला पर येह ज़रूरी नहीं था कि वोह अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को भेजे। बहर ह़ाल येह उस का ह़द दरजा करम और उस की मेह्रबानी है कि उस ने इन्सान की हिदायत के लिये नबियों को भेजा, नबी सिर्फ़ वोही होता है जिस पर वह़ी नाज़िल होती है, वोह वह़ी चाहे फ़िरिश्ते के ज़रीए़ से हो या किसी और ज़रीए़ से।[1]

अल्लाह तआ़ला के चन्द मुअ़ज़्ज़ज़ नबियों के अस्मा

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की हिदायत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक बहुत से अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को भेजा, बा'ज़ के नाम क़ुरआने पाक में वज़ाह़त के साथ बयान हुवे और बा'ज़ के बयान नहीं हुवे, वोह अम्बिया जिन के तज़्किरे क़ुरआने पाक में हैं उन के अस्माए गिरामी मुन्दरिजए ज़ैल हैं :

﴾1﴿ आदम عَلَيْهِ السَّلَام[2] ﴾2﴿ इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام[3] ﴾3﴿ नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام[4] ﴾4﴿ हूद عَلَيْهِ السَّلَام[5] ﴾5﴿ सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام[6] ﴾6﴿ इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام[7]

1.....बहारे शरीअ़त हिस्सा 1,1/68 माख़ूज़न।

2.....پ۱، البقرۃ:۳۱

3.....پ۱٦، مریم:٥٦

4.....پ۱۹، الشعراء:۱۰٦

5.....پ۱۹، الشعراء:۱۲٤

6.....پ۱۹، الشعراء:۱٤۲

7.....پ٦، النساء:۱٦۳

﴾7﴿ इस्माईल عَلَیْهِ السَّلَام[1] ﴾8﴿ इस्हाक़ عَلَیْهِ السَّلَام[2]

﴾9﴿ लूत़ عَلَیْهِ السَّلَام[3] ﴾10﴿ या'क़ूब عَلَیْهِ السَّلَام[4]

﴾11﴿ यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام[5] ﴾12﴿ शोऐ़ब عَلَیْهِ السَّلَام[6]

﴾13﴿ अय्यूब عَلَیْهِ السَّلَام[7] ﴾14﴿ मूसा عَلَیْهِ السَّلَام[8]

﴾15﴿ हारून عَلَیْهِ السَّلَام[9] ﴾16﴿ ज़ुल किफ़्ल عَلَیْهِ السَّلَام[10]

﴾17﴿ दावूद عَلَیْهِ السَّلَام[11] ﴾18﴿ सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام[12]

﴾19﴿ ज़करिय्या عَلَیْهِ السَّلَام[13] ﴾20﴿ यह़्या عَلَیْهِ السَّلَام[14]

﴾21﴿ यूनुस عَلَیْهِ السَّلَام[15] ﴾22﴿ इल्यास عَلَیْهِ السَّلَام[16]

﴾23﴿ अल यसअ़ عَلَیْهِ السَّلَام[17] ﴾24﴿ ईसा عَلَیْهِ السَّلَام[18]

﴾25﴿ उ़ज़ैर عَلَیْهِ السَّلَام[19] और

﴾26﴿ सारे नबियों के सरदार ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم[20]

---

1 ......پ٦، النساء:١٦٣
2 ......پ٦، النساء:١٦٣
3 ......پ١٩، الشعراء:١٦١
4 ......پ٦، النساء:١٦٣
5 ......پ١٢، یوسف:٤
6 ......پ١٩، الشعراء:١٧٧
7 ......پ٦، النساء:١٦٣
8 ......پ٩، الاعراف:١٠٤
9 ......پ٦، النساء:١٦٣
10 ......پ١٧، الانبياء:٨٥
11 ......پ٦، النساء:١٦٣
12 ......پ٦، النساء:١٦٣
13 ......پ١٦، مریم:٧
14 ......پ١٦، مریم:٧
15 ......پ٦، النساء:١٦٣
16 ......پ٢٣، الصافات:١٢٣
17 ......پ٧، الانعام:٨٦
18 ......پ٦، النساء:١٦٣
19 ......پ١٠، التوبة:٣٠
20 ......پ٢٢، الاحزاب:٤٠ व बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1,1/ 48 माख़ूज़न

अम्बिया की ता'दाद

अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام की ता'दाद यक़ीन के साथ मुतअ़य्यन करना दुरुस्त नहीं क्यूंकि अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام की ता'दाद के मुआ़मले में रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं लिहाज़ा महफ़ूज़ तरीक़ा येह है कि इन्सान यूं कहे कि अल्लाह तआ़ला ने कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام को इन्सानों की हिदायत के लिये भेजा।

फ़िरिश्तों पर ईमान

फ़िरिश्ते न मर्द हैं और न औ़रत, न खाते हैं न पीते हैं, वोह नूर से पैदा किये गए हैं और उन्हें येह ताक़त ह़ासिल है कि वोह कोई भी शक्लो सूरत इख़्तियार कर लें लेकिन वोह अल्लाह तआ़ला की मरज़ी और हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करते, हर फ़िरिश्ते के ज़िम्मे कोई न कोई काम है, कुछ फ़िरिश्ते अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से उस के नबियों की त़रफ़ वह़ी लाते हैं, कुछ की ज़िम्मेदारी बारिश बरसाना है, कुछ मख़्लूक़ तक रिज़्क़ पहुंचाने की ज़िम्मेदारी अदा करते हैं, कुछ फ़िरिश्ते मां के पेट में बच्चे की शक्लो सूरत बनाते हैं और कुछ इन्सानी जिस्म में आने वाली तब्दीलियों की देख भाल करते हैं, कुछ फ़िरिश्तों की ज़िम्मेदारी है कि वोह जानदार चीज़ों की उन के दुश्मनों से और सख़्त ख़त़रात से ह़िफ़ाज़त करें और कुछ फ़िरिश्ते घूम फिर कर ऐसी महाफ़िल में शामिल होते हैं जिन में अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

का ज़िक्र होता है, कुछ फ़िरिश्ते हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में दुरूदो सलाम पढ़ने वालों का दुरूदो सलाम पेश करते हैं और कोई वोह है जो क़ियामत के दिन से पहले सूर फूंकेगा ।(1)

हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام सब फ़िरिश्तों के सरदार हैं, उन का ख़िताब रूहुल अमीन है, उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में चौबीस हज़ार मरतबा हाज़िरी दी है ।(2)

इसी त़रह़ आदम عَلَيْهِ السَّلَام के पास बारह मरतबा, इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام के पास चार मरतबा, नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास पचास मरतबा, इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के पास बयालीस मरतबा, अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास तीन मरतबा, या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास चार मरतबा, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास चार सो मरतबा और ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास दस मरतबा हाज़िरी दी है ।(3)

दीगर मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्तों में से सय्यिदुना मीकाईल, सय्यिदुना इस्राफ़ील और सय्यिदुना इज़्राईल عَلَيْهِمُ السَّلَام हैं, सय्यिदुना इज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मौत के फ़िरिश्ते हैं, फिर कुछ और फ़िरिश्ते हैं जो अ़र्श और कुरसी को उठाए हुवे हैं, फ़िरिश्तों की अपनी कोई राए या अपने अ़क़्ली फ़ैसले नहीं होते, वोह पैदा ही मह़ज़ **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म मानने के लिये किये गए हैं । वोह क्यूं, कैसे, क्या, इस त़रह़ के सुवाल

---

1 ......बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1,1/ 90 माख़ूज़न

2 ......تفسیر روح البیان، پ۱۹، الشعراء، تحت الآیۃ: ۱۹۳، ۶/۳۰۶

3 ......تفسیر السراج المنیر، ۱/۱۲۰ (لیس فیہ ذکر ایوب و یعقوب علیہما السلام)

अल्लाह तआ़ला की इजाज़त के बिग़ैर नहीं पूछते वोह मुकम्मल त़ौर पर **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त में रहते हैं।

दो फ़िरिश्ते हमेशा इन्सान के साथ उस के दोनों कन्धों पर होते हैं, उन को किरामन कातिबीन कहते हैं, वोह अच्छे बुरे आ'माल लिखते हैं, दूसरे दो मशहूर फ़िरिश्ते मुन्कर और नकीर हैं, मय्यित को दफ़्ना देने के बा'द येह फ़िरिश्ते मय्यित से ईमान के मुतअ़ल्लिक़ तीन सुवाल पूछते हैं :

सुवाल नम्बर 1 : तेरा रब कौन है ?

सुवाल नम्बर 2 : तेरा दीन क्या है ?

सुवाल नम्बर 3 : इस ज़ात के बारे में तू क्या कहा करता था ? (ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ इशारा करते हुवे।)

जिन्न

एक दूसरी त़ाक़तवर मख़्लूक़ जिस को जिन्न कहा जाता है येह आग से बनाए गए हैं, कुछ ऐसे हैं कि वोह कोई भी शक्लो सूरत इख़्तियार कर सकते हैं, इन की ज़िन्दगियां बहुत लम्बी होतीं हैं और कुछ चीज़ें उन की इन्सानों की त़रह़ होती हैं जैसे अ़क़्ल और रूह़। वोह खाते, पीते, शादियां करते हैं और उन की भी औलाद होती है, इन्सानों की त़रह़ इन्तिक़ाल भी करते हैं, उन में मुसलमान भी हैं ग़ैर मुस्लिम भी, सह़ीहुल अ़क़ीदा भी और बद मज़हब भी, सब जिन्नों को बुरा समझना सख़्ती से मन्अ़ किया गया है।[1]

---

1 ......बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1/96 माख़ूज़न

अल्लाह तआ़ला की किताबों पर ईमान

सारी आस्मानी किताबें सच्ची हैं और जो अह़काम **अल्लाह** तआ़ला ने उन में दिये हैं उन पर ईमान लाना ज़रूरी है अलबत्ता कुरआने पाक के इ़लावा दीगर किताबों में तब्दीली और तह़रीफ़ की वज्ह से उन की मौजूदा इ़बारतों पर सुवालिया निशान खड़ा हो गया है।

उन मुक़द्दस किताबों की ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मा उन किताबों के मानने वालों को दिया गया था, बजाए इस के कि वोह लोग किताबों को सीनों और तख़्तियों में मह़फ़ूज़ करते किताबों में तब्दीलियां करने लग गए, नतीजा येह निकला कि उन किताबों से ए'तिमाद उठ गया क्यूंकि वोह ऐसी न रहीं जैसे नाज़िल हुई थीं।

लोगों ने अपने मफ़ाद की ख़ातिर उन किताबों के अल्फ़ाज़, हुरूफ़ और मआ़नी तब्दील कर दिये और अपनी ख़्वाहिशात के मुत़ाबिक़ किताबों में कमी बेशी कर डाली, आस्मानी किताबों में इस त़रह़ की तब्दीली को तह़रीफ़ कहते हैं, इस लिये मुनासिब येह है कि जब हमारे सामने कोई ऐसी चीज़ आए कि जिस का ज़िक्र पिछली किताबों में है हम उसे सिर्फ़ इस सूरत में क़बूल करेंगे कि वोह कुरआने पाक के साथ मुत़ाबक़त रखती हो, लेकिन अगर वोह चीज़ कुरआने पाक की ता'लीमात से टकराती है तो उस को तह़रीफ़ का नतीजा समझेंगे।

लिहाज़ा अगर पिछली किताबों के ह़वाले से कोई चीज़ हमारे सामने आए तो वोह चीज़ कुरआने पाक से मुत़ाबक़त रखती है या नहीं इस की तह़क़ीक़ किये बिग़ैर हम न तो फ़ौरन उसे क़बूल कर लें और न ही इन्कार करें, इस मुआ़मले में एह़तियात़ का दामन पकड़े रहना बहुत ज़रूरी है।

कु़रआने मजीद अल्लाह तआ़ला का आख़िरी कलाम है

अल्लाह तआ़ला ने कई मुक़द्दस किताबें और सह़ीफ़े अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के ज़रीए़ से इन्सानों को अ़ता फ़रमाए, इन में से चार किताबें बहुत ज़ियादा मशहूर हैं :

﴾1﴿.......**तौरात :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर उतारी गई।

﴾2﴿.......**ज़बूर :** ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام पर उतारी गई।

﴾3﴿.......**इन्जील :** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर उतारी गई।

﴾4﴿.......**कु़रआने मजीद :** ख़ातमुल अम्बिया व रुसुल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतारा गया।

अल्लाह तआ़ला के कलाम होने की ह़ैसिय्यत से इन किताबों में मर्तबे के ए'तिबार से कोई फ़र्क़ नहीं, कलामे इलाही होने के ह़वाले से सब किताबें बराबर हैं अलबत्ता कु़रआने मुक़द्दस ह़ुसूले सवाब के ह़वाले से सब किताबों में अ़ज़ीम है।[1]

मौत और क़ब्र

जब रूह़ जिस्म से निकल जाती है तो इस ह़ालत को मौत कहते हैं, हर एक ने मरना है, मौत से किसी को कोई चीज़ नहीं बचा सकती, हर एक के लिये मौत का वक़्त मुतअ़य्यन है, कोई भी चीज़ उस को मुअख़्ख़र नहीं कर सकती, जब किसी की ज़िन्दगी ख़त्म हो रही होती है तो इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام आ कर उस की रूह़ निकाल लेते हैं, जब मरने वाला शख़्स अपने दाएं बाएं देखता है तो उसे हर त़रफ़ फ़िरिश्ते नज़र

1 ......बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, 1/29 माख़ूज़न

आते हैं, रह्मत के फ़िरिश्ते मुसलमान के पास आते हैं और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते काफ़िर के पास आते हैं, मुसलमान की रूह़ को रह्मत के फ़िरिश्ते आसानी और इ़ज़्ज़त के साथ निकालते हैं और काफ़िर की रूह़ बड़े दर्द और बे हुरमती के साथ निकाली जाती है।[1]

जब कोई क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाता है, रूहें उस शख़्स को देखती पहचानती हैं और जो वोह कहता है उस को सुनती भी हैं बल्कि रूहें तो ज़ाइरीन के क़दमों की आहट भी सुनती हैं।[2]

तदफ़ीन के बा'द क्या होता है ?

जब इन्सान को दफ़्न कर दिया जाता है तो क़ब्र तंग हो कर मय्यित को दबाती है, मुसलमान को ऐसे दबाती है जैसे मां अपने बच्चे को गले से लगा कर ज़ोर से दबाती है।[3] और काफ़िर को इस त़रह़ दबाती है कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं।[4]

जब लोग दफ़्ना कर वापस जाने लगते हैं तो मय्यित उन के क़दमों की आहट सुनती है।[5] उस वक़्त दो फ़िरिश्ते जिन के नाम

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الموت، فصل تلقين المحتضر،الجزء١٥، ٨/٢٣٨،حديث:٤٢١٦٢ ماخوذًا

2 ......كنزالعمال، كتاب الموت،فصل فی زيارة القبور،الجزء١٥، ٨/٢٧٢،حديث:٤٢٥٤٩ ماخوذًا وص٢٥٤، حديث:٤٢٣٧٢

3 ...... شرح الصدور، ذكر تخفيف ضمة القبر على المؤمن،ص٣٤٥

4 ......مسند امام احمد، مسند انس بن مالك بن النضر،٤/٢٥٣،حديث:١٢٢٧٣ و مصنف عبد الرزاق، كتاب الجنائز، باب الصبر والبكاء والنياحة،٣/٣٧٦،حديث:٦٧٣١

5 ......مسلم، كتاب الجنة ...الخ،باب عرض مقعد...الخ،ص١٥٣٥،حديث:٢٨٧٠

मुन्कर और नकीर हैं अपने लम्बे दांतों से ज़मीन को चीरते फाड़ते हुवे क़ब्र में आते हैं, उन की शक्लें बहुत डरावनी और ख़ौफ़नाक होती है, उन के जिस्मों के रंग काले और उन की आंखें नीली और बहुत बड़ी बड़ी होतीं हैं गोया कि उन की पेशानियों से बाहर निकलती हुई मा'लूम होंगी, उन से आग के शो'ले निकलते होंगे, उन के बाल बहुत ख़ौफ़नाक और सर से पाउं तक लम्बे होंगे उन के दांत भी बहुत लम्बे होंगे जिस से वोह ज़मीन फाड़ देंगे, वोह मुर्दे को सख़्ती से हिला कर उठाएंगे और बड़े मज़बूत़ और सख़्त लहजे में येह तीन सुवाल पूछेंगे :

﴾1﴿......مَن رَّبُّکَ؟ (तेरा रब कौन है ?)

﴾2﴿......مَا دِيْنُکَ؟ (तेरा दीन क्या है ?)

﴾3﴿......مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِيْ حَقِّ هٰذَا الرَّجُلِ؟ (तुम इस शख़्स के बारे में क्या कहा करते थे ?) अगर मय्यित मुसलमान है तो उस के मुन्दरिजए ज़ैल जवाबात होंगे :

﴾1﴿......رَبِّيَ اللهُ (मेरा रब **अल्लाह** है)

﴾2﴿......دِيْنِيَ الْإِسْلَامُ (मेरा दीन इस्लाम है)

﴾3﴿......هُوَ رَسُوْلُ اللهِ (वोह **अल्लाह** के रसूल हैं)

अब आस्मानों से एक आवाज़ सुनाई देगी कि मेरे बन्दे ने सच कहा है इस के लिये जन्नत का दस्तरख़्वान बिछा दो, इसे जन्नती कपड़े पहनने के लिये दे दो और जन्नत के दरवाज़े इस के लिये खोल दो । ठन्डी हवा और जन्नत की ख़ुश्बू फ़ज़ा को भर देगी, क़ब्र को वसीअ़ कर दिया जाएगा ।(1)

1......الروض الفائق، فصل فی عذاب القبر للکفار، ص ۳۵۰

फ़िरिश्ते कहेंगे : दुल्हन की त़रह़ सो जा जैसे वोह शबे ज़ुरूस में सोती है।[1]

येह सब नेक मुसलमानों के लिये होगा। गुनहगार मुसलमान अपने गुनाहों के हि़साब से अ़ज़ाब दिये जाएंगे, येह अ़ज़ाब एक वक़्त तक के लिये जारी रहेगा, जब कोई मय्यित के लिये दुआ़ करे तो उस दुआ़ के सबब मय्यित से अ़ज़ाब दूर हो सकता है या फिर **अल्लाह** तआ़ला मह़ज़ अपनी रह़मत से मय्यित को बख़्श दे।

अगर मय्यित मुनाफ़िक़ (काफ़िर) है तो वोह इन सुवालों का जवाब न दे सकेगा और कहेगा : هَاه! هَاه! لَاأَدْرِی या'नी अफ़्सोस मैं कुछ नहीं जानता, एक बुलाने वाला गरजदार आवाज़ में कहेगा : येह झूटा है, जहन्नम का दस्तरख़्वान इस के लिये बिछा दो, इसे जहन्नम के आग वाले कपड़े पहनने के लिये दो और इस के लिये जहन्नम के दरवाज़े खोल दो, दो फ़िरिश्ते उसे आग के बड़े बड़े हथोड़ों से मार मार कर अ़ज़ाब देंगे, बहुत सारे सांप और बिच्छू भी उसे डसते रहेंगे, मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों में वोह मुब्तला किया जाता रहेगा यहां तक कि क़ियामत का दिन आ जाएगा।[2]

क़ियामत

मुसलमान के लिये इस ह़क़ीक़त पर ईमान रखना ज़रूरी है कि हर एक की मौत का दिन और वक़्त मुतअ़य्यन हो चुका है, दुन्या की हर

1 ...... ترمذی، کتاب الجنائز، باب عذاب القبر، ۲/۳۳۸،حدیث: ۱۰۷۳

2 ......مسند امام احمد،مسند الکوفیین،۶/۴۱۴، حدیث:۱۸۵۵۹ ماخوذاً

शै एक दिन फ़ना होने वाली है, अल्लाह तआ़ला के हुक्म से एक दिन येह जहान ख़त्म हो जाएगा, वोही आख़िरी दिन कहलाता है, उसी को क़ियामत कहते हैं।

रिवायत में है कि ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام अ़र्श के नीचे घुटनों के बल झुके हुवे सूर को अपने हाथ में लिये हुवे इस बात का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि कब अल्लाह तआ़ला का हुक्म आए और वोह सूर फूंकें, पहली बार सूर फूंकने से पूरी काइनात तबाहो बरबाद हो जाएगी। ज़मीन, आस्मान, फ़िरिश्ते, इन्सान उस दिन तबाह हो जाएंगे सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही हमेशा रहेगा।[1] लेकिन क़ियामत के आने से पहले बहुत सारे ऐसे निशान ज़ाहिर होंगे जिस से येह पता चल जाएगा कि क़ियामत नज़दीक आ चुकी है, कुछ निशानियां ज़िक्र की जातीं हैं :

इ़ल्म का उठ जाना

उ़लमाए दीन के फ़ौत हो जाने की वज्ह से आहिस्ता आहिस्ता इ़ल्मे दीन उठ जाएगा, कुछ उ़लमा होंगे भी लेकिन उन के दिलो दिमाग़ ह़क़ीक़ी इ़ल्मे दीन से ख़ाली हो चुके होंगे, उस वक़्त लोगों का ज़ेह्न दीनी और मज़्हबी नहीं रहेगा।[2]

---

1 ......درمنثور، پ۷، الانعام، تحت الآیة: ۷۳، ۳/۲۹۷و پ۲٤، الزمر،تحت الآیة:٦٨، ۷/۲۵٦ ماخوذًا

2 ......بخاری، کتاب العلم، باب کیف یقبض العلم، ۱/۵٤،حدیث:۱۰۰وفتح الباری، کتاب العلم، باب رفع العلم، ۲/۱٦۲تحت الحدیث:۸۰ ماخوذًا و عمدۃ القاری، کتاب العلم ، باب رفع العلم، ۲/۱۱٦، تحت الحدیث:۸۰

जिन्सी बिगाड़

जिन्सी बिगाड़ में तरक़्क़ी हो जाएगी, ज़िना और बदकारी आ़म हो जाएगी ।[1]

बे ह़याई इस ह़द तक पहुंच जाएगी कि इन्सान जानवरों की त़रह़ सरे आ़म जिमाअ़ करेगा । इ़ज़्ज़तो एह़तिराम, अख़्लाक़ो आदाब जो कि छोटों को बड़ों के साथ जोड़े रखते हैं येह चीज़ें ख़त्म हो जाएंगी ।[2]

मर्दों की आबादी कम हो जाएगी और औ़रतों की आबादी बढ़ जाएगी यहां तक कि एक मर्द के लिये पचास औ़रतें ता'दाद के ह़िसाब से होंगी ।[3]

झूटे नबी

अगर्चे नबुव्वत ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़त्म हो चुकी फिर भी कुछ लोग नबुव्वत का दा'वा करेंगे, कुछ झूटे नबी जिन को हम जानते हैं उन के नाम येह हैं :

﴾1﴿......मुसैलिमा कज़्ज़ाब : अ़रब के रेगिस्तानी अ़लाक़े "नज्द" से इस का तअ़ल्लुक़ है । ﴾2﴿......तुलैह़ा बिन ख़ुवैलिद ﴾3﴿......अस्वद अ़नसी ﴾4﴿......मिरज़ा गुलाम अह़मद क़ादियानी[4]

1......بخاری، کتاب النکاح، باب: یقل الرجال ویکثر النساء، ٣/٤٧٢، حدیث:٥٢٣١
وعمدة القاری، کتاب العلم، باب رفع العلم، ٢/١١٥، تحت الحدیث:٨٠

2......مسلم، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال...الخ، ص ١٥٧٠، حدیث:٢٩٣٧و شرح
النووی علی مسلم ،کتاب الفتن، باب ذکر الدجال...الخ،الجزء١٨،٩/٧٠ و
در منثور، پ٢٩: القلم، تحت الآیة:١٣، ٨/٢٤٦

3......بخاری،کتاب العلم، باب رفع العلم، ١/٤٧، حدیث:٨١

4......बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, 1/117 माख़ूज़न

इन सब ने नबुव्वत का झूटा दा'वा किया, और दूसरे झूटे नबी जो अभी तक ज़ाहिर नहीं हुवे यक़ीनन एक एक कर के क़ियामत से पहले नबुव्वत का झूटा दा'वा करेंगे।

माल की कसरत

मालो दौलत कसरत के साथ हर जगह नज़र आएगी।(1) मालो दौलत की येह कसरत और इस के फ़ितने इस क़दर बढ़ जाएंगे कि अहलुल्लाह और नेक लोगों के लिये इस का बरदाश्त करना मुश्किल हो जाएगा।(2) और वोह क़ब्रिस्तानों में जा कर बैठ जाएंगे और ख़्वाहिश करेंगे कि हमें मौत आ जाए।(3)

वक़्त बहुत जल्दी गुज़रेगा

वक़्त इतना जल्दी गुज़रेगा गोया एक साल एक महीने की त़रह़ लगेगा और महीना हफ़्ते की त़रह़ लगेगा और हफ़्ता दिन की त़रह़ लगेगा और दिन ऐसे गुज़र जाएगा गोया कि चन्द लम्ह़े गुज़रे हों।(4) वक़्त से बरकत उठ जाएगी, लोग दीने इस्लाम का इ़ल्म इस्लाम की तरक़्क़ी के लिये नहीं बल्कि अपनी दुन्यवी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये ह़ासिल करेंगे।(5)

---

1 ......مسلم، کتاب الزکاة، باب الترغیب فی الصدقة...الخ، ص٥٠٥، حدیث:١٥٧ و بخاری، کتاب أحادیث الأنبیاء، باب نزول عیسی ابن مریم علیهما السلام، ٢/٤٥٩، حدیث:٣٤٤٨

2 ......مسلم، کتاب الزکاة، باب الترغیب فی الصدقة، ص٥٠٥، حدیث: ١٥٧

3 ......مسلم ، کتاب الفتن و اشراط الساعة،باب لاتقوم الساعة یمر الرجل بقبر الرجل...الخ، ص١٥٥٥،حدیث:٢٩٠٧

4 ......ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی قصر الأمل،٤/١٤٩،حدیث:٢٣٣٩

5 ...... ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی علامة...الخ،٤/٩٠، حدیث:٢٢١٨

मर्द औ़रतों के मह़कूम (ग़ुलाम) बन जाएंगे। बच्चे मां बाप के ना फ़रमान हो जाएंगे। कुछ इस बात को तरजीह़ देंगे कि वोह अपने दोस्तों में रहें और मां बाप को छोड़ देंगे। लोग मस्जिदों में दुन्यावी गुफ़्तगू करेंगे। मूसीक़ी और नाच का हर जगह दौर दौरा होगा। लोग अपने आबा व अज्दाद पर ला'नत करेंगे और उन के बारे में बुरी बातें कहेंगे।[1] जंगली जानवर इन्सानों से बातें करेंगे।[2] घटया और जाहिल लोग बड़ी बड़ी आ़लीशान इ़मारतों में रहेंगे।[3]

क़ियामत की बा'ज़ बड़ी निशानियां

इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़ुहूर

जब इस्लाम हर जगह पर मिट कर ह़िजाज़े मुक़द्दस तक मह़दूद हो चुका होगा उस वक़्त ह़ज़रते इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़ुहूर होगा, उस वक़्त दुन्या कुफ़्फ़ार से भरी हुई होगी, ऐसे ज़िल्लत और रुस्वाई वाले वक़्त में औलियाउल्लाह, सालिह़ीन, अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ रखने वाले मुसलमान अपने अपने मुल्कों और शहरों को छोड़ कर मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा में पनाह लेंगे।

रमज़ान के महीने में ह़ज़रते इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों के साथ ख़ानए का'बा का त़वाफ़ कर रहे होंगे, औलियाउल्लाह उन्हें पहचान लेंगे और उन से बैअ़त लेने के लिये अ़र्ज़ करेंगे, इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले इन्कार करेंगे बिल आख़िर ग़ैब से एक आवाज़ सुन कर उन की

1 ...... ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی علامۃ...الخ، ۴/۹۰، حدیث:۲۲۱۸

2 ......ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی کلام السباع، ۴/۷۶، حدیث:۲۱۸۸

3 ......مسلم، کتاب الایمان، باب الایمان و الاسلام...الخ، ص۲۱، حدیث:۸ و बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, 1/116-120 माख़ूज़न

दरख़्वास्त क़बूल कर लेंगे, ग़ैब से येह आवाज़ आएगी : "येह महदी हैं येह **अल्लाह** तआ़ला के ख़लीफ़ा हैं, इन की बात को सुनें और इन की इत़ाअ़त करें" सब लोग फिर अपने ईमान का इज़्हार कर के इमाम महदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बैअ़त करेंगे और इमाम महदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ सब लोगों को मुल्के शाम ले जाएंगे।[1]

दज्जाल का ज़ुहूर

दज्जाल मसीहे़ कज़्ज़ाब का नाम है जो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के इ़लावा अपना असरो रुसूख़ हर जगह क़ाइम कर लेगा।[2] चालीस दिनों के अन्दर अन्दर पूरी दुन्या में दौरा कर लेगा, इन चालीस दिनों में से एक दिन साल के बराबर होगा और दूसरा दिन एक महीने के बराबर होगा और तीसरा दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा और बाक़ी अय्याम अपने मा'मूल के मुत़ाबिक़ होंगे, दज्जाल एक तबाही मचा देने वाली आंधी की त़रह़ पूरी दुन्या का चक्कर लगाएगा।[3]

जो कुछ उस के रास्ते में आएगा वोह उस को तबाहो बरबाद कर देगा, उस की रफ़्तार उन बादलों की त़रह़ होगी जिन को ज़ोरदार हवा चला रही होती है, जिस त़रफ़ जाएगा हर चीज़ को तबाहो बरबाद करता हुवा गुज़रता जाएगा, और वोह बहुत सारे करतब दिखाएगा, वोह अपने इस्तिद–राज और जादू के ज़ोर से लोगों को मुतास्सिर करेगा जिस की वज्ह से कुछ लोग उस के पीछे चल पड़ेंगे, दज्जाल के पास आंखों को हैरान कर देने वाली दो चीज़ें होंगी जिस की वज्ह से वोह लोगों को

1 ......बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, 1/124 माख़ूज़न

2 ......مسلم، کتاب الفتن، باب قصة الجساسة، ص١٥٧٦، حديث:٢٩٤٢

3 ......مسلم، کتاب الفتن، باب فی ذکر الدجال، ص١٥٦٩، حديث:٢٩٣٧

उक्साएगा और धोका देगा, उस के पास एक बाग़ होगा और एक आग होगी वोह इन को जन्नत और जहन्नम कहेगा और जहां कहीं वोह जाएगा वोह इन चीज़ों को अपने साथ ले कर जाएगा, ह़क़ीक़त में येह एक शो'बदा और जादू होगा, उस की जो जन्नत होगी वोह दर अस्ल आग होगी और जिस को वोह जहन्नम कहेगा वोह अम्न और आराम की जगह होगी। वोह लोगों को हुक्म देगा कि वोह उसे ख़ुदा मानें।[1] और जो उस को ख़ुदा मान लेगा वोह उसे अपनी जन्नत में डाल देगा और जो उस का इन्कार करेगा वोह उसे अपनी जहन्नम में डाल देगा।[2]

वोह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा।[3] ज़मीन से सब्ज़ियां और घास उगाएगा, वोह बादलों से पानी बरसाएगा, उस के ज़ेरे असर जो अ़लाक़े होंगे उन में जानवरों की ता'दाद बढ़ जाएगी और वोह सिह़्ह़त मन्द हो जाएंगे, जानवरों के थनों में दूध बढ़ जाएगा, जब जंगलों से गुज़रेगा मालो दौलत के ख़ज़ाने उस के पीछे ऐसे चल रहे होंगे जैसे शहद की मख्खियों के झुन्ड।[4]

वोह बहुत सारे और भी शो'बदे दिखाएगा, बिल आख़िर येह बात साबित हो जाएगी कि वोह सब शो'बदे थे, इस्तिद–राज था और जादू का कमाल था और उस के सारे कर्तब जादू की वज्ह से मह़ज़ धोका होंगे, जैसे ही दज्जाल एक जगह को छोड़ कर जाएगा तो उस जगह पर ज़ाहिर होने वाली सारी की सारी शो'बदे बाज़ियां ख़त्म हो जाएंगी, जब

---

1 ......مسلم، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال، ص۱۵٦۷،حدیث:۲۹۳٤و مسند امام احمد، مسند جابر بن عبد الله، ٥/١٥٦، حديث:١٤٩٥٩

2 ......فیض القدیر ، حرف الدال، ۳ / ۷۱۹ ، تحت الحديث: ٤٢٥١

3 ......مسند امام احمد، مسند البصريين، ٧/٢٦٠، حديث:٢٠١٧١

4 ......ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی فتنة الدجال، ٤/١٠٤، حديث:٢٢٤٧

कभी दज्जाल मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा जाने का इरादा करेगा फ़िरिश्ते उस के रुख़ को किसी दूसरी त़रफ़ फेर देंगे।[1]

दज्जाल के साथ यहूदियों की फ़ौज होगी।[2] और दज्जाल की पेशानी पर "ک،ف،ر" येह तीन ह़र्फ़ नक़्श किये होंगे (जिस से येह वाज़ेह़ होता होगा कि येह शख़्स काफ़िर है) सिर्फ़ मुसलमान ही इन हुरूफ़ को देख पाएंगे और पढ़ पाएंगे।[3]

जब दज्जाल दुन्या का एक चक्कर पूरा कर लेगा और वोह मुल्के शाम पहुंचेगा तो येह सुब्ह़े सादिक़ का वक़्त होगा, नमाज़े फ़ज्र की अज़ान अभी मुकम्मल नहीं होगी कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ के मशरिक़ी मनारे पर नुज़ूल फ़रमाएंगे।[4] इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां मौजूद होंगे और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام उन से फ़रमाएंगे कि आप नमाज़ पढ़ाएं, ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की मौजूदगी दज्जाल के लिये बड़ी तबाह कुन साबित होगी और दज्जाल पिघलना शुरूअ़ हो जाएगा जैसा कि नमक पानी में पिघलता है और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की सांस की ख़ुश्बू से दज्जाल को बड़ी तक्लीफ़ होगी और ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की सांस की ख़ुश्बू बढ़ती चली जाएगी यहां तक कि दज्जाल भागने पर मजबूर हो जाएगा, ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام दज्जाल का पीछा करेंगे यहां तक कि नेज़े से उस को क़त्ल कर देंगे।[5] दज्जाल के फ़ितने और उस की त़ाक़त और हुकूमत का ख़ातिमा, येह नए दौर का फ़त्ह़े बाब होगा।

---

1 ......مسلم، کتاب الفتن، باب قصة الجساسة، ص١٥٧٧،حدیث:٢٩٤٣

2 ......ابن ماجه، ابواب الفتن، باب فتنة الدجال،٤/٤٠٦، حدیث:٤٠٧٧

3 ......مسلم، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال، ص١٥٦٧، حدیث:٢٩٣٣

4 ......مسلم، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال،ص١٥٦٩، حدیث:٢٩٣٧

5 ......ابن ماجه، ابواب الفتن، باب فتنة الدجال، ٤/٤٠٦،حدیث:٤٠٧٧

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मौजूदगी की बरकत से ने'मतों में इज़ाफ़ा होगा, लोगों के पास इतनी दौलत आ जाएगी कि ज़रूरत मन्द व मोह़ताज शख़्स को ढूंडना मुश्किल हो जाएगा।(1) लोगों की आपस में दुश्मनी नहीं होगी, ह़सद नहीं होगा एक दूसरे पर बद ए'तिमादी और इस त़रह़ की बुरी आ़दतें ख़त्म हो जाएंगी।(2)

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ख़िन्ज़ीर को मारेंगे और सलीब को तोड़ देंगे।(3) उस वक़्त जितने भी अहले किताब मौजूद होंगे और जितने लोग दज्जाल के पीछे लग कर अपना ईमान बरबाद कर चुके होंगे वोह सब के सब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के हाथ पर बैअ़त कर लेंगे और इस्लाम ले आएंगे फिर एक ही दीन होगा और वोह दीने इस्लाम होगा।(4)

याजूज व माजूज का ज़ुहूर

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मौजूदगी की बरकत यूं ज़ाहिर होगी कि हर त़रफ़ **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों की बारिश बरस रही होगी, याजूज व माजूज नामी एक क़ौम का ज़ुहूर होगा जो कि क़त्लो ग़ारत करेंगे, जिस त़रफ़ वोह जाएंगे हर चीज़ को तबाहो बरबाद करते हुवे गुज़र जाएंगे, दरयाओं और झीलें जो उन के रास्ते में आएंगी उन का

---

1 ......بخاری، کتاب أحاديث الأنبياء، باب نزول عيسى ابن مريم عليهما السلام، ٢/٤٥٩، حديث:٣٤٤٨

2 ......مسلم، کتاب الإيمان، باب نزول عيسى ابن مريم...الخ، ص٩٢،حديث:٢٤٣

3 ......بخاری، کتاب أحاديث الأنبياء، باب نزول عيسى ابن مريم عليهما السلام، ٢/٤٥٩، حديث: ٣٤٤٨

4 ......ابوداود، کتاب الملاحم، باب (ذكر) خروج الدجال،٤/١٥٨، حديث:٤٣٢٤

पानी पी कर ख़त्म कर देंगे, वोह चलते जाएंगे यहां तक कि ख़मर पहाड़ जो कि बैतुल मुक़द्दस में है वहां तक पहुंच जाएंगे, इन्सानों के क़त्ले आ़म के बा'द आस्मान वालों को भी क़त्ल करने की कोशिश करेंगे, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और दीगर मोमिनीन मदद के लिये दुआ़ करेंगे, **अल्लाह** तआ़ला ऐसे कीड़े भेजेगा, जो "याजूज व माजूज" की क़ौम को ख़त्म कर देंगे लिहाज़ा वोह सब हलाक हो जाएंगे और उन की लाशों को परन्दे उठा कर ले जाएंगे। फिर कई दिनों तक मूसलाधार बारिश होगी, ज़मीन बहुत साफ़ सुथरी और ज़र ख़ैज़ हो जाएगी, येह ऐसे वक़्त का आग़ाज़ होगा कि जिस में रिज़्क़ की फ़रावानी होगी और चीज़ों में बरकतें नज़र आएंगी, यूं बुरे दिनों के बा'द फिर अच्छे दिन लोगों पर ज़ाहिर हो जाएंगे।[1]

دَابَّةُ الْاَرْض का ज़ुहूर

دَابَّةُ الْاَرْض बहुत ताक़तवर और ज़मीनी जानवर है, इस की बड़ी ख़तरनाक और वह़शियाना शक्ल होगी, इस के एक हाथ में मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा होगा और दूसरे हाथ में ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगूठी होगी, अ़सा के ज़रीए़ से वोह मुसलमानों की पेशानी पर एक चमकदार निशान लगाएगा और हर काफ़िर की पेशानी पर वोह अंगूठी के ज़रीए़ से एक काला निशान दाग़ देगा, येह निशान मुसलमान को काफ़िर से जुदा कर देगा।[2]

---

1 ......ترمذی، کتاب الفتن باب ماجاء فی فتنة الدجال، ٤/١٠٤، حدیث:٢٢٤٧ ملخصًا
व बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, 1/124-125

2 ......ابن ماجه، ابواب الفتن، باب دابة الارض، ٤/٣٩٣، حدیث:٤٠٦٦
व बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, 1/126

सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा

एक वक़्त ऐसा आएगा जब कि सूरज मशरिक़ के बजाए मग़रिब से तुलूअ़ होगा, येह इस बात की निशानी होगी कि तौबा का दरवाज़ा बन्द हो चुका है, अब **अल्लाह** तआ़ला किसी की तौबा क़बूल नहीं फ़रमाएगा, अब किसी का इस्लाम क़बूल करना भी क़बूल नहीं होगा।(1)

ख़ुश्बूदार और ठन्डी ठन्डी हवा का चलना

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के चालीस साल के बा'द क़ियामत क़ाइम होगी और उन आख़िरी अय्याम में इस दुन्या के अन्दर ठन्डी और ख़ुश्बूदार हवा चलेगी और इस हवा के ज़रीए़ से सारे ईमान वालों की रूहें उन के जिस्मों से निकल जाएंगी।(2) उन चालीस सालों में कोई औ़रत बच्चा पैदा नहीं कर सकेगी।(3) इस से मा'लूम हुवा कि चालीस साल से कम उ़म्र वाले पर क़ियामत क़ाइम न होगी और येह मुकम्मल तौ़र पर कुफ़्र का ज़माना होगा, हर त़रफ़ कुफ़्फ़ार ही कुफ़्फ़ार होंगे और कोई **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करने वाला नहीं बचेगा।

सूर का फूंका जाना

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के चालीस साल बा'द जब क़ियामत आएगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म देगा कि वोह सूर फूंकें, येह क़ियामत के दिन की इब्तिदा होगी।

---

1 ......ابن ماجه، ابواب الفتن، باب طلوع الشمس من مغربها، ٣٩٦/٤، حديث:٤٠٧٠

व बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, 1/126

2 ...... مسلم، كتاب الفتن، باب ذكر الدجال...الخ، ص ١٥٧٠، حديث:٧٣٧٣

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, 1/127

पहले सूर की आवाज़ हल्की होगी, आहिस्ता आहिस्ता बढ़ती जाएगी और बहुत ऊंची हो जाएगी, लोग अपने रोज़ मर्रह के कामों में मसरूफ़ होंगे, ज़ोरदार सूर की आवाज़ सुन कर सब के सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे और मर जाएंगे, येह बहरा कर देने वाली ज़ोरदार आवाज़ सारे जहान को तबाहो बरबाद कर देगी।

हर मौजूद चीज़ मसलन ज़मीन, आस्मान, सूरज, चांद, सितारे, पहाड़, इन्सान, फ़िरिश्ते बल्कि खुद इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام और इन का सूर सब फ़ना हो जाएंगे, **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मौजूद न होगा, उस दिन **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : "आज के दिन बादशाहत किस की है ?" कोई जवाब देने वाला नहीं होगा, फिर **अल्लाह** तआ़ला खुद येह इरशाद फ़रमाएगा : "सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये जो वाहि़द है और क़ह्हार है।"[(1)]

सूर के पहली मरतबा फूंके जाने और दूसरी मरतबा फूंके जाने के दरमियान चालीस साल का वक़्फ़ा होगा, पहली बार जब सूर फूंका जाएगा तो हर चीज़ तबाहो बरबाद हो जाएगी, **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात के सिवा कुछ नहीं बचेगा, सूर के फूंके जाने का तज़्किरा **अल्लाह** तआ़ला कुरआने मजीद में फ़रमाता है :

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، ٤/٢٤٩، حدیث:٦٥٠٦ و شعب الایمان، باب فی حشر الناس...الخ، فصل فی صفة یوم القیامة، ١/٣١٢، حدیث:٣٥٣ و

बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, 1/128

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿۸﴾ وَ اِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿۹﴾ وَ اِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿۱۰﴾

(پ۲۹، المرسلٰت: ۸ تا ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब तारे महव कर दिये जाएं और जब आस्मान में रख़ने पड़ें और जब पहाड़ ग़ुबार कर के उड़ा दिये जाएं।

فَاِذَا نُفِخَ فِی الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿۱۳﴾ وَّ حُمِلَتِ الْاَرْضُ وَ الْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿۱۴﴾ فَیَوْمَىٕذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿۱۵﴾ وَ انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِیَ یَوْمَىٕذٍ وَّاهِیَةٌ ﴿۱۶﴾ (پ۲۹، الحاقة: ۱۳ تا ۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब सूर फूंक दिया जाए एक दम और ज़मीन और पहाड़ उठा कर दफ़्अ़तन चूरा कर दिये जाएं वोह दिन है कि हो पड़ेगी, वोह होने वाली और आस्मान फट जाएगा तो उस दिन उस का पतला हाल होगा।

فَاِذَا نُقِرَ فِی النَّاقُوْرِ ﴿۸﴾ فَذٰلِكَ یَوْمَىٕذٍ یَّوْمٌ عَسِیْرٌ ﴿۹﴾ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ غَیْرُ یَسِیْرٍ ﴿۱۰﴾

(پ۲۹، المدثر: ۸ تا ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब सूर फूंका जाएगा तो वोह दिन कर्रा (सख़्त) दिन है काफ़िरों पर आसान नहीं।

وَ نُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِیْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِیَامٌ یَّنْظُرُوْنَ ﴿۶۸﴾ (پ۲۴، الزمر: ۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सूर फूंका जाएगा तो बेहोश हो जाएंगे जितने आस्मानों में है और जितने ज़मीन में मगर जिसे **अल्लाह** चाहे फिर वोह दोबारा फूंका जाएगा जभी वोह देखते हुवे खड़े हो जाएंगे।

इस्लाम की बुन्यादें

पांच अरकाने इस्लाम मुसलमान की ज़िन्दगी के तमाम ज़ावियों को मुकम्मल करते हैं, पांच अरकाने इस्लाम मुन्दरिजए ज़ैल हैं :

﴾1﴿......ईमान

मुसलमान होने के लिये येह ज़रूरी है कि दिल से तस्दीक़ करने के साथ साथ ज़बान से भी इन अल्फ़ाज़ का इक़रार करे कि : "**अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल हैं।"

येह तस्दीक़ इस बात की शहादत देती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मौजूद है उस के जैसा कोई नहीं है और कोई भी उस का हमसर नहीं, वोह सब से बड़ा है, सिवाए उस के कोई भी इ़बादत का ह़क़दार नहीं है और येह इस बात की भी गवाही है कि सब मौजूद चीज़ों का ख़ालिक़ो मालिक **अल्लाह** तआ़ला है, **अल्लाह** तआ़ला क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِؕ وَ مَا یَتَّبِعُ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَؕ اِنْ یَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ اِنْ هُمْ اِلَّا یَخْرُصُوْنَ﴿۶۶﴾

(پ۱۱، یونس:٦٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सुन लो बेशक **अल्लाह** ही की मिल्क हैं जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीनों में और काहे के पीछे जा रहे हैं वोह जो **अल्लाह** के सिवा शरीक पुकार रहे हैं वोह तो पीछे नहीं जाते मगर गुमान के और वोह तो नहीं मगर अटकलें दौड़ाते।*

और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने का मत़लब येह है कि वोह अम्बिया में से हैं और **अल्लाह** तआ़ला के सब से आख़िरी रसूल हैं, उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम इन्सानों तक बड़े अह़सन अन्दाज़ में पहुंचा दिया है।

क़ुरआने पाक नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आख़िरी नबी होने की गवाही देता और ए'लान करता है :

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿۴۰﴾ (پ۲۲،الاحزاب:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं हां **अल्लाह** के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले और **अल्लाह** सब कुछ जानता है।*

क़ुरआने पाक इस बात की भी तस्दीक़ करता है कि हमारे प्यारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अल्फ़ाज़ मुबारक को भी इस्मत ह़ासिल है या'नी आप के अल्फ़ाज़ में ख़त़ा का इमकान नहीं है जो अल्फ़ाज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बोलते हैं वोह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल होते हैं,

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ؕ﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْیٌ يُّوْحٰى ﴿۴﴾ (پ۲۷،النجم:۳تا۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते वोह तो नहीं मगर वह़ी जो उन्हें की जाती है।*

लिहाज़ा कुरआने मुक़द्दस और हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत दीने इस्लाम की बुन्याद है, इन में ज़िन्दगी के हर पहलू की वज़ाहत और रहनुमाई मौजूद है।

﴾2﴿......नमाज़

नमाज़ अहले ईमान में हमेशा रही है, मुख़्तलिफ़ अम्बिया ने मुख़्तलिफ़ नमाज़ें पढ़ी हैं, नमाज़ दीन का अहम सुतून है, इस्लाम **अल्लाह** तआ़ला का इन्सानिय्यत की त़रफ़ आख़िरी पैग़ाम है इस में नमाज़ को बहुत अहम्मिय्यत दी गई है, मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह हर दिन में पांच नमाज़ें अपने मुक़र्रर अवक़ात में पढ़े और नमाज़ों को ऐसे अन्दाज़ और तरतीब से पढ़े जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी और हमें सिखाई।

पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और येह बन्दे का रब तआ़ला से ऐसा तअ़ल्लुक़ और रिश्ता है जिस में वोह अपने रब के साथ सरगोशी करता है, इस्लाम सिर्फ़ इस बात की दा'वत नहीं देता कि मुसलमान सिर्फ़ येह अ़मल कर लें बल्कि इस्लाम येह चाहता है कि मुसलमान नमाज़ के ज़रीए़ से अपनी रूहों को पाक करें, **अल्लाह** तआ़ला कुरआने करीम में नमाज़ के बारे में इरशाद फ़रमाता है :

اُتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِؕ وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ﴿۴۵﴾

(پ ۲۱، العنكبوت:٤٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ महबूब पढ़ो जो किताब तुम्हारी त़रफ़ वह़ी की गई और नमाज़ क़ाइम फ़रमाओ बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बेहयाई और बुरी बात से और बेशक **अल्लाह** का ज़िक्र सब से बड़ा और **अल्लाह** जानता है जो तुम करते हो।*

﴾3﴿......ज़कात

ज़कात का मा'ना है पाक करना या ज़ियादती, चूंकि ज़कात देने से माल पाक भी होता है और बढ़ता भी है इस लिये इस को ज़कात कहते हैं, येह इस्लाम का बड़ा अहम फ़ल्सफ़ा है कि सारी चीज़ें अल्लाह तआ़ला की मिल्किय्यत में हैं, अल्लाह तआ़ला ही हर शै का मालिक है और मुसलमानों पर येह लाज़िम किया गया है कि वोह रिज़्क़े ह़लाल कमाएं और इस कमाए हुवे रिज़्क़े ह़लाल से अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़र्च करें और ऐसे ख़र्च करें जैसे अल्लाह और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़र्च करने की ता'लीम दी है।

ज़कात अल्लाह तआ़ला का दिया हुवा एक बेहतरीन निज़ाम है, येह ख़ैरात भी नहीं है और येह टेक्स भी नहीं है मगर हर उस मुसलमान के लिये शरई फ़र्ज़ है जिस को अल्लाह तआ़ला ने इतनी दौलत दी है जो उस की ज़रूरतों से ज़ियादा हो और निसाब को पहुंचती हो लिहाज़ा टेक्स और ज़कात में येह बड़ा वाज़ेह़ फ़र्क़ है कि मुसलमान अपनी ख़्वाहिश से और अपनी मरज़ी से ज़कात अदा करता है और इस का ह़िसाब लगाता है, अपनी मरज़ी से ह़ुसूले सवाब के लिये ख़ुद मुसलमान ही ज़कात के मुआ़मले को देखते हैं, उन पर कोई ज़बरदस्ती नहीं की जाती जब कि टेक्स का मुआ़मला इस के बर अ़क्स है।

ज़कात मुसलमान पर सिर्फ़ उसी वक़्त फ़र्ज़ होती है जब वोह साहि़बे निसाब बनता है और उस निसाब पर साल गुज़र जाता है, ज़कात की तफ़्सीली मा'लूमात (मसलन ह़िसाब लगाना वग़ैरा) दारुल इफ़्ता से मा'लूम की जाएं, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के एड्रेस, ई मेल और फ़ोन नम्बर्ज़ येह हैं।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी) के पते

नम्बर शुमार	नाम	मक़ाम	अवक़ाते कार व ता'तील
1	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	जामेअ़ मस्जिद कन्ज़ुल ईमान (बाबरी चौक) गुरूमन्दर बाबुल मदीना (कराची)	10 ता 4 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
2	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	जामेअ़ मस्जिद बुख़ारी नज़्द पोलीस चौकी खारादर बाबुल मदीना (कराची)	11 ता 5 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
3	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	जामेअ़ मस्जिद रज़ाए मुस्तफ़ा बिल मुक़ाबिल मोबाइल मार्केट कोरंगी नम्बर 4 बाबुल मदीना (कराची)	12 ता 5 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
4	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	अक़्सा मस्जिद, अक्बर रोड, रीगल, सदर, बाबुल मदीना (कराची)	11 ता 4 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
5	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	आफ़न्दी टाउन बिल मुक़ाबिल फ़ैज़ाने मदीना बाबुल इस्लाम (हैदराबाद)	11 ता 4 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
6	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	जामेअ़ मस्जिद ज़ैनब, मुहम्मदिय्या कॉलोनी, सोसां रोड मदीना टाउन सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद)	10 ता 4 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
7	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	नज़्द मक्तबतुल मदीना, गंज बख़्श मार्केट, दाता दरबार मर्कज़ुल औलिया (लाहौर)	10 ता 4 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
8	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	लतीफ़ प्लाज़ा (ज्वेलरी मार्केट) फ़र्स्ट फ़्लोर, फ़ीरोज़पुर रोड अछरा मर्कज़ुल औलिया (लाहौर)	10 ता 4 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
9	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	नज़्द जामेअ़ मस्जिद ग़ौसिय्या हाजी अह़मद जान बेंक रोड सदर (रावलपिन्डी)	10 ता 4 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक
10	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	नूरी गेट, नज़्द बाटा शूज़, गुलज़ारे तय्यबा (सरगोधा)	10 ता 4 ता'तील जुमुअ़तुल मुबारक

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के फ़ोन नम्बर और मेल एड्रेस

फ़ोन सर्विस के अवक़ाते कार	0300 0220112	0300 0220113	बिल खुसूस पाकिस्तान और दुन्या भर के लिये
10am ता 4pm (वक़्फ़ा 1 ता 2) जुमुअ़तुल मुबारक ता'तील	0300 0220114	0300 0220115	बिल ख़ुसूस पाकिस्तान और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी अवक़ात के मुत़ाबिक़ 2pm ता 7pm (इलावा नमाज़ के अवक़ात)	0044 1213182692		बिल ख़ुसूस बरत़ानिय्या और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी अवक़ात के मुत़ाबिक़ 2pm ता 7pm (इलावा नमाज़ के अवक़ात)	0015 859020092		बिल ख़ुसूस अमेरिका और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी अवक़ात के मुत़ाबिक़ 2pm ता 7pm (इलावा नमाज़ के अवक़ात)	0027 318135691		बिल ख़ुसूस साउथ अफ़्रीक़ा और दुन्या भर के लिये

Email: darulifta@dawateislami.net

ज़कात मुसलमान को लालच से पाक कर देती है और ख़ुद ग़र्ज़ी से भी जान छूट जाती है नीज़ मालो दौलत और दुन्या की मह़ब्बत भी उस के दिल से निकल जाती है, **अल्लाह** तबारक व तआ़ला क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّذِیۡنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَ الۡاِیۡمَانَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ یُحِبُّوۡنَ مَنۡ هَاجَرَ اِلَیۡهِمۡ وَ لَا یَجِدُوۡنَ فِیۡ صُدُوۡرِهِمۡ حَاجَةً مِّمَّاۤ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिन्हों ने पहले से इस शहर और ईमान में घर बना लिया दोस्त रखते हैं उन्हें जो इन की त़रफ़ हिजरत कर के गए और*

أُوْتُوا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۟ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۹

(پ۲۸، الحشر:۹)

अपने दिलों में कोई ह़ाजत नहीं पाते उस चीज़ की जो दिये गए और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोह़ताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं ।

ज़कात एक ऐसा निज़ाम है जिस के ज़रीए़ से मसाकीन व फ़ुक़रा और ग़रीब व नादार की ज़रूरतों को बड़े अह़सन अन्दाज़ से पूरा किया जा सकता है और चन्द मालदार लोगों पर इस का ज़ियादा दबाव भी नहीं पड़ता जिस की वज्ह से उन के लिये कोई मुश्किल पैदा नहीं होती क्यूंकि ज़कात मुसलमानों की बहुत बड़ी ता'दाद दे रही होती है, अगर ज़कात के निज़ाम पर पूरा पूरा अ़मल किया जाए तो दुन्या भर के ग़रीब, फ़क़ीर और मिस्कीन मुसलमानों की ज़रूरतें बा आसानी पूरी हो सकतीं हैं ।

﴾4﴿.....रोज़ा

अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों पर रोज़े फ़र्ज़ कर दिये हैं जैसा कि उस ने साबिक़ा उम्मतों पर फ़र्ज़ किये,

अल्लाह तआ़ला क़ुरआने पाक में फ़रमाता है :

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝۱۸۳

(پ۲، البقرہ:۱۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुवे थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले ।*

इस्लाम में रोज़ा रखने का मत़लब येह है कि इन्सान रोज़े के अवक़ात में न खाए, न पिये और न जिमाअ़ करे और बाक़ी ममनूअ़ चीज़ों से भी अपने आप को बचाए, मसलन सिगरेट, पान गुटका वग़ैरा। रोज़े सिर्फ़ दिन के वक़्त रखे जाते हैं और सिर्फ़ रमज़ानुल मुबारक के महीने में इन का रखना फ़र्ज़ है और जब कोई **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये और उस का हुक्म मानते हुवे रोज़ा रखता है तो उस अहले ईमान को सब्र जैसी दौलत नसीब होती है और अपने नफ़्स पर कन्ट्रोल भी ह़ासिल होता है और फिर इस के साथ साथ मुसलमानों को रोज़ा येह भी याद दिलाता है कि तुम्हारे और भी मुसलमान भाई इस दुन्या में हैं जो भूके प्यासे हैं जिन को खाना चाहिये और जिन को पीने के लिये साफ़ पानी की ज़रूरत है, इस त़रह़ मुसलमानों के अन्दर दीगर मुसलमानों के साथ ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा पैदा होता है।

रमज़ानुल मुबारक के महीने में अच्छे अख़्लाक़ और नेकियों की त़रफ़ रुजह़ान भी बढ़ जाता है, बीस रक्अ़त तरावीह़ भी मुसलमान पढ़ते हैं, रोज़ा ज़िन्दगी के सुख से मुंह मोड़ने का नाम नहीं है बल्कि इस के ज़रीए़ से मुसलमानों को मज़ीद क़ुव्वत व तवानाई मिलती है और रोज़ा रखने की वज्ह से बहुत सी अच्छी अच्छी सिफ़ात की तरबिय्यत भी मिल जाती है नीज़ रोज़ मर्रा के काम भी आसान हो जाते हैं।

﴾5﴿......ह़ज

ह़ज हर साल मक्कतुल मुकर्रमा में अदा किया जाता है। जिन मुसलमानों में शरई शराइत़ के मुत़ाबिक़ ह़ज पर जाने की क़ाबिलिय्यत है सिर्फ़ उन्हीं पर ज़िन्दगी में एक बार ह़ज फ़र्ज़ है,

अल्लाह रब्बुल आ़लमीन क़ुरआने मजीद में फ़रमाता है :

فِيهِ ايٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾

(پ ٤، اٰلِ عمرٰن: ٩٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इस में खुली निशानियां हैं इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस में आए अमान में हो और अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का ह़ज करना है जो उस तक चल सके और जो मुन्किर हो तो अल्लाह सारे जहान से बे परवाह है।*

दुन्या भर से लाखों मुसलमान हर साल मक्के शरीफ़ में ह़ाज़िर होते हैं और ह़ज अदा करते हैं, ह़ज दुन्या के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में रहने वाले मुसलमानों को येह मौक़अ़ अ़त़ा करता है कि वोह एक जगह पर जम्अ़ हो कर अपने ह़ालात का एक दूसरे से तबादला करें और अल्लाह तआ़ला के मेहमान बन कर अपनी इस्लामी क़ुव्वत का इज़्हार करें, ह़ज अल्लाह तआ़ला पर ईमान और उस की कामिल इत़ाअ़त का ज़बरदस्त इज़्हार है और मनासिके ह़ज जो अदा किये जाते हैं येह अल्लाह तआ़ला की ग़ैर मशरूत़ इत़ाअ़त की निशानी है, ह़ाजी इस के इ़लावा कुछ नहीं चाह रहा होता कि उस की येह मेह़नत अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमा कर उस के सारे गुनाह मुआ़फ़ कर दे, वोह शख़्स जो ह़ज कर के वापस लौटता है वोह एक नई शख़्सिय्यत लिये हुवे वापस आता है, उस की रूह़ पाक हो चुकी होती है और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल की बारिश में वोह नहा कर अपने गुनाहों के मैल कुचेल उतार कर वापस आता है।

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लाने नबुव्वत फ़रमाया और लोगों को एक ख़ुदा की इबादत की तरफ़ बुलाया, बहुत सारे क़बाइल ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़्त मुख़ालफ़त की लेकिन बा'ज़ अफ़राद ने हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वते तौहीद को क़बूल कर लिया, येह लोग ईमान लाए और इन ही को सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के नाम से याद किया जाता है, येह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सादिक़ो अमीन की हैसिय्यत से जानते थे, हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो कि चालीस साल के बा वक़ार और बा इज़्ज़त इन्सान थे उन्हों ने दा'वा किया कि अल्लाह तआ़ला ने सब इन्सानों को मर्द हों या औ़रतें ग़ुलाम हों या आक़ा उन सब की शान के मुताबिक़ हुक़ूक़ अ़ता किये हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सब से ज़ियादा डरता है।

हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम ऐसा मज़बूत़ और दिलों को बदल देने वाला था कि अ़रब के जंगजू क़बीले और क़त्लो ग़ारत और बद दियानती में मश्हूर क़बीलों के सरदार इस पैग़ाम को क़बूल करने लगे, येह वोह पैग़ाम था कि जिस का नाम "इस्लाम" है और लफ़्ज़े इस्लाम का मा'ना है : "**अल्लाह तआ़ला की बारगाह में झुक जाना।**"

सुवाल हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कौन हैं ?

जवाब हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक शरीफ़ और बा इज़्ज़त घराने के फ़र्द हैं, वोह अख़्लाक़े ह़सना का बेहतरीन नमूना हैं,

अल्लाह तआ़ला ने इन अल्फ़ाज़ में इन की ता'रीफ़ फ़रमाई :

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿۴﴾

(پ:۲۹، القلم:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है।*

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों ने भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना की तस्दीक़ की, अबू जहल जो कि इस्लाम का सख़्त तरीन दुश्मन था उस ने एक दिन कहा : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं येह नहीं कहता कि आप झूटे हैं, मैं सिर्फ़ इस का इन्कार करता हूं, जो आप लाए हैं और जिस की त़रफ़ लोगों को दा'वत देते हैं।(1)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना को इन अल्फ़ाज़ में बयान किया : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रवय्या सख़्त नहीं था, आप ने कभी मजमअ़ में ऊंची आवाज़ से बात नहीं की और कभी फ़ोह़श कलामी नहीं की, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी बुराई का बदला बुराई से न लिया बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा मुआ़फ़ फ़रमाने वाले थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ दी तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी ग़ुस्सा नहीं फ़रमाया और न कभी इस का बदला लिया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ उसी वक़्त नाराज़ होते जब लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़ुदूद को तोड़ते।(2)

---

1 ......مستدرك حاكم، كتاب التفسير، ۳/۴۳، حديث:۳۲۸۳

2 ......شمائل محمدية، ص۱۹۷-۱۹۸ ملخصًا

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा आसान बात को अपनी उम्मत के लिये इख़्तियार फ़रमाते लेकिन अगर वोह गुनाह की बात होती तो आप उस से सब से ज़ियादा दूर होते ।(1)

जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने घर तशरीफ़ लाते तो आ़म शख़्स की त़रह़ होते या'नी अपने कपड़े ख़ुद धो लेते, बकरी दोह लेते और अपने दीगर काम ख़ुद कर लेते ।(2)

छोटी उ़म्र ही से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़िक्र करने वाले इन्सान की हैसिय्यत से देखा गया, अ़रब के लोगों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को "**अस्सादिक़**" और "**अल अमीन**" का ख़िताब दिया जिस का मा'ना "सच्चा" और "अमानतदार" है, हर वोह काम जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किया, हर वोह लफ़्ज़ जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुंह से निकला, हर वोह फ़िक्र जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ेहन में आई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन सब में हमेशा सच्चे थे, अहले अ़रब ने देखा कि इन का हर अ़मल बा मक़्सद होता है, जब कुछ कहने का मौक़अ़ न होता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहते लेकिन जब बोलते तो मुख़्लिसाना, हिक्मत भरी और दलाइल व बराहीन से पुर गुफ़्तगू फ़रमाते, हमेशा किसी मस्अले पर रोशनी डालते और येही वोह बोलना है जिस बोलने की **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक क़द्र है, लोगों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बड़ा मज़्बूत़, भाई चारगी से भरपूर और मुख़्लिस इन्सान पाया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सन्जीदा और मुख़्लिस किरदार वाले होने के साथ साथ ऐसा मिज़ाज रखते थे कि दूसरे लोग आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत में अम्न, ह़िफ़ाज़त, आराम,

---

1 ......مسند امام احمد، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها، ١٠/١٥٥، حديث:٢٦٤٦٧

2 ......كنزالعمال، كتاب الشمائل، المتفرقات، الجزء٧، ٤/٢٣٨، حديث:١٨٥١٤، ١٨٥١٧

ख़ुशी और सुख महसूस करते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारका पर हमेशा रोशनी बिखैरती हुई ख़ूब सूरत तरीन मुस्कुराहट होती।

हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत ख़ूब सूरत इन्सान थे जैसा कि सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्न को यूं बयान किया : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़द मुबारक उ़मूमी क़द से थोड़ा ज़ियादा था, तअ़ज्जुब की बात येह है कि मजमअ़ में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से भी दराज़ क़द नज़र आते जो दर ह़क़ीक़त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लम्बा क़द रखते थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जिल्द मुबारक का रंग गोरा और सुर्ख़ी माइल था लेकिन बहुत ज़ियादा सफ़ेद भी नहीं था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक सियाह और ख़मीदा थे (इतने घुंगरयाले न थे जिस से दाइरे की सूरत बनती नज़र आती हो), कान की लौ और कन्धों के दरमियान बाल मुबारक रहते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सर के बीच से मांग निकालते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़ाहिरी जिस्म मुबारक एक ताक़तवर मज़बूत़ मर्द की त़रह़ नज़र आता था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कन्धे मुबारक चौड़े थे और इन के दरमियान पीठ की त़रफ़ मोहरे नबुव्वत थी, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पेट मुबारक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीने से कभी आगे नहीं आया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारका ऐसे रोशन रहता गोया कि सूरज आप के चेहरे से चमकते हुवे गुज़र रहा है, जब लोग आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल का उन पर रो'ब पड़ जाता, जब पहली बार देखते तो येह कहने पर मजबूर हो जाते कि येह चेहरा किसी झूटे का नहीं है।

दीने इस्लाम के बारे में 27 सुवाल जवाब

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कौन है ? क्या मुसलमान मुख़्तलिफ़ खुदा (God) की इबादत करते हैं ?

जवाब कुछ लोग येह समझते हैं कि मुसलमान एक ऐसे खुदा की इबादत करते हैं जो कि उस खुदा से मुख़्तलिफ़ है जिस की इबादत ईसाइय्यत या यहूदिय्यत में की जाती है, येह ग़लत़ फ़हमी शायद इस वज्ह से पैदा होती है कि मुसलमान खुदा को अल्लाह कहते हैं और अल्लाह अ़रबी ज़बान में उस ज़ात का नाम है जिस के पास सब त़ाक़तें हैं, सिर्फ़ वोही इबादत का मुस्तह़िक़ है, उस ने सारे जहानों को और इन्सानों को पैदा किया।

इस बात में कोई शक न रहे कि मुसलमान उसी खुदा की इबादत करते हैं जिस की इबादत नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام, इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام, दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने की, बहर ह़ाल इस में भी कोई शको शुबा नहीं कि यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों का खुदा के बारे में मुख़्तलिफ़ नज़रिया है, मसलन मुसलमान, ईसाइयों के अ़क़ीदए तसलिय्यत और खुदा का इन्सानी सूरत में आना, इस की सख़्त मुख़ालफ़त करते हैं, इस अ़क़ीदे की वज्ह से यहूदी भी ईसाइयों के सख़्त मुख़ालिफ़ हैं, इसी त़रह़ यहूदियों का अ़क़ीदा है कि उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बेटे हैं, मुसलमान इस अ़क़ीदे का भी रद करते हैं मगर इस का मत़लब येह हरगिज़ नहीं कि येह तीनों अदयान तीन मुख़्तलिफ़ खुदाओं की पूजा करते हैं।

हम पहले ही इस बात की वज़ाह़त कर चुके हैं कि सच्चा खुदा सिर्फ़ एक ही है। यहूदी, ईसाई और मुसलमान सब का येह दा'वा है कि

वोह दीने इब्राहीम पर हैं, लेकिन इस्लाम ने इस बात की ख़ूब वज़ाह़त कर दी है कि दीगर अदयान वालों ने ख़ुदा तआ़ला के बारे में सह़ीह़ अ़क़ाइद को बिगाड़ दिया है और दीन की सच्ची ता'लीमात को हटा कर इन्सानों के बनाए हुवे नज़रियात को अपना लिया है।

तमाम अदयान से तअ़ल्लुक़ रखने वाले अ़रब ख़ुदा को "**अल्लाह**" ही कहते हैं, मिसाल के तौ़र पर अगर आप इन्जील का कोई अ़रबी तर्जमा उठा कर पढ़ें तो आप वहां वहां लफ़्ज़ **अल्लाह** देखेंगे जहां जहां इंग्लिश की इन्जील में लफ़्ज़ God होगा, इस से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि **अल्लाह** सिर्फ़ मुसलमानों का ख़ुदा नहीं बल्कि **अल्लाह** उसी ख़ुदा का नाम है जिस की तमाम अदयान में इ़बादत की जाती है, येह बात तो बिल्कुल ऐसे ही है जैसे कि कोई कहे कि फ़्रेन्च (French) लोग मुख़्तलिफ़ ख़ुदा की पूजा करते हैं क्यूंकि उन की ज़बान में ख़ुदा के लिये "Dieu" का लफ़्ज़ इस्ति'माल होता है और स्पेन वाले मुख़्तलिफ़ ख़ुदा की इ़बादत करते हैं क्यूंकि उन की ज़बान में ख़ुदा तआ़ला के लिये "Dios" का लफ़्ज़ इस्ति'माल होता है और इब्रानी वाले मुख़्तलिफ़ ख़ुदा की इ़बादत करते हैं क्यूंकि उन की ज़बान में ख़ुदा के लिये "Ya hweh" का लफ़्ज़ इस्ति'माल होता है।

बहर ह़ाल ख़ुदा तआ़ला के लिये लफ़्ज़ "**अल्लाह**" ही सब से मुनासिब लफ़्ज़ है क्यूंकि लफ़्ज़ "**अल्लाह**" की न तो जम्अ़ है और न ही इस की कोई जिन्स (मुज़क्कर व मुअन्नस के ह़वाले से) जब कि लफ़्ज़ God की जम्अ़ भी है और जिन्स भी मसलन Gods और Goddess (मुअन्नस ख़ुदा)।

कुरआने मुक़द्दस जो कि मुसलमानों के लिये **अल्लाह** तआला का कलाम है अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुवा, इस लिये मुसलमान God के लिये लफ़्ज़ "**अल्लाह**" का इस्ति'माल करते हैं अगर्चे वोह बात किसी और ज़बान में ही क्यूं न कर रहे हों मगर खुदा तआला के लिये अ़रबी का लफ़्ज़ ही ज़ियादा तर इस्ति'माल करते हैं जो कि "**अल्लाह**" है और लफ़्ज़ **अल्लाह** का तर्जमा इंग्लिश ज़बान में सिर्फ़ God की बजाए यूं किया जाए :

"The One true God या The One and only God"

सुवाल कुरआन कई जगहों पर **अल्लाह** तआला के लिये लफ़्ज़ "हम" का इस्ति'माल करता है, इस का मत़लब येह हुवा कि मुसलमान एक से ज़ियादा खुदाओं को मानते हैं ?

जवाब इस्लाम में ख़ालिस तौह़ीद का मानना लाज़िम है, इस्लाम इस बात की ता'लीम देता है कि **अल्लाह** सिर्फ़ एक है और उस की तक़्सीम मुमकिन नहीं है, कुरआने मुक़द्दस में **अल्लाह** तआला ने कई जगहों पर अपनी ज़ात के लिये "हम" का लफ़्ज़ इस्ति'माल किया लेकिन इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं है कि इस्लाम में एक से ज़ियादा खुदाओं का अ़क़ीदा पाया जाता है, **अल्लाह** तआला का अपने आप को कुरआने पाक में "हम" से ता'बीर फ़रमाना "त़ाक़त" और "बादशाहत" पर दलालत करता है।

कुछ ज़बानों में दो त़रह़ की जम्अ़ होती है, एक का तअ़ल्लुक़ दो या दो से ज़ियादा अश्ख़ास, चीज़ों या जगहों के साथ होता है और दूसरी जम्अ़ वोह होती है जो कि अ़ज़ीम रुत्बे, त़ाक़त और इनफ़िरादिय्यत पर दलालत करती है मसलन ख़ालिस अंग्रेज़ी ज़बान में England की मलिका जब तक़रीर करती है तो अपने लिये We या'नी "हम" का लफ़्ज़

इस्ति'माल करती है। (इस को Majestic Plural या फिर Royal Plural या'नी शानो शौकत या बादशाहत वाली जम्अ़ कहते हैं।)

सारे कुरआन में जगह ब जगह **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद पर ताकीदें मौजूद हैं, इस की वाज़ेह़ मिसाल इस छोटी सी सूरते मुबारका में देखी जा सकती है :

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ࣖ﴿۴﴾

(پ۳۰،سورة الاخلاص)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ वोह* ***अल्लाह*** *है वोह एक है* ***अल्लाह*** *बे नियाज़ है न उस की कोई औलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई।*

सुवाल कुरआन कहता है कि **अल्लाह** तआ़ला रह़म करने वाला है और वोह सख़्त अ़ज़ाब भी देता है तो येह दोनों बातें एक साथ कैसे दुरुस्त हो सकतीं हैं ? या तो वोह मुआ़फ़ करने वाला है या सज़ा देने वाला है !

जवाब कुरआने पाक में कई जगहों पर **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का ज़िक्र मौजूद है दर ह़क़ीक़त सिवाए एक के कुरआन की सारी सूरतें بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم से शुरूअ़ होती हैं, इस का मत़लब है "**अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़म वाला।"

रह़मान और रह़ीम दोनों अल्फ़ाज़ अ़रबी ग्रामर के ए'तिबार से मुबालग़े के सीग़े हैं, **रह़मान** का मा'ना है : "सारी मख़्लूक़ पर रह़म फ़रमाने वाला" और इन्साफ़ करना उस की रह़मत का ह़िस्सा है, **रह़ीम** का मा'ना है : "ख़ास कर ईमान वालों पर रह़म फ़रमाने वाला" और मुआ़फ़ कर देना भी उस की रह़मत का ह़िस्सा है।

इन दोनों सिफ़ात के इकट्ठे इस्ति'माल से बड़ा जामेअ़ और कामिल मा'ना ह़ासिल होता है, मुआ़फ़ करना और इन्साफ़ करना येह सब उस की रह़मत है, मज़ीद येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने पाक में सत्तर से ज़ियादा जगहों पर अपनी रह़मत और मुआ़फ़ी का ज़िक्र किया है, **अल्लाह** तआ़ला बार बार अपनी रह़मत व मग़्फ़िरत की हमें याद दिलाता है :

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۲۱۸﴾

(پ۲، البقرۃ: ۲۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और* ***अल्लाह*** *बख़्शने वाला मेह्रबान है।*

हां जो उस के अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ हैं उन को वोह सख़्त अ़ज़ाब भी देता है, **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया :

نَبِّئْ عِبَادِیْۤ اَنِّیْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۴۹﴾ وَ اَنَّ عَذَابِیْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِیْمُ ﴿۵۰﴾

(پ۱٤، الحجر: ٤٩، ٥٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ख़बर दो मेरे बन्दों को कि बेशक मैं ही हूं बख़्शने वाला मेह्रबान और मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है।*

अल्लाह तआ़ला इन्साफ़ फ़रमाने वाला है और येह बात इन्साफ़ को लाज़िम है कि वोह उन को इन्आ़म दे जो उस का हुक्म माने और उन को सज़ा दे जो उस की ना फ़रमानी और बग़ावत करे, अगर **अल्लाह** तआ़ला किसी मुजरिम को सज़ा दे तो येह उस का अ़द्ल और इन्साफ़ होगा और अगर वोह किसी मुजरिम को मुआ़फ़ फ़रमा दे तो येह उस की रह़मत, फ़ज़्ल और मुआ़फ़ी होगी, **अल्लाह** जो कि रह़मान व रह़ीम है, उन सब को मुआ़फ़ फ़रमा देता है जो तौबा करते हैं और ज़िन्दगी के किसी ह़िस्से में भी अपनी इस्लाह़ कर लेते हैं, उस ने इन्सानों को अपनी कसीर मुआ़फ़ी और रह़मत की त़रफ़ दा'वत दी है :

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۳﴾ وَ اَنِيْبُوْۤا اِلٰى رَبِّكُمْ وَ اَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَ اتَّبِعُوْۤا اَحْسَنَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿۵۵﴾

(پ۲۴، الزمر: ۵۳ تا ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है और अपने रब की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ और उस के हुज़ूर गर्दन रखो क़ब्ल इस के कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो और उस की पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब से तुम्हारी त़रफ़ उतारी गई क़ब्ल इस के कि अ़ज़ाब तुम पर अचानक आ जाए और तुम्हें ख़बर न हो।*

सुवाल कुछ लोग येह मानते हैं कि मुसलमान ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इबादत करते हैं क्या येह सच है ?

जवाब मुसलमान किसी त़रह़ से भी **अल्लाह** तआ़ला के रसूल और बन्दे ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इबादत नहीं करते, हम येह मानते हैं कि वोह **अल्लाह** के आख़िरी रसूल हैं, सारे नबियों के इमाम हैं और **अल्लाह** ने उन्हें मबऊ़स किया जैसा कि दूसरे अम्बिया को मबऊ़स किया, बहर ह़ाल कुछ लोग ग़लत़ी से अपने तईं येह फ़र्ज़ कर लेते हैं कि मुसलमान ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इबादत करते हैं ह़ालांकि जिस त़रह़ ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कभी ख़ुदाई का दा'वा नहीं

किया उसी त़रह़ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी कभी ख़ुदाई का दा'वा नहीं किया, उन्हों ने लोगों को सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत की त़रफ़ बुलाया, ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा अपने बारे में येह फ़रमाते कि मैं **अल्लाह** का बन्दा और उस का रसूल हूं।

ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने आख़िरी नबी के त़ौर पर चुना और उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला का कलाम हम तक पहुंचाया, ना सिर्फ़ अल्फ़ाज़ की ह़द तक बल्कि अ़मल कर के जीती जागती मिसालों के साथ **अल्लाह** तआ़ला का पैग़ाम हमें पहुंचाया और हमें दीन सिखाया, मुसलमान उन से बहुत प्यार करते हैं और उन की बहुत इ़ज़्ज़तो एह़तिराम करते हैं क्यूंकि उन का अख़्लाक़ और किरदार बहुत मिसाली है, उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला का पैग़ाम हम तक मुकम्मल त़ौर पर पहुंचा दिया नीज़ वोह **अल्लाह** तआ़ला के चुने हुवे और उस के मह़बूब हैं नीज़ **अल्लाह** तआ़ला ने उन की मह़ब्बत को हमारे ईमान की बुन्याद बना दिया है, येह इस्लाम की ख़ालिस तौह़ीद है।

मुसलमान कोशिश करते हैं कि वोह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कामिल इत़ाअ़त करें लेकिन किसी त़रह़ भी उन की इबादत नहीं करते, इस्लाम इस बात की भी ता'लीम देता है कि मुसलमान **अल्लाह** तआ़ला के सारे नबियों की इ़ज़्ज़त करें और उन से मह़ब्बत करें लिहाज़ा इ़ज़्ज़त करने और एह़तिराम करने का मत़लब इबादत करना हरगिज़ नहीं है क्यूंकि फ़क़त़ एह़तिराम और इबादत के माबैन बड़ा वाज़ेह़ फ़र्क़ मौजूद है और मुसलमान इस बात को ब ख़ूबी जानते हैं कि सारी इबादतें सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं।

दर ह़क़ीक़त इस्लाम में अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी की इ़बादत करना ऐसा गुनाह है कि जिस की मुआ़फ़ी नहीं है ख़्वाह वोह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़बादत हो या किसी और की, अगर कोई शख़्स मुसलमान होने का दा'वा करता हो और अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और को पूजता हो तो वोह अपने दा'वे में झूटा है, जब हम कलिमए शहादत पढ़ कर अपने ईमान की गवाही देते हैं तो येह इस बात का वाज़ेह़ ए'लान होता है कि हम मुसलमान सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करते हैं।

सुवाल क्या इस्लाम दक़्यानूसी (फ़रसूदा) दीन है ?

जवाब मुसलमानों को इस बात पर बड़ी ह़ैरानगी होती है कि उन का दीन जिस के अन्दर अ़मल और अ़क़ीदे के ए'तिबार से एक क़ाबिले ता'रीफ़ तवाज़ुन पाया जाता है बा'ज़ अवक़ात इस पर दक़्यानूसी होने का बोहतान लगा दिया जाता है शायद येह ग़लत़ फ़हमी लोगों के अन्दर इस वज्ह से पैदा हो गई है कि हर ख़ुशी व ग़म के मौक़अ़ पर मुसलमान اَلْحَمْدُلِلّٰه कहते सुनाई देते हैं, ऐसा इस लिये होता है कि मुसलमान येह जानते हैं कि "हर शै अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आती है" जो कि सारे जहानों का पैदा करने वाला है और सब कुछ उसी की मर्ज़ी से होता है, येह वज्ह है कि मुसलमान मादी मुआ़मलों की कम फ़िक्र करता है और दुन्या की इस आ़रिज़ी ज़िन्दगी को ऐसे देखता है जैसे उसे देखना चाहिये, एक सच्चा मुसलमान अल्लाह तआ़ला पर कामिल भरोसा करता है और वोह जानता है कि जो कुछ भी होता है वोह हमारे भले के लिये होता है, येह बात किसी की समझ में आए या न आए लेकिन मुसलमान ख़ुशी से अल्लाह तआ़ला के फ़ैसले (तक़्दीर) को क़बूल

कर लेता है, जो उस के नाराज़ होने या ना ख़ुश होने की वज्ह से बदलने वाला नहीं है।

इस का मत्लब येह भी नहीं कि मुसलमान बैठ कर अपनी तक़्दीर का इन्तिज़ार करे और अ़मली तौ़र पर ज़िन्दगी में कोई क़दम न उठाए बल्कि इस्लाम इस बात पर ज़ोर देता और तक़ाज़ा करता है कि मुसलमान कोशिश कर के हर क़ाबिले कराहत और क़ाबिले मज़म्मत आ़दत को बदल डालें, अ़मल तो मुसलमान के ईमान के साथ साथ चलता है क्यूंकि अगर इन्सान के अन्दर अपने फ़ैसले से कुछ करने की सलाहि़य्यत न होती तो फिर येह बात इन्साफ़ से बहुत दूर होती कि इस से अ़मल का तक़ाज़ा ही किया जाए या वोह बा'ज़ बुरे अ़मल छोड़ दे।

दक़्यानूसी होना तो दूर की बात है इस्लाम तो इस बात की ता'लीम देता है कि इन्सान का इस ज़िन्दगी में बड़ा मक़्सद अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करना है और ऐसे अ़मल करने हैं जिस से वोह राज़ी हो जाए, इस्लाम की ता'लीमात येह हैं कि इन्सान ज़िन्दगी में मुस्बत क़दम उठाए और इ़बादत व दुआ़ के ज़रीए़ से उस को मज़बूत़ करे, कुछ लोग सुस्त और ला परवाह होते हैं और जब उन्हें कोई मुश्किल या दुख पहुंचता है तो सारे का सारा इल्ज़ाम अपनी क़िस्मत या तक़्दीर पर लगा देते हैं, कुछ तो نَعُوْذُبِاللّٰہ इस ह़द तक पहुंच जाते हैं और कहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो वोह येह गुनाह या येह जुर्म न करते, نَعُوْذُبِاللّٰہ गोया कि येह गुनाह उन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने करवाया हो।

इस त़रह़ के दलाइल ना समझी पर मब्नी होते हैं क्यूंकि अल्लाह तआ़ला हमेशा वोही करता है जो सह़ीह़ होता है, अल्लाह तआ़ला ने हमें उस चीज़ का हुक्म नहीं दिया है जो हमारी त़ाक़त से बाहर है क्यूंकि उस का इन्साफ़ कामिल है और बे ऐ़ब है।

सुवाल क्या तुम मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा होने का यक़ीन रखते हो ? मौत के बा'द ज़िन्दगी की तस्दीक़ आप कैसे कर सकते हैं ?

जवाब इस्लाम इस बात की ता'लीम देता है कि मौजूदा ज़िन्दगी एक आज़माइश है और आख़िरत की तय्यारी के लिये हम को दी गई है, एक दिन ऐसा आएगा कि येह सारा जहान तबाहो बरबाद कर दिया जाएगा और फिर से इस की तख़्लीक़ होगी और मुर्दे फिर से ज़िन्दा हो जाएंगे, **अल्लाह** तआला की बारगाह में हिसाबो किताब के लिये पेश होंगे।

क़ियामत का दिन एक दूसरी ज़िन्दगी की इब्तिदा होगी, ऐसी ज़िन्दगी जो फिर ख़त्म न होगी, येह वोह वक़्त होगा कि जब हर एक को उस के किये का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो कि सब से ज़ियादा इन्साफ़ फ़रमाने वाला है इन्सान के अच्छे और बुरे आ'माल की बुन्याद पर उन्हें जज़ा देगा।

अगर मौत के बा'द ज़िन्दगी न होती तो **अल्लाह** तआला को मानना बे मा'ना हो जाता है और अगर कोई **अल्लाह** तआला पर यक़ीन रखता भी तो इस का मतलब येह होता कि येह कैसा अ़जीब ख़ुदा है कि एक बार इन्सान को पैदा करने के बा'द उस के बारे में उसे कोई परवाह ही नहीं है, बेशक **अल्लाह** तआला सब से ज़ियादा इन्साफ़ फ़रमाने वाला है, वोह ऐसे ज़ालिम को सज़ा देगा जिस के जुर्म बहुत हैं, मसलन सेंकड़ों बे क़ुसूर इन्सानों को क़त्ल करने वाला, मुआशरे के अन्दर बुराई फैलाने वाला, अपने आराम और सुख के लिये दूसरे इन्सानों को अपना ग़ुलाम बनाने वाला वग़ैरा वग़ैरा।

ज़िन्दगी मुख़्तसर सी है एक शख़्स के अच्छे या बुरे आ'माल की वज्ह से बहुत सारे लोग मुतअस्सिर होते हैं, सहीह़ और पूरी पूरी जज़ा इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में ना क़ाबिले अ़मल है, कु़रआने मुक़द्दस क़त्ई त़ौर पर इस बात की वज़ाह़त करता है कि क़ियामत का दिन आएगा और हर नफ़्स के बारे में अल्लाह तआ़ला फ़ैसला फ़रमाएगा, हर इन्सान येह चाहता है कि उसे इन्साफ़ मिले अगर्चे लोग दूसरों के लिये इन्साफ़ के ख़्वाहां न हों लेकिन अपने लिये ज़रूर इन्साफ़ चाहते हैं मसलन मुआ़शरे के जराइम पेशा और ज़ालिम अफ़राद, असरो रुसूख़ और त़ाक़त के नशे में धुत, लोगों को तक्लीफ़ और दुख पहुंचाने में बिल्कुल न हिचकिचाने वाले, ऐसे लोगों के साथ अगर कहीं ना इन्साफ़ी हो जाए तो उस पर सख़्त ए'तिराज़ करते हैं और ख़ूब शोर मचाते हैं।

हर वोह शख़्स जिस के साथ ना इन्साफ़ी हुई हो, मुआ़शरती या मआ़शी उस का कोई भी रुत्बा हो वोह येह ज़रूर चाहेगा कि उस पर ज़ियादती करने वाले को सज़ा मिले, अगर्चे मुजरिमों की एक बड़ी ता'दाद को सज़ा मिल जाती है लेकिन कई मुजरिम ऐसे हैं कि जिन को बहुत हल्की सी सज़ा मिलती है या फिर वोह आज़ाद कर दिये जाते हैं और हो सकता है कि वोह एक आराम देह ख़ुशियों से भरी और पुर अम्न ज़िन्दगी गुज़ार रहे हों, अल्लाह तआ़ला किसी मुजरिम को दुन्या में सज़ा न भी दे लेकिन क़ियामत के रोज़ उस मुजरिम की सख़्त गिरिफ़्त होगी और उस को सज़ा दी जाएगी।

येह सहीह़ है कि मुजरिम को उस की सज़ा का एक हिस्सा इस दुन्या में मिल जाए लेकिन येह सज़ा नाक़िस रहेगी बिल्कुल इसी त़रह जिस ने अच्छे काम किये, लोगों की मदद की और उन में इ़ल्म फैलाया,

उन के ईमान की हिफ़ाज़त का सामान किया, ज़िन्दगियां बचाईं, हक़ और सच की ताईद में मुश्किलात और ना इन्साफ़ियों को सब्र से बरदाश्त करता रहा, दुन्या की मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में इन अच्छे कामों की पूरी पूरी जज़ा नहीं दी जा सकती, इस त़रह़ के नेक आ'माल की पूरी पूरी जज़ा उसी ज़िन्दगी में दी जा सकती है कि जो ख़त्म होने वाली नहीं है।

आख़िरत पर यक़ीन रखना मुकम्मल तौर पर अ़क़्ल में आने वाली बात है, **अल्लाह** तआ़ला ने कुछ चीज़ें ऐसी पैदा फ़रमाईं हैं जो कि हमें इस दुन्या की ज़िन्दगी में ख़ुशी देती हैं और अच्छी लगती हैं जैसा कि इन्साफ़, अगर्चे उ़मूमी तौर पर येह मिलता नहीं है। एक शख़्स दुन्या के अन्दर अपने कई सारे मक़ासिद में कामयाब भी हो जाता है, दुन्या में सुख का एक अच्छा ख़ासा हिस्सा भी पाता है लेकिन वोह इस बात का क़ाइल होता है कि दुन्या इन्साफ़ की जगह नहीं है।

येह ज़िन्दगी हमारे वुजूद का एक हिस्सा है और आख़िरत इस का ज़रूरी नतीजा है जिस के ज़रीए़ से अ़द्लो इन्साफ़ का पूरा तवाज़ुन क़ाइम हो जाता है, जो यहां नहीं मिला वोह वहां मिल जाएगा और किसी त़रह़ जो यहां नाजाइज़ त़रीक़े से ह़ासिल किया गया, इन्सान आख़िरत में उस से मह़रूम कर दिया जाएगा। येह वोह कामिल और बे ऐ़ब इन्साफ़ है जिस का वा'दा सब से ज़ियादा इन्साफ़ करने वाले बे ऐ़ब रब ने किया है।

सुवाल क्या येह सच है कि ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद कु़रआन लिखा है या इन्जील से नक़्ल किया है ?

जवाब इस ग़लत़ फ़हमी को दूर करने से पहले इस चीज़ को नोट करना बहुत ज़रूरी है कि कु़रआने मजीद के इ़लावा किसी और आस्मानी किताब में बार बार और वाज़ेह़ दा'वा नहीं किया गया कि वोह बिला

वासित़ा **अल्लाह** तआ़ला का कलाम है, **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया :

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿۸۲﴾ (پ۵، النساء: ۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या ग़ौर नहीं करते कुरआन में और अगर वोह ग़ैरे ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उस में बहुत इख़्तिलाफ़ पाते ।*

जब कुरआन नाज़िल हो रहा था तो अहले अ़रब इस बात को पहचान चुके थे कि कुरआन की ज़बान बड़ी मुनफ़रिद और उस ज़बान से वाज़ेह़ त़ौर पर मुख़्तलिफ़ है, जिस को ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर लोग बोलते थे बा वुजूद इस के कि उस वक़्त के अ़रब लोग शे'र व शाइ़री और ज़बान की फ़साह़तो बलाग़त में बड़े माहिर थे ।

मज़ीद येह कि ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ाहिरन पढ़े लिखे न थे इस का मा'ना येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी ऐसे ता'लीमी निज़ाम के तह़त इ़ल्म ह़ासिल नहीं किया जो उस वक़्त मक्कए मुकर्रमा और उस के अत़राफ़ में मा'रूफ़ था लेकिन बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इ़ल्म सिखाया, कुरआने पाक बयान करता है :

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ (پ۵، النساء:۱۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे ।*

अगर ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी के पास तह़सीले इ़ल्म के लिये गए होते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हम अ़स्र लोग जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुख़ालिफ़ थे ज़रूर इस बात का चरचा करते

और इस से पर्दा उठाते लेकिन इस बात की कोई शहादत मौजूद नहीं है कि मुख़ालिफ़ीन ने ऐसा किया हो, इस में शक नहीं कि कई लोगों ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ाम को रद किया जैसा कि लोग पिछले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के पैग़ाम को रद करते आए हैं लेकिन किसी ने हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ाम को रद करने की येह वज्ह बयान नहीं की, कि उन्हों ने कहीं से पढ़ा है या सीख कर आते हैं और फिर हम को इस दा'वे के साथ बताते हैं कि येह **अल्लाह** तआ़ला का कलाम है।

इस बात को नोट करना भी दिलचस्पी से ख़ाली न होगा कि अगर्चे क़ुरआने मजीद कोई शे'र व शाइरी की किताब नहीं है लेकिन क़ुरआन के नुज़ूल के बा'द अ़रबों का मैलान शे'र व शाइरी की त़रफ़ कम हो गया, येह कहा जा सकता है कि क़ुरआने मजीद अ़रबी अदब का शाहकार है और हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों ने येह जान लिया था कि वोह क़ुरआन की फ़साहतो बलाग़त का मुक़ाबला करने में नाकाम हो चुके हैं, क़ुरआन से अच्छा कलाम पेश करना तो दूर की बात, क़ुरआन की एक छोटी सी सूरत के बराबर भी कुछ न पेश कर सके।

इस्लाम पर तन्क़ीद करने वाले कुछ ईसाई इस बात का दा'वा करते हैं कि हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुरआन के ब ज़ाते ख़ुद मुसन्निफ़ तो नहीं है लेकिन उन्हों ने यहूदियों और ईसाइयों की किताबों से नक़्ल कर के क़ुरआन तय्यार किया हालांकि हक़ीक़त येह है कि हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का किसी यहूदी या ईसाई आ़लिम के साथ कोई राबित़ा न था, तारीख़ इस बात की शहादत देती है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लाने नबुव्वत से क़ब्ल सिर्फ़ तीन सफ़र किये,

छे साल की उम्र में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अम्मी हुज़ूर सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ मदीना तशरीफ़ ले गए। और बारह साल की उम्र मुकम्मल होने से पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने चचा अबू तालिब की मइय्यत में शाम का एक कारोबारी सफ़र किया और फिर अपनी पहली शादी से पहले जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्र पच्चीस साल की थी हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के एक तिजारती क़ाफ़िले को शाम ले गए।[1]

एक साहिबे इल्म ईसाई शख़्स जिस को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जानते थे वोह एक बूढ़ा और नाबीना शख़्स था जिस का नाम था वरक़ा बिन नौफ़ल, वोह हज़रते बीबी ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का रिश्तेदार था, वोह अपना पुराना मज़हब छोड़ कर ईसाइय्यत में दाख़िल हुवा था और इन्जील की बड़ी महारत रखता था, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस से सिर्फ़ दो बार मिले, पहली मरतबा ए'लाने नबुव्वत से थोड़ा सा वक़्त पहले[2] और दूसरी मरतबा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वरक़ा बिन नौफ़ल से उस वक़्त मिले जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पहली वह़ी नाज़िल हुई,[3] वरक़ा बिन नौफ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुसलमान हो गए और येह वोह पहले ईसाई आ़लिम हैं जो दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुवे[4] और इस के

---

1 ......सीरते मुस्तफ़ा, स. 86, 90

و ترمذی، کتاب المناقب ، باب ماجاء فی بدء نبوۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ، ۳۵۶/۵، حدیث: ۳۶۴۰

2 ......

3 ......بخاری، کتاب بدء الوحی، ۷/۱، حدیث: ۳، ٤ व सीरते मुस्तफ़ा, स. 109

4 ......السیرۃ الحلبیۃ، ۳۹۳/۱

तीन साल बा'द इन्तिक़ाल फ़रमा गए।[1] लेकिन कुरआने मजीद का नुज़ूल तेईस साल तक जारी रहा।[2]

मुशरिकीन में से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'ज़ दुश्मन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बोहतान बांधते थे कि उन्हों ने कुरआन रूम के एक लोहार से सीखा है जो कि ईसाई है और मक्का से बाहर उस ने अपना डेरा लगाया हुवा है, उन के इस बोहतान के रद में **अल्लाह** तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌؕ لِسَانُ الَّذِیْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِیٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِیٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۳﴾ (پ١٤، النحل: ١٠٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक हम जानते हैं कि वोह कहते हैं येह तो कोई आदमी सिखाता है जिस की तरफ़ ढालते (इशारा करते) हैं उस की ज़बान अजमी है और येह रोशन अरबी ज़बान।*

हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मन बड़े क़रीब से देखते रहते थे कि शायद उन्हें कोई ऐसी शहादत मिल जाए जिस की बुन्याद पर वोह येह साबित कर सकें कि हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक झूटे इन्सान हैं लेकिन वोह कोई एक मौक़अ़ भी ऐसा न ढूंड पाए कि जिस की बुन्याद पर वोह येह बात कर पाते कि हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم छुप कर किसी ख़ास यहूदी या ईसाई से मिलते हैं।

येह बात सच है कि हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहूदियों और ईसाइयों से मज़हबी गुफ़्तगू फ़रमाई है लेकिन वोह सब मुकालमे खुले आ़म मदीनए मुनव्वरा में हुवे जब कि कुरआने पाक का नुज़ूल तेरह

1 ......السيرة الحلبية، ٣/٥٢١

2 ......تفسير بيضاوى، پ ٣٠، القدر، تحت الآية: ٣، ٥/٥١٣

साल पहले से हो रहा था, येह बात रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह हो गई कि यहूदियों और ईसाइयों का कुरआन लिखने में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुआवनत करना अक़्लन नक़्लन बे बुन्याद है, ख़ास कर जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मर्कज़ी किरदार एक हादी और उस्ताद का था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुल कर यहूदियों और ईसाइयों को इस्लाम क़बूल करने की दा'वत दी, उन पर वाज़ेह किया कि **अल्लाह** तआला की तौहीद की सहीह ता'लीमात से वोह लोग कैसे फिरे, बहुत सारे यहूदी और ईसाई हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत को सुन कर यहूदिय्यत और ईसाइय्यत छोड़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए।

येह **अल्लाह** तआला की हिक्मत है कि उस ने आख़िरी नबी के तौर पर ऐसी ज़ात को भेजा जो कि ज़ाहिरन पढ़ी लिखी न थी ताकि जो ए'तिराज़ करने वाले थे उन के लिये ए'तिराज़ की कोई गुन्जाइश न रहे और न कोई येह शक कर सके कि हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुरआने पाक को कहीं से नक़्ल किया है, येह भी याद रहे कि जिस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुरआने पाक के **अल्लाह** का कलाम होने का दा'वा किया और लोगों तक पहुंचाया उस वक़्त इन्जीले मुक़द्दस का कोई भी नुस्ख़ा अरबी में मौजूद न था, येह सच है कि कुरआने पाक और इन्जील में कुछ मुमासलत पाई जाती है लेकिन येह मुमासलत इस बात की बुन्याद नहीं बन सकती कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर येह इल्ज़ाम लगाया जाए कि उन्हों ने कुरआने पाक को इन्जील से नक़्ल किया है। किताबों के अन्दर मुमासलत का येह मतलब हरगिज़ नहीं है कि बा'द में आने वाले पैग़म्बरों ने पहले पैग़म्बरों से नक़्ल किया है, येह मुमासलत अस्ल में इस बात की तरफ़ इशारा है कि अगली और पिछली

सब किताबें अल्लाह तआला की त़रफ़ से हैं और अल्लाह तआला का पैग़ाम हैं इस लिये इन में मुमासलत है और उन सब में तौह़ीद का बुन्यादी पैग़ाम मुश्तरक है ।

सुवाल कुरआन दूसरी नाज़िल शुदा किताबों से कैसे मुख़्तलिफ़ है ?

जवाब हर मुसलमान का येह बुन्यादी अक़ीदा है कि वोह अल्लाह तआला के सारे नबियों और रसूलों पर ईमान रखे और जो कुछ अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया उस को दिल से तस्लीम करे अगर्चे बा'ज़ आस्मानी किताबें अब भी मौजूद हैं लेकिन अपनी अस्ली अल्फ़ाज़ कि जिन में वोह नाज़िल हुई थीं उस पर बाक़ी न रहीं, या'नी इन्सानों ने इस के अन्दर तब्दीलियां कर डालीं, कुरआने पाक ही अल्लाह तआला का ऐसा कलाम है कि जिस की ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मा अल्लाह तआला ने खुद लिया है और वोह हर त़रह़ की तब्दीली से मह़फ़ूज़ है,

अल्लाह तआला कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ ۝ (پ۱٤، الحجر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम खुद इस के निगहबान हैं ।*

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ लाने से पहले जो आस्मानी किताबें थीं जैसा कि तौरात और इन्जील वोह उस वक़्त लिखी गई जब वोह अम्बिया विसाल फ़रमा गए जिन पर येह किताबें नाज़िल हुईं और इस के मुतज़ाद पूरे का पूरा कुरआने पाक हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में मुकम्मल हो चुका था, खजूर के पत्तों पर, चमड़े पर और हड्डियों पर मुसलमानों ने लिख लिया था और फिर इस के साथ साथ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की बहुत बड़ी ता'दाद ऐसी थी जिन्हों ने

क़ुरआने पाक को हि़फ़्ज़ कर लिया था और इस के जो अस्ल अ़रबी अल्फ़ाज़ थे उन को अपने सीनों और अपने दिलो दिमाग़ में मह़फ़ूज़ कर लिया था मज़ीद येह कि क़ुरआने पाक को हज़ारों बल्कि लाखों मुसलमानों ने हर दौर में ख़ूब पढ़ा, इस को याद किया। ह़क़ येह है कि हर आने वाले दौर में मुसलमानों की एक बहुत बड़ी ता'दाद क़ुरआने पाक को हि़फ़्ज़ करती है और यूं क़ुरआने पाक के अल्फ़ाज़ की हि़फ़ाज़त होती रहती है और कोई मज़हबी या ग़ैर मज़हबी किताब दुन्या में ऐसी नहीं मिलेगी जिस को इस त़रह़ लिखा गया हो, मह़फ़ूज़ किया गया हो और नस्ल दर नस्ल वोह एक क़ौम के अन्दर बहुत बड़ी ता'दाद में हि़फ़्ज़ की जाती रही हो।

क़ुरआने पाक इस बात को पेश करता है कि **अल्लाह** तआ़ला के जितने भी नबी हैं वोह उख़ुव्वत के लिह़ाज़ से एक दूसरे के साथ जुड़े हुवे हैं, सारे के सारे नबुव्वत के मिशन में एक जैसे हैं और वोह जो बुन्यादी पैग़ाम था वोह सब ने इन्सानों तक पहुंचाया, ख़ास कर जो चीज़ सब में मुश्तरक रही वोह येह है कि सिर्फ़ **अल्लाह** वाहि़द की इ़बादत की त़रफ़ लोगों को बुलाया, लिहाज़ा उन सब के पैग़ाम का मक़्सद एक ही था और वोह **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात की पहचान है अगर्चे दूसरी किताबें इस्लाम की बुन्यादी मज़हबी बातों में मुमासलत रखती हैं लेकिन वोह ख़ास त़बक़ों और ख़ास लोगों के लिये नाज़िल की गई थीं लिहाज़ा उन किताबों के उसूल व क़वाइ़द उन्ही लोगों के लिये हैं जिन के लिये वोह किताबें नाज़िल हुईं, दूसरी त़रफ़ देखा जाए तो क़ुरआने पाक सारी इन्सानिय्यत के लिये नाज़िल हुवा, किसी ख़ास क़ौम के लिये नाज़िल न हुवा, **अल्लाह** तआ़ला क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيۡرًا وَّنَذِيۡرًا وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸﴾ (پ۲۲، سبا:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ महबूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है खुश ख़बरी देता और डर सुनाता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते ।*

सुवाल क्या येह सच है कि मुसलमान ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और दूसरे पैग़म्बरों को नहीं मानते ?

जवाब अगर कोई मुसलमान ईसा عَلَيْهِ السَّلَام या किसी भी नबी पर ईमान न रखे तो वोह मुसलमान ही नहीं, सब मुसलमान ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और दीगर तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को मानते हैं, येह मुसलमानों के ईमान में बुन्यादी बात है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर नबी और हर रसूल को मानें, मुसलमान ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की बड़ी इ़ज़्ज़त और बड़ा एह़तिराम करते हैं और इन के दोबारा तशरीफ़ लाने के मुन्तज़िर हैं, क़ुरआने मजीद के मुत़ाबिक़ ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को न सूली दी गई न उन्हें क़त्ल किया गया बल्कि वोह आस्मानों में उठा लिये गए ।(1)

मुसलमान इस बात का भी अ़क़ीदा रखते हैं कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ऊंची शानों वाले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में से हैं, लेकिन न वोह खुदा हैं न खुदा के बेटे, और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बड़ी सालिह़ा और मुत्तक़िय्या ख़ातून थीं, क़ुरआने पाक हमें बताता है कि ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बिग़ैर बाप के निशाने क़ुदरत के त़ौर पर पैदा हुवे, **अल्लाह** तआ़ला क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

1 ......پ٦، النساء: ١٥٧، ١٥٨

إِنَّ مَثَلَ عِيسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۖ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ (پ۳، ال عمران:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईसा की कहावत अल्लाह के नज़्दीक आदम की त़रह है उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है।

बहुत सारे ईसाई येह जान कर चोंक जाते हैं कि मुसलमान ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ीम अम्बिया और रसूलों में शुमार करते हैं, मुसलमानों को येह ता'लीम दी जाती है कि ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से मह़ब्बत करें और कोई शख़्स उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक कि वोह इस चीज़ को न मान ले कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बिग़ैर बाप के पैदा हुवे और मुसलमान इन चीज़ों में इस लिये यक़ीन नहीं रखते कि उन्हों ने येह चीज़ें इन्जील से पढ़ी हैं बल्कि क़ुरआने पाक इन चीज़ों का ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में ज़िक्र करता है लेकिन मुसलमान हमेशा इस बात की ताकीद करते हैं कि ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़े हों या दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मो'जिज़े हों, वोह अल्लाह तआ़ला की मरज़ी और उस की रिज़ा और उस के मुमकिन बनाने से ज़ाहिर होते हैं।

मुसलमान इस बात की सख़्ती से तरदीद करते हैं कि अल्लाह तआ़ला का कोई बेटा है और क़ुरआने पाक ताकीदन इस बात को बयान करता है कि अल्लाह तआ़ला का कोई बेटा नहीं है।

इस बात की वज़ाह़त कर देना भी ज़रूरी है कि जब मुसलमान इन्जील की कुछ बातों पर तन्क़ीद करते हैं तो इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं कि वोह ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ह़म्ला कर रहे हैं बल्कि ईसाइयों के अ़क़ीदे मसलन तस्लीस वग़ैरा पर तन्क़ीद करते हैं क्यूंकि येह चीज़ें

ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने शुरूअ़ नहीं कीं, उन का इन चीज़ों से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और जब मुसलमान इन्जील का ह़वाला देते हैं और कहते हैं कि येह **अल्लाह** तआ़ला का कलाम है लेकिन इस में तब्दीली आ गई और इस में बहुत सारे मक़ामात पर इन्सानों के अल्फ़ाज़ हैं **अल्लाह** तआ़ला के अल्फ़ाज़ नहीं हैं, तो इस तन्क़ीद का मत़लब हरगिज़ येह नहीं है कि मुसलमान ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ह़म्ला करते हैं।

मुसलमान येह यक़ीन रखते हैं कि आज के दौर में जो इन्जील मौजूद है इस में कहीं कहीं छोटे छोटे ह़िस्से मौजूद हैं जो **अल्लाह** तआ़ला का अस्ली कलाम हैं और इस में बहुत सारा ह़िस्सा ऐसा है कि जिस में इन्सानों की दख़्ल अन्दाज़ी हुई और बहुत बड़ी ता'दाद आयात की वोह है जो कि तब्दील हो चुकी हैं और इन्जीले मुक़द्दस के मुख़्तलिफ़ तर्जमे जो लोगों के सामने मौजूद हैं वोह एक दूसरे से बहुत मुख़्तलिफ़ हैं, मुसलमान इस बात का यक़ीन रखते हैं कि अस्ल इन्जील वोह है जो ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की ता'लीमात हैं, वोह नहीं जो बा'द के लोगों ने मसलन पॉल (PAUL) या दूसरे गिर्जाघरों के लीडरों ने लिखी बल्कि इस्लाम दर अस्ल उसी तौह़ीद पर ज़ोर देता है कि जिस की इशाअ़त ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ूब की और वोह **अल्लाह** तआ़ला को एक मानना और फ़क़त़ एक **अल्लाह** की इबादत करना है।

सुवाल कुरआने पाक ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में क्या कहता है ?

जवाब ईसा عَلَيْهِ السَّلَام उन अ़ज़ीमुश्शान रसूलों में से हैं जिन का ज़िक्र नाम के साथ कुरआने पाक में मौजूद है, ह़क़ीक़त येह है कि कुरआने पाक में एक सूरत का नाम सूरए मरयम है, इस सूरत में ह़ज़रते

मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और उन के प्यारे बेटे ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام पर ख़ूब रोशनी डाली गई है और ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का क़ुरआने मुक़द्दस में कई मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर ज़िक्र किया गया यहां पर हम क़ुरआने पाक की बा'ज़ आयात पेश करते हैं कि जिन में ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और उन के बेटे ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का ज़िक्र है :

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿۱۶﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿۱۷﴾ قَالَتْ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿۱۸﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿۱۹﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿۲۰﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿۲۱﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿۲۲﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और किताब में मरयम को याद करो जब अपने घर वालों से पूरब (मशरिक़) की त़रफ़ एक जगह अलग गई तो उन से उधर एक पर्दा कर लिया तो उस की त़रफ़ हम ने अपना रूह़ानी भेजा वोह उस के सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुवा बोली मैं तुझ से रह़मान की पनाह मांगती हूं अगर तुझे ख़ुदा का डर है बोला मैं तेरे रब का भेजा हुवा हूं कि मैं तुझे एक सुथरा बेटा दूं बोली मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो न किसी आदमी ने हाथ लगाया न मैं बदकार हूं कहा यूं ही है तेरे रब ने फ़रमाया है कि येह मुझे आसान है और इस लिये कि हम इसे लोगों के वासिते निशानी करें और अपनी त़रफ़ से एक रह़मत और येह काम ठहर चुका है अब मरयम ने उसे पेट में लिया*

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ
قَالَتْ يٰلَيْتَنِیْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَ كُنْتُ
نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿۲۳﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَاۤ اَلَّا
تَحْزَنِیْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ
سَرِيًّا ﴿۲۴﴾ وَ هُزِّیْۤ اِلَيْكِ بِجِذْعِ
النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿۲۵﴾
فَكُلِیْ وَ اشْرَبِیْ وَ قَرِّیْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا
تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِیْۤ
اِنِّیْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ
اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿۲۶﴾ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا
تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ
شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿۲۷﴾ يٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ
اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّ مَا كَانَتْ
اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿۲۸﴾ فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ؕ قَالُوْا
كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِی الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿۲۹﴾

फिर उसे लिये हुवे एक दूर जगह चली गई फिर उसे जनने का दर्द एक खजूर की जड़ में ले आया बोली हाए किसी तरह मैं इस से पहले मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती तो उसे उस के तले से पुकारा कि ग़म न खा बेशक तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पक्की खजूरें गिरेंगी तू खा और पी और आंख ठन्डी रख फिर अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह देना मैं ने आज रह़मान का रोज़ा माना है तो आज हरगिज़ किसी आदमी से बात न करूंगी तो उसे गोद में लिये अपनी क़ौम के पास आई बोले ऐ मरयम बेशक तू ने बहुत बड़ी बात की ऐ हारून की बहन तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी मां बदकार इस पर मरयम ने बच्चे की त़रफ़ इशारा किया वोह बोले हम कैसे बात करें इस से जो पालने में बच्चा है ।

قَالَ اِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ ۛؕ اٰتٰىنِیَ الْكِتٰبَ وَ جَعَلَنِیْ نَبِیًّاۙ ﴿۳۰﴾ وَّ جَعَلَنِیْ مُبٰرَكًا اَیْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَ اَوْصٰنِیْ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَیًّا ﴿ۖ۳۱﴾ وَّ بَرًّۢا بِوَالِدَتِیْ ۙ وَ لَمْ یَجْعَلْنِیْ جَبَّارًا شَقِیًّا ﴿۳۲﴾ وَ السَّلٰمُ عَلَیَّ یَوْمَ وُلِدْتُّ وَ یَوْمَ اَمُوْتُ وَ یَوْمَ اُبْعَثُ حَیًّا ﴿۳۳﴾ ذٰلِكَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِیْ فِیْهِ یَمْتَرُوْنَ ﴿۳۴﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ یَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿ؕ۳۵﴾ وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۳۶﴾

(پ۱٦، مریم: ۱٦ تا ۳٦)

बच्चे ने फ़रमाया मैं हूं **अल्लाह** का बन्दा उस ने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया और उस ने मुझे मुबारक किया मैं कहीं हूं और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूं और अपनी मां से अच्छा सुलूक करने वाला और मुझे ज़बरदस्त बद बख़्त न किया और वोही सलामती मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुवा और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊंगा येह है ईसा मरयम का बेटा सच्ची बात जिस में शक करते हैं **अल्लाह** को लाइक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए पाकी है उस को जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूं ही कि उस से फ़रमाता है हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है और ईसा ने कहा बेशक **अल्लाह** रब है मेरा और तुम्हारा तो उस की बन्दगी करो येह राह सीधी है।

इस्लाम, साइन्स और सिह़्ह़त

सुवाल : क्या इस्लाम साइन्स और इल्म की मुख़ालफ़त करता है ?

जवाब : इस्लाम इल्म और साइन्स के मुख़ालिफ़ नहीं है, इल्म दो त़रह़ का होता है : दीनी इल्म जिस के ज़रीए़ से इस बात को समझा जाता है कि मज़्हबी ज़िम्मेदारियों को कैसे निभाया जाए और अल्लाह तआ़ला की इबादत कैसे की जाए और दूसरा इल्म वोह होता है जिस का तअ़ल्लुक़ उन चीज़ों से होता है जिन के ज़रीए़ से येह जाना जाए कि हम यहां दुन्या में एक फ़ाइदे मन्द और आराम देह ज़िन्दगी कैसे गुज़ार सकते हैं, येह मुसलमान की ज़रूरत है कि वोह दोनों त़रह़ के उ़लूम ह़ासिल करे, बल्कि यूं कहना ज़ियादा मुनासिब होगा कि इस्लाम ने इल्म की उस वक़्त वकालत की जब कि दुन्या अन्धेरों में भटकी हुई थी और सख़्त जहालत का शिकार थी। और पहली वह़ी जो पैग़म्बरे इस्लाम ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुई उस में इल्म ही का पैग़ाम था :

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَۚ۝۱ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍۚ۝۲ اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُۙ۝۳ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِۙ۝۴ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْؕ۝۵ (پ۳۰، علق:۱تا۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया आदमी को ख़ून की फटक से बनाया पढ़ो और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम जिस ने क़लम से लिखना सिखाया आदमी को सिखाया जो न जानता था।*

उस अन्धेरे, जाहिलाना, ज़ालिमाना और सफ़्फ़ाकाना माह़ोल पर जिस के अन्दर पूरी दुन्या डूबी हुई थी, येह आयत रोशनी की पहली

किरन है, और **अल्लाह** तआ़ला ने मुसलमानों पर अपनी बहुत बड़ी ने'मत का इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَۗ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍۙ﴿۲﴾

(پ۲۸، الجمعه:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोही है जिस ने अनपढ़ों में उन्ही में से एक रसूल भेजा कि उन पर उस की आयतें पढ़ते हैं और उन्हें पाक करते हैं और उन्हें किताब व ह़िक्मत का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाते हैं और बेशक वोह उस से पहले ज़रूर खुली गुमराही में थे।*

मुसलमानों की पहली नस्लें कुछ ही सालों के अन्दर एक बहुत इ़ल्म वाली, साफ़ सुथरी और मज़्हबी क़ौम बन कर आगे आईं, दीनी और दुन्यावी मुआ़मलात में महारत इन के अन्दर वाज़ेह़ नज़र आती थी जब कि दूसरी क़ौमें सदियों तक इस के बा'द भी जहालत के अन्धेरों में भटक रही थीं, इस्लाम ने इन्सान की सोई हुई अ़क़्ली क़ुव्वतों को जगाया, उन में येह एह़सास डाला और येह तरग़ीब दी कि वोह उन सलाह़िय्यतों को **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के दीन की ख़िदमत में सर्फ़ करें।

दीनी इ़ल्म बहुत ज़रूरी है क्यूंकि इस के बिग़ैर कोई अपनी इ़बादत को इस त़रह़ से नहीं अदा कर सकता जिस त़रह़ से **अल्लाह** और उस के रसूल ने वज़ाह़त की और समझाया है, **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुआ़ सिखाते हुवे जिस में इ़ल्म की तरक़्क़ी का पहलू मौजूद है फ़रमाता है :

وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا ﴿۱۱۴﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *और अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज़ियादा दे।*

(پ۱۶، طٰہٰ:۱۱۴)

फ़ाइदे मन्द दुन्यावी इ़ल्म भी ज़रूरी है, मुसलमानों को इस बात की तरग़ीब दी गई है कि वोह ऐसे उ़लूम ह़ासिल करें कि जिस से इन को और दूसरे मुसलमानों को फ़ाइदा हो, हमारे अस्लाफ़ ने इस ह़क़ीक़त को समझा तो नतीजतन दूसरी क़ौमों से इ़ल्मी तरक़्क़ी के ह़वाले से बहुत आगे बढ़ गए और सदियों तक इ़ल्मी मैदान में येह मश्अ़ल मुसलमानों के हाथ में रही। मुसलमान मेडीसन, हि़साब, फ़िज़िक्स, स्ट्रॉनोमी, जोग्राफ़िय्या, ऐग्रीकल्चरल, लिट्रेचर और तारीख़ के मैदान में दूसरी क़ौमों से बहुत आगे निकल गए।

कई उ़लूम जिन में मुसलमानों ने दूसरी क़ौमों को पीछे छोड़ दिया था उन में से चन्द का ज़िक्र किया जाता है मसलन : अल जब्रा, हिन्दसा और सिफ़र का नज़रिय्या मुसलमानों ने ईजाद किया और इस के ज़रीए़ से हि़साब और मेथेमेटिक्स (mathematics) में बहुत ज़ियादा तरक़्क़ी हुई।

और येह वोह उ़लूम थे जो मुसलमानों की त़रफ़ से यूरोप तक पहुंचे और येह मुसलमान ही थे जिन्हों ने बहुत सारे ह़स्सास क़िस्म के औज़ार ईजाद किये, दुन्या के नक़्शे और सम्तें एक मुल्क से दूसरे मुल्क की त़रफ़, शहर से शहर की त़रफ़ येह मुसलमानों ही ने ईजाद कीं, और इस की वज्ह से यूरोप के लोगों ने जो नई दुन्या को तलाश किया, जाना और वहां पहुंचे, येह सब मुसलमानों का इ़ल्मी मैदान में वाज़ेह़ हि़स्सा है। मेडीसन, मेथेमेटिक्स, स्ट्रॉनोमी, केमेस्ट्री और फ़िज़िक्स, इन उ़लूम में मुसलमानों का हि़स्सा और इन की तरक़्क़ी क़ाबिले ज़िक्र है, पूरे साज़ो सामान से भरे हुवे हस्पताल और इस के साथ एक मेडीकल स्कूल

मुसलमानों ने शुरूअ़ किये जो कि बड़े बड़े शहरों में होते थे, येह वोह अन्धेरे और जहालत का दौर था जब दुन्या वह्म में मुब्तला हो चुकी थी और मग़रिबी मुमालिक के लोग बीमारियों का इलाज अवहाम के ज़रीए़ से करते थे। दूसरी त़रफ़ मुसलमान डॉक्टर्ज़ बीमारियों की तश्ख़ीस कर रहे थे, इलाज तजवीज़ कर रहे थे और ऑपरेशन कर रहे थे, नीज़ उन्नीसवीं सदी में सब से बड़ा मुसलमान डॉक्टर जिस को मग़रिब में भी जाना और माना जाता है उस का नाम ''अर्राज़ी'' है, बहुत सारे साइन्सी मौज़ूआ़त पर इन्हों ने लिखा, एक बहुत बड़ा इल्मी ज़ख़ीरा मेडीसन के मौज़ूअ़ पर इन्हों ने दुन्या को दिया और चेचक के मौज़ूअ़ पर इन्हों ने बहुत ही फ़ाइदे मन्द किताब लिखी, दसवीं सदी के मश्हूर डॉक्टर ''इब्ने सीना'' ने मेडीसन के मौज़ूअ़ पर बहुत बड़ी किताब लिखी, येह किताब सत्तरहवीं सदी में यूरोप के अन्दर मेडीकल फ़ील्ड में एक मे'यार के तौ़र पर इस्ति'माल की जाती रही।

कु़रआने मजीद अगर्चे किताबे हिदायत है मगर इस के अन्दर बहुत सारे तअ़ज्जुब ख़ेज़ साइन्सी ह़क़ाइक़ भी मौजूद हैं, तअ़ज्जुब ख़ेज़ इस लिये हैं कि चौदह सदियां पहले इन ह़क़ाइक़ का ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नुज़ूल हुवा और इन को सह़ीह़ मा'नों में लोगों ने नहीं समझा यहां तक कि मौजूदा दौर के साइन्स दानों ने इन की ईजादात कीं, इन को तलाश किया और समझा। अगर्चे कु़रआन साइन्स की किताब नहीं है लेकिन इस के बा वुजूद कु़रआने पाक ने ऐसे कई ह़क़ाइक़ बयान किये हैं जिन को साइन्टीफ़िक और टेक्नोलॉजीकल तरक़्क़ी के सबब बा'द में आने वाले ज़माने में ख़ूब सराहा और क़बूल किया गया और येह एक बड़ा सुबूत है कि येह किताब कु़रआने मुक़द्दस हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अपना लिखा हुवा कलाम नहीं है

और न किसी और शख़्स का, बल्कि येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल किया गया है।

सुवाल कुरआन येह कहता है कि सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला जानता है कि रेह़म में क्या है, क्या येह मेडीकल साइन्स के ख़िलाफ़ नहीं है क्यूंकि आज के दौर में येह मा'लूम किया जा सकता है कि पेट में लड़का है या लड़की ?

जवाब इस सुवाल का जवाब देने के लिये येह ज़रूरी है कि उन आयात को ख़ूब अच्छी त़रह़ से समझा जाए जिन में इस बात का ज़िक्र है, **अल्लाह** तआ़ला कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِۚ وَ یُنَزِّلُ الْغَیْثَۚ وَ یَعْلَمُ مَا فِی الْاَرْحَامِؕ وَ مَا تَدْرِیْ نَفْسٌ مَّا ذَا تَكْسِبُ غَدًاؕ وَ مَا تَدْرِیْ نَفْسٌۢ بِاَیِّ اَرْضٍ تَمُوْتُؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ۠ (۳۴)

(پ۲۱، لقمٰن:۳٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** के पास है क़ियामत का इल्म और उतारता है मींह और जानता है जो कुछ माओं के पेट में है और कोई जान नहीं जानती कि कल क्या कमाएगी और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में मरेगी बेशक **अल्लाह** जानने वाला बताने वाला है।*

اَللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَ مَا تَغِیْضُ الْاَرْحَامُ وَ مَا تَزْدَادُؕ وَ كُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ (۸)

(پ۱۳، الرعد:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *__अल्लाह__ जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है और पेट जो कुछ घटते और बढ़ते हैं और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है।*

अगर कोई कुरआने पाक की इन आयात का बग़ौर मुत़ालआ़ करे तो उसे येह अन्दाज़ा होगा कि इन आयात में मह़ज़ जिन्स का ज़िक्र

नहीं कि मां के पेट में जो बच्चा है वोह लड़का होगा या लड़की होगी बल्कि कुरआने पाक सिर्फ़ इतना बयान करता है कि जो कुछ मां के रेह़म में है उस का इ़ल्म सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के पास है। कुछ लोगों ने इसे यूं समझा कि इस से मुराद सिर्फ़ मां के पेट के अन्दर बच्चे की जिन्स है, या'नी वोह लड़का है या लड़की ?

दर ह़क़ीक़त इन आयात की मुराद सिर्फ़ उस का मुज़क्कर व मुअन्नस होना ही नहीं बल्कि उस का बद बख़्त या नेक बख़्त होना, उस का रिज़्क़ और उस की उ़म्र वग़ैरा सब को शामिल है जैसा कि ह़दीसे पाक में इस की वज़ाह़त मौजूद है, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रेह़म में एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर किया है वोह कहता है : ऐ रब ! येह नुत़्फ़ा है, ऐ रब ! येह जमा हुवा ख़ून है, ऐ रब ! येह गोश्त का लोथड़ा है। फिर जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तख़्लीक़ का इरादा फ़रमाता है, तो फ़िरिश्ता पूछता है : येह मुज़क्कर है या मुअन्नस ? येह बद बख़्त है या नेक बख़्त ? इस का रिज़्क़ कितना है ? इस की मुद्दते ह़यात कितनी है ? फिर वोह मां के पेट में लिख देता है।[1]

येह सच है कि आज के दौर में साइन्स ने बहुत तरक़्क़ी की है और हम अय्यामे ह़म्ल में बा आसानी "अल्ट्रासाउन्ड स्केन" का इस्ति'माल करते हुवे येह जान सकते हैं कि मां के रेह़म में बच्चे की जिन्स क्या है ? इस त़रह़ से डॉक्टर्ज़ का ब ज़रीअ़ए मशीन बच्चे की जिन्स को जान लेना इन आयात के ख़िलाफ़ नहीं है क्यूंकि मज़्कूरए बाला आयात बच्चे को

1 ......بخاری، کتاب الحیض، باب مخلقة وغیر مخلقة، ۱/۱۲۸، حدیث: ۳۱۸ و مسلم، کتاب القدر، باب کیفیة الخلق الآدمی فی بطن...الخ، ص۱۴۲۲، حدیث: ۲۶۴۶

मौजूदा और मुस्तक़्बिल के ह़ालात पर कलाम करती हैं, मसलन बच्चे का मुस्तक़्बिल क्या होगा ? क्या येह सईद होगा या शक़ी ? वालिदैन का ना फ़रमान होगा या फ़रमां बरदार ? ज़िन्दगी में इस के साथ क्या मुआ़मलात पेश आएंगे ? क्या येह अच्छा इन्सान बनेगा या बुरा ? इस की ज़िन्दगी कितनी होगी ? क्या येह जन्नत में जाएगा या जहन्नम में ? येह सब वोह बातें हैं कि जिन को सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला ही जानता है, (अलबत्ता **अल्लाह** तआ़ला जिस को चाहे येह इल्म अ़ता फ़रमा दे लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला की अ़ता से **अल्लाह** के मुक़र्रब बन्दों को इस त़रह़ के ड़लूम का हुसूल शरअ़न दुरुस्त है और इसी त़रह़ आलात के ज़रीए़ से बच्चे की जिन्स का इल्म भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता ही है) ।

कोई साइन्स दान इस दुन्या में इतनी साइन्सी और टेक्नोलोजीकल तरक़्क़ी के बा वुजूद इन चीज़ों को नहीं जान सकता और मां के पेट में जो बच्चा है इस के मुस्तक़्बिल को कोई भी मा'लूम नहीं कर सकता ।

सुवाल कुरआने मजीद इस बात को बयान करता है कि इन्सान मिट्टी से पैदा किया गया है और इस बात को भी बयान करता है कि इन्सान नुत़्फ़े से पैदा किया गया है, क्या येह तज़ाद नहीं है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَیْءٍ حَیٍّ (پ۱۷، الانبیاء:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई ।*

فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ (پ۱۷، حج:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कि हम ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से ।*

اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِیْنٍ لَّازِبٍ ﴿۱۱﴾ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हम ने इन को चिपकती मिट्टी से बनाया ।*

इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने तख़्लीक़े इन्सान के कई मराह़िल का ज़िक्र फ़रमाया है, क़ुरआने पाक के मुत़ाबिक़ इन्सान को सब से पहले पानी और मिट्टी से पैदा किया गया, जिस से गारा तय्यार हुवा और येह सारे इन्सानों के बाप ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ बयान हुवा फिर अल्लाह तआ़ला ने येह फ़ैसला फ़रमाया कि आदम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद इसी फ़ित़री और क़ुदरती निज़ाम के तह़त आगे बढ़ेगी जिस त़रह़ से दीगर जानदारों की नस्लें आगे बढ़ रही हैं।

कभी कभी क़ुरआने पाक नुत़्फ़े को पानी के नाम से भी बयान करता है, इस का मत़लब येह है कि बहने वाली चीज़। जब अल्लाह तआ़ला क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाता है कि जानदार चीज़ों को पानी से पैदा किया गया है, इस में इस त़रफ़ इशारा है कि हर मख़्लूक़ वोह चाहे इन्सान हों, चाहे जानवर या दरख़्त, सब पानी से पैदा किये गए हैं और अपने वुजूद में बाक़ी रहने के लिये पानी पर मौक़ूफ़ हैं लेकिन येही आयत जिस में इस बात का ज़िक्र है कि अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ को पानी से पैदा किया, इस का येह मत़लब भी हो सकता है कि इन्सान और दीगर जानवर अपने बाप के नुत़्फ़े से पैदा किये गए हैं और इस की ताईद दूसरी आयत से होती है जैसा कि :

اَلَمۡ نَخۡلُقۡكُّمۡ مِّنۡ مَّآءٍ مَّهِيۡنٍ ﴿۲۰﴾
(پ۲۹، مرسلٰت:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या हम ने तुम्हें एक बे क़द्र पानी से पैदा न फ़रमाया।*

जहां तक साइन्सी शवाहिद का तअ़ल्लुक़ है, साइन्सी तह़क़ीक़ में साबित किया गया है कि इन्सान के जिस्म का ज़ियादा ह़िस्सा दूसरे जानदारों की त़रह़ पानी से बनाया गया है, तक़रीबन सत्तर फ़ीसद इन्सान का जिस्म पानी से बना है और इन्सानी जिस्म में वोह अज्ज़ा बिऐ़निही

पाए जाते हैं जो कि ज़मीन की मिट्टी के अन्दर पाए जाते हैं, इन की ता'दाद अगर्चे कम है क्यूंकि इन्सानी जिस्म में पानी ज़ियादा है और मिट्टी कम है।

सुवाल इस्लाम में शराब का इस्ति'माल क्यूं मन्अ़ है ?

जवाब हर वोह चीज़ जो नुक़्सान देह है या उस के नुक़्सानात उस के फ़ाइदों से ज़ियादा हैं वोह जाइज़ नहीं है लिहाज़ा शराब इस्लाम के अन्दर ह़राम और मन्अ़ है।

शराब इन्सानी मुआ़शरे में एक ला'नत बन कर हमेशा मौजूद रही है, बेशुमार इन्सानी जानें इस के सबब लुक़्मए अजल बन चुकी हैं और लाखों इन्सानों की ज़िन्दगियों में शराब ने तक्लीफ़, दर्द और दुख पैदा किये हैं, आ'दाद व शुमार इस बात की वज़ाह़त करते हैं कि शराब बहुत घिनावने जराइम, जिस्मानी व दिमाग़ी बीमारियों का सबब बनती है और लाखों घर इस त़ाक़तवर बरबाद करने वाली शराब के ज़रीए़ से बरबाद हो गए, शराब इन्सानी दिमाग़ के मर्कज़ी निज़ाम को नुक़्सान पहुंचाती है, येही वज्ह है कि नशे से धुत इन्सान ऐसी मौज और मस्ती का इज़्हार कर रहा होता है जो कि इस की उस ह़ालत से बहुत मुख़्तलिफ़ होती है जिस ह़ालत में उस पर नशे का असर नहीं होता, शराब पीने का आ़दी जब नशे में धुत हो तो अच्छी त़रह़ से चल भी नहीं सकता, वोह शायद अपने कपड़ों में पेशाब भी कर दे ह़त्ता कि ऐसे लोग नशे की ह़ालत में सख़्त बे ह़याई का काम भी कर डालते हैं नीज़ इस त़रह़ के लोग अपनी माओं, बहनों और बेटियों से भी बदकारी कर लेते हैं।

शराब को इस्लाम के अन्दर मन्अ़ करने के कई अस्बाब हैं, लाखों लोग इस की वज्ह से हर साल मरते हैं, शराब की वज्ह से बीमारियां पैदा होती हैं जिन की लिस्ट मुन्दरिजए ज़ैल है :

(1) Cirrhosis of the liver.

(2) Various forms of cancer.

(3) Esophagitis, gastritis and pancreatitis.

(4) Cardiomyopathy, hypertension, angina and heart attacks.

(5) Strokes, apoplexy, fits and different types of paralysis.

(6) Peripheral neuropathy, cortical atrophy, cerebellar atrophy.

(7) Anemia, jaundice and platelet abnormalities.

(8) Recurrent chest infections, pneumonia, emphysema and pulmonary tuberculosis.

(9) During pregnancy, alcohol consumption has a severe detrimental effect on the fetus, causing "Fetal alcohol syndrome"

बहुत सारे लोग इस बात का दा'वा करते हैं कि वोह अपने आप को क़ाबू में रखते हैं और वोह एक ह़द के अन्दर पीते हैं और नशे की ह़द से पहले रुक जाते हैं लिहाज़ा उन पर नशा नहीं चढ़ता लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि हर शराब का आ़दी सोश्यल ड्रिंकर या'नी कभी कभी शराब नोशी करता है, कोई भी शुरूअ़ ही से इस निय्यत से शराब नहीं पीता कि वोह शराब का आ़दी बन जाएगा, येह आ़दत बस पड़ जाती है, जो येह सोच कर शुरूअ़ करता है कि कभी कभी पियूंगा या हल्की फुल्की पियूंगा बिल आख़िर वोही शख़्स शराब का पक्का आ़दी बन जाता है लिहाज़ा येह बहुत बड़ा धोका है कि मैं तो थोड़ी सी पियूंगा या ह़द्दे नशा से कम पियूंगा कभी कभार पियूंगा ।

अल्लाह तआ़ला बहुत हिक्मत वाला है, येह उस की हिक्मत के तक़ाज़े हैं कि उस ने शराब को ह़राम कर के इन्सानी मुआ़शरे को इनफ़िरादी और इजतिमाई त़ौर पर तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम किया है, इस्लाम के अन्दर शराब का इस्ति'माल मुत़लक़न ह़राम और नाजाइज़ है लिहाज़ा कभी कभार पीना या ह़द्दे नशा से कम पीने की भी गुन्जाइश इस्लाम में नहीं है क्यूंकि बिल आख़िर इस त़रह़ के लोग पक्के पक्के शराब नोशी के आ़दी हो जाते हैं। येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है और येह चीज़ भी नोट करने के क़ाबिल है कि मुसलमान ऐसी चीज़ों से रुकते हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमाया इस की बड़ी वज्ह येह नहीं होती कि इन चीज़ों के नुक़्सानात हैं बल्कि इस की सब से बड़ी वज्ह येह होती है कि अल्लाह तआ़ला ने इस से मन्अ़ फ़रमाया है या'नी मुसलमानों का मुन्तहाए नज़र अल्लाह तआ़ला के हुक्म की इत़ाअ़त होती है और इस हुक्म के मानने में उन्हें येह दुन्यावी फ़ाइदे भी ह़ासिल हो जाते हैं कि मज़्कूरए बाला बीमारियों से शराब नोशी न करने वाले मुसलमान बच जाते हैं।

इस्लाम में औ़रत का मक़ाम

सुवाल क्या इस्लाम औ़रत पर ज़ुल्म करता है?

जवाब इस सुवाल का जवाब देने से पहले ज़रूरी है कि इस्लामी ता'लीमात और बा'ज़ मुसलमानों के अ़मल में फ़र्क़ किया जाए, अगर्चे ऐसा मुमकिन है कि बा'ज़ मुसलमान मुआ़शरों में कुछ लोग औ़रत पर ज़ुल्म करते हों और बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता भी है लेकिन इस से उन लोगों के मक़ामी रस्मो रवाज का ज़ुहूर होता है, येह इस्लामी ता'लीमात

का असर नहीं होता क्यूंकि इस्लामी ता'लीमात के मुताबिक़ औ़रत को जो तह़फ़्फ़ुज़ और जो मक़ाम दिया गया है वोह बहुत ऊंचा है, इस्लाम इस बात की तवक़्क़ोअ़ रखता है कि इस दीन के मानने वाले, औ़रत के मक़ाम को ह़िफ़ाज़त के साथ बुलन्द सत़्ह़ पर रखें और वोह उस के मुआ़शरती मक़ाम की ह़िफ़ाज़त करें और उस के रुत्बे को छोटा करने की हर साज़िश को ना काम बनाएं, इस्लाम इस बात की वाज़ेह़ ता'लीम देता है कि औ़रतें अपनी अस्ल या'नी इन्सान होने के ए'तिबार से मर्दों के बराबर हैं, सब इन्सान इ़ज़्ज़त, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने ह़िसाबो किताब और जज़ा व सज़ा पाने के ह़वाले से बराबर हैं, आज मग़रिबी मुआ़शरे में औ़रत को बिल्कुल एक जिन्सी चीज़ बना दिया गया है।

येह बात कि इस्लाम औ़रत को दूसरे नम्बर के शहरी का दरजा देता है या इस का मक़ाम मर्द से आधा है येह सिर्फ़ वहम है और बहुत बड़ी ग़लत़ फ़हमी है, इस्लाम ने चौदह सौ साल पहले औ़रत के मर्तबे को बहुत बुलन्द कर दिया, उन्हें ता'लीम का ह़क़ दिया, उन्हें अपना ख़ाविन्द इख़्तियार करने का ह़क़ दिया, उन्हें विरासत में ह़िस्सा मिला, अल ग़रज़ एक सल्त़नत में औ़रत को मुकम्मल शहरी होने का मर्तबा इस्लाम ने दिया, येह ह़ुक़ूक़ सिर्फ़ जिस्मानी ह़वाले से या शादी के ह़वाले से ही नहीं बल्कि इस्लाम के अह़काम में जो मेह़रबानी और मह़ब्बत और जो नर्म दिली औ़रत के ह़क़ के मुआ़मले में बयान की गई है वोह बड़ी मिसाली और वाज़ेह़ है, मर्द व औ़रत इन्सानिय्यत के दो बहुत अहम अज्ज़ा हैं, इन दोनों के ह़ुक़ूक़ और ज़िम्मेदारियां अपनी अपनी जिन्स के ए'तिबार से मुतवाज़िन, कामिल और मुकम्मल हैं अगर्चे इन के जिस्मानी और ज़ेह्नी फ़र्क़ की वज्ह से इन की ज़िम्मेदारियां एक दूसरे से कई सारे मुआ़मलात में मुख़्तलिफ़ हैं लेकिन हर एक अपनी ज़िम्मेदारी

का हिसाब देह है, और उसे वोह ज़िम्मेदारी अह़सन त़रीक़े से निभानी है, इस्लामी क़ानून के मुत़ाबिक़ जब औ़रत की शादी हो जाती है तो वोह अपना पहला नाम बदलने पर मजबूर नहीं की जा सकती उसे इस बात की पूरी इजाज़त है कि वोह अपना मुनफ़रिद नाम और पहचान बाक़ी रखे।

इस्लामी शादी में दुल्हा दुल्हन को मेह्र देता है, उस की मालिका दुल्हन ही है, वोह दुल्हन के बाप के लिये नहीं होता, वोह उस की ज़ाती मिल्किय्यत है चाहे तो वोह अपने पास रखे और चाहे तो किसी कारोबार में उस को लगा दे लिहाज़ा किसी मर्द रिश्तेदार को येह ह़क़ ह़ासिल नहीं है कि वोह औ़रत पर ज़बरदस्ती करे कि वोह उस पैसे के साथ क्या करे और क्या न करे ? अलबत्ता औ़रत के फ़ाइदे के लिये उसे मश्वरा दे सकता है !

क़ुरआने पाक ने येह ज़िम्मेदारी मर्द पर डाली है कि वोह अपनी सारी रिश्तेदार औ़रतों की ह़िफ़ाज़त करे और इन के नानो नफ़्क़ा का इन्तिज़ाम करे, इस का मत़लब येह है कि अगर्चे औ़रत की अपनी जाईदाद मौजूद हो लेकिन येह मर्द की ज़िम्मेदारी है कि वोह अपनी बीवी और अपने पूरे ख़ानदान की देख भाल करे और उन के नानो नफ़्क़ा और इ़ज़्ज़त का ख़याल रखे।

औ़रत पर येह लाज़िम नहीं है कि वोह अपना पैसा अपने ख़ानदान के नानो नफ़्क़ा पर ख़र्च करे लिहाज़ा येह निज़ाम ऐसा है कि जिस में औ़रत को कमाने की तक्लीफ़ से आज़ाद कर दिया गया है, हां अगर वोह काम करना चाहे तो कर सकती है जब कि ह़ालात उस का तक़ाज़ा करें, मगर इस में शर्त़ येह है कि वोह उन उसूलों की पाबन्दी करे जो शरीअ़ते मुत़हहरा ने औ़रत के काम करने के ह़वाले से फ़राहम किये हैं। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते

अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ की किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** इस ह़वाले से पढ़ना बहुत ज़रूरी है कि इस में दीगर बहुत सारी मा'लूमात के साथ साथ औ़रत की नोकरी के ह़वाले से शराइत़ लिखी हैं।

एक ख़ानदान किसी भी अन्जुमन, ऑर्गेनाइज़ेशन या जमाअ़त की त़रह़ एक क़ियादत और नज़्मो ज़ब्त़ का तक़ाज़ा करता है लिहाज़ा क़ुरआने मुक़द्दस ने इस चीज़ को बयान फ़रमाया कि ख़ावन्द को उस की बीवी पर एक दरजा बड़ा मर्तबा अ़त़ा किया गया है, इस का मत़लब येह है कि उस के हाथ में घर को चलाना और घर की ह़िफ़ाज़त करना है, यहां इस बात को नोट करना बहुत अहम है कि येह जो घर चलाने और घर वालों की ह़िफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी मर्द को दी गई है येह इस बात का लाइसन्स नहीं है कि वोह अपने घर वालों पर ज़ुल्म या ज़ियादती करे बल्कि येह उस की बीवी और बच्चों का एक बोझ है जो शरीअ़त ने उस के कन्धों पर डाला है, इस मुआ़मले में भी औ़रत को हर त़रह़ की तक्लीफ़ और मुश्किल से बचाया गया है और जो तक्लीफ़ वाला पहलू है वोह मर्द के कन्धों पर डाला गया है।

सुवाल:-मुसलमान औ़रतें अपना चेहरा क्यूं छुपाती हैं ?

जवाब:-मुसलमान औ़रतों का इस त़रह़ का लिबास पहनना कि जिस में उन का पूरा चेहरा छुपा हुवा हो कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि येह दुरुस्त नहीं है, ख़ास कर आज कल के मग़रिबी मुआ़शरे में कुछ लोग इस को अ़जीब समझते हैं लेकिन इस्लामी ए'तिबार से इस अ़मल के अन्दर अख़्लाक़ी, मुआ़शरती और क़ानूनी पहलू मौजूद हैं।

इस्लाम ने मर्द औ़रत के किरदार और उन की ज़िम्मेदारियों की वज़ाह़त कर दी है और इन के जो ह़ुक़ूक़ एक दूसरे पर हैं उन की भी

वज़ाहत कर दी है और येह सब इस लिये है कि मुआ़शरे के अन्दर एक ज़बरदस्त तवाज़ुन रहे।

जब मर्द व औ़रत बा क़ाइ़दा इस्लामी लिबास पहनते हैं तो वोह न सिर्फ़ अपनी इ़ज़्ज़त और मक़ाम व मर्तबे की ह़िफ़ाज़त कर रहे होते हैं बल्कि इस के साथ साथ वोह मुआ़शरे के अम्न और नज़्मो ज़ब्त़ को भी मज़बूत़ कर रहे होते हैं।

इस्लाम ने औ़रत के लिबास के बारे में बड़ी वाज़ेह़ हिदायात दे दी हैं, उन का लिबास बिल्कुल चुस्त न हो कि जिस से जिस्म के उतार चढ़ाव वाज़ेह़ हों और इतना बारीक न हो कि जिल्द की रंगत नज़र आए।

ऐसा लिबास हो कि पूरे का पूरा जिस्म ढके, मुसलमान औ़रतें इस त़रह़ का लिबास इस लिये नहीं पहनतीं कि उन के बाप या भाई या ख़ावन्द का हुक्म है और उन की इत़ाअ़त करते हुवे ऐसा कर रही हैं बल्कि वोह इस लिये करती हैं कि येह अल्लाह तआ़ला का हुक्म है, अल्लाह तआ़ला के हुक्म की इत़ाअ़त के जज़्बे के तह़त और सवाब के लिये वोह येह काम करती हैं।

मर्द और औ़रत दोनों से येह तवक़्क़ोअ़ की जाती है कि वोह अपने किरदार और अख़्लाक़ में साफ़ सुथरे और इ़फ़्फ़त मआब हों और इस त़रह़ का लिबास न पहनें कि जिस में दूसरों के लिये ख़्वाहिश या शहवत की दा'वत मौजूद हो, दोनों को येह हुक्म दिया गया है कि वोह सिर्फ़ वोही देख सकते हैं जिस के देखने की इजाज़त है ताकि वोह इस त़रह़ से अपनी पाकीज़गी और त़हारत की ह़िफ़ाज़त कर सकें, अल्लाह तआ़ला मर्दों और औ़रतों को क़ुरआने पाक में आंखों की ह़िफ़ाज़त करने की ता'लीम देते हुवे इरशाद फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ یَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ یَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا یَصْنَعُوْنَ(۳۰) وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ یَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ یَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَ لَا یُبْدِیْنَ زِیْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ لْیَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُیُوْبِهِنَّ۪ وَ لَا یُبْدِیْنَ زِیْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآىٕهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآىٕهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِیْۤ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِیْۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآىٕهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِیْنَ غَیْرِ اُولِی الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِیْنَ لَمْ یَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ۪ وَ لَا یَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِیُعْلَمَ مَا یُخْفِیْنَ مِنْ زِیْنَتِهِنَّؕ وَ تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ(۳۱)

(پ۱۸، النور:۳۰، ۳۱)

मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हि़फ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत सुथरा है बेशक **अल्लाह** को उन के कामों की ख़बर है और मुसलमान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हि़फ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं मगर जितना खुद ही ज़ाहिर है और दूपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शोहरों पर या अपने बाप या शोहरों के बाप या अपने बेटे या शोहरों के बेटे या अपने भाई या अपने भतीजे या अपने भांजे, या अपने दीन की औ़रतें या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों या नोकर ब शर्ते कि शहवत वाले मर्द न हों या वोह बच्चे जिन्हें औ़रतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ ।

इस्लाम का येह हुक्म कि औ़रत अपनी नुमाइश और ख़ूब सूरती को छुपाए, इस वज्ह से है कि उस की अपनी ज़ाती पहचान और उस की हि़फ़ाज़त पर असर न पड़े सिवाए इस के कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों (महा़रिम) में हो, इस्लाम ने औ़रत से इस बात का तक़ाज़ा किया है कि वोह अपने जिस्म को शर्मो ह़या वाले लिबास के साथ छुपाए।

क़ुरआने पाक इस बात की वज़ाह़त करता है कि अल्लाह तआ़ला ने औ़रत को इस तरह़ का लिबास पहनने का हुक्म क्यूं दिया है?

चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۵۹

(پ۲۲، الاحزاب:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ नबी अपनी बीबियों और साहि़बज़ादियों और मुसलमानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हि़स्सा अपने मुंह पर डाले रहें येह इस से नज़्दीक तर है कि उन की पहचान हो तो सताई न जाएं और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है।*

सुवाल इस्लाम एक से ज़ियादा शादियों की इजाज़त क्यूं देता है?

जवाब इस्लाम एक ह़द के अन्दर तअ़द्दुदे अज़्वाज की इजाज़त देता है, यहूदियों की तौरात में और ईसाइयों की इन्जील में एक से ज़ियादा शादियों पर कोई ह़द नहीं मिलती, इन किताबों की रू से इस बात की ह़द मौजूद नहीं है कि एक मर्द कितनी औ़रतों से निकाह़ कर सकता है लिहाज़ा अगर कोई यहूदी या ईसाई दरजनों औ़रतों से भी शादी कर ले तो उस का मज़्हब उसे इस से मन्अ़ नहीं करता, वाज़ेह़ रहे कि तअ़द्दुदे

अज़्वाज सिर्फ़ इस्लाम के साथ ख़ास नहीं है बल्कि पहले के यहूदी और ईसाई इस पर अ़मल करते आए हैं। तौरात के मुताबिक़ इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की तीन बीवियां थीं जब कि सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की सेंकड़ों बीवियां थीं।

यहूदिय्यत के अन्दर तअ़द्दुदे अज़्वाज पर अ़मल जारी रहा यहां तक कि उन के एक मज़्हबी रहनुमा "गिरशम बिन यहूदा (955–1030 CE)" ने इस के ख़िलाफ़ फ़तवा दिया, यहूदियों का कट्टर मज़्हबी त़बक़ा सिने 1950 ईसवी तक त़अद्दुदे अज़्वाज पर अ़मल करता रहा यहां तक कि इस्राईल के सब से बड़े राहिब ने एक से ज़ियादा शादियों पर पाबन्दी आ़इद कर दी, नतीजतन यहूदियों को एक से ज़ियादा शादियां करना मन्अ़ कर दिया गया।

ईसाइय्यत में तअ़द्दुदे अज़्वाज का अ़मल बहुत अ़र्से तक जारी रहा, एक शख़्स जितनी चाहे बीवियां रख ले क्यूंकि इन्जील ने ज़ियादा शादियों की कोई ह़द बयान नहीं की अलबत्ता इस दौर में गिरजे के पादरियों ने येह पाबन्दी आ़इद की है कि एक मर्द सिर्फ़ एक ही बीवी रख सकता है।

जिस दौर में मर्दों को ग़ैर मह़दूद बीवियां रखने की इजाज़त थी, इस्लाम ने उन की ज़ियादती पर पाबन्दी आ़इद की और चार से ज़ियादा बीवियां रखने को मन्अ़ फ़रमा दिया, क़ुरआन के नुज़ूल से पहले बीवियों के ह़वाले से ज़ियादा से ज़ियादा की ता'दाद पर कोई ह़दबन्दी नहीं थी जिस की वज्ह से मर्द ढेरों बीवियां रखते थे, क़ुरआन ने ज़ियादा से ज़ियादा की ह़द भी बयान की और साथ में बराबरी और इन्साफ़ की कड़ी शर्तें भी लगा दीं, **अल्लाह** तआ़ला क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

فَاِنۡ خِفۡتُمۡ اَلَّا تَعۡدِلُوۡا فَوَاحِدَةً

(پ ٤، النساء:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर डरो कि दो बीबियों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो।

मुसलमान के लिये तअ़द्दुदे अज़्वाज का अ़मल ज़रूरी नहीं, इस्लाम में एक से ज़ियादा बीवी न तो मन्अ़ की गई है न ही इस की तरग़ीब दी गई है, मज़ीद येह कि एक मुसलमान जिस की दो या तीन या चार बीवियां हों वोह इस वज्ह से उस मुसलमान से बेहतर नहीं हो जाता जिस की एक बीवी है लिहाज़ा एक से ज़ियादा निकाह़ करना कोई फ़ज़ीलत की बात नहीं।

अगर्चे तअ़द्दुदे अज़्वाज का अ़मल बहुत सारे अदयान और तहज़ीबों में पाया जाता है लेकिन मग़रिबी मुमालिक के लोग येह समझते हैं कि इस का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ दीने इस्लाम से है जब कि ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि इस्लाम ने बीवियों की ता'दाद पर ह़दबन्दी का क़ानून बनाया ताकि लोग इस मुआ़मले में औ़रतों के हु़क़ूक़ पामाल न करते फिरें, क़ुरआने करीम ने मर्द को चार बीवियां रखने की इजाज़त दी है ब शर्ते़ कि वोह उन सब के हु़क़ूक़ पूरे कर सके और सब के साथ बराबर का सुलूक करे, मुसलमानों के नज़्दीक क़ुरआने पाक का येह हुक्म औ़रतों और ख़ानदानों के मर्तबे को मज़्बूत़ करता है, जहां इस्लाम ने ग़ैर मह़दूद बीवियां रखने पर पाबन्दी लगाई वहां वोह औ़रतें जिन के ख़ावन्द जंगों में फ़ौत हो गए वोह बेवा हो गईं और उन की ता'दाद निस्बतन मर्दों से बढ़ गई, निकाह़ के ज़रीए़ से इस्लाम ने उन को तह़फ़्फ़ुज़ दिया है।

कुछ ऐसे ह़ालात जिन में दूसरी बीवी रखना फ़ाइदे मन्द होता है मसलन अगर ग़ैर शादी शुदा औ़रतों की ता'दाद मुआ़शरे में मर्दों के मुक़ाबले में बढ़ जाए, ख़ास कर जंगों के दौरान जब बेवा औ़रतों को छत

और नानो नफ़्क़ा की ह़ाजत हो, वैसे भी मर्द औ़रतों की बा निस्बत ज़ियादा मरते हैं, अक्सर जंगों में औ़रतों के मुक़ाबले में मर्द ही ज़ियादा मरते हैं, उ़मूमन औ़रतें मर्दों से ज़ियादा ज़िन्दा रहतीं हैं, नतीजतन मर्दों की ता'दाद औ़रतों की ता'दाद से कम ही होती है लिहाज़ा अगर एक ग़ैर शादी शुदा मर्द एक ही औ़रत से शादी करे तो लाखों औ़रतें ऐसी होंगीं कि जिन को ख़ावन्द नहीं मिल सकेंगे।

मग़रिबी मुआ़शरे में शादी शुदा मर्दों का गर्ल फ्रेन्ड या रखेल (मह़बूबा मा'शूक़ा) का रखना एक आ़म सी आ़दत है और इस आ़दत पर उस मुआ़शरे में बहुत कम तन्क़ीद की जाती है जब कि इस के नुक़्सानात से हर कोई वाक़िफ़ है, दूसरी त़रफ़ तअ़द्दुदे इज़्दिवाज के अ़मल को मग़रिबी मुआ़शरे में बिल्कुल ममनूअ़ क़रार दे दिया गया है जब कि इस के कोई नुक़्सानात नहीं बल्कि इस की वज्ह से औ़रत की इ़ज़्ज़त व इ़फ़्फ़त का तह़फ़्फ़ुज़ होता है।

औ़रत अगर्चे दूसरी, तीसरी या चौथी बीवी ही क्यूं न हो, बहर ह़ाल वोह बीवी है रखेल नहीं है, उस का एक ख़ावन्द है जिस पर इस्लामी क़ानून के मुत़ाबिक़ उस औ़रत का और उस के बच्चों का नानो नफ़्क़ा वाजिब है, इस ख़ावन्द की मिसाल उस Boy Friend की त़रह़ नहीं है जो एक दिन बड़ी आसानी से औ़रत को अपने से जुदा कर देता है, जब औ़रत को ह़म्ल हो जाता है तो वोह उस औ़रत को पहचानने से भी इन्कार कर देता है।

इस में कोई शक नहीं कि दूसरी बीवी जिस की क़ानूनन शादी हुई है उस की इ़ज़्ज़त है, क़ानूनन उस के ह़ुक़ूक़ मह़फ़ूज़ हैं, मुआ़शरे में उस को एक इ़ज़्ज़त दार औ़रत की त़रह़ क़बूल किया जाता है, इस के बर अ़क्स रखेल की न मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त है और न कोई क़ानूनी ह़क़,

इस्लाम सख़्ती से जिस्म फ़रोशी और ज़िना को मन्अ़ करता है अलबत्ता सख़्त शराइत़ और ता'दाद की ह़दबन्दी के साथ एक से ज़ियादा निकाह़ करने की इजाज़त भी देता है।

सुवाल अगर मर्द को एक से ज़ियादा बीवियों की इजाज़त है तो औ़रत को एक से ज़ियादा ख़ावन्द रखने की इजाज़त क्यूं नहीं है ?

जवाब इस्लाम इस बात की ता'लीम देता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कि ग़ालिब ह़िक्मत वाला है उस ने मर्द और औ़रत को हर मुआ़मले में बिऐ़निही एक जैसा नहीं पैदा किया, वोह एक दूसरे से जिस्मानी, अ़क़्ली और जज़्बाती ए'तिबार से काफ़ी मुख़्तलिफ़ हैं और उन की सलाह़िय्यतें भी एक दूसरे से जुदागाना हैं, येही वज्ह है कि उन की ज़िम्मेदारियां भी एक दूसरे से जुदागाना हैं लेकिन वोह एक दूसरे की ज़िम्मेदारियों को सराहते हुवे ज़िन्दगी में आगे बढ़ते हैं।

कुछ लोग इस पर ए'तिराज़ करते हैं कि मर्द को तो एक से ज़ियादा बीवियों की इजाज़त है, अ़द्लो इन्साफ़ का तक़ाज़ा फिर येही है कि औ़रत को भी एक से ज़ियादा ख़ावन्दों की इजाज़त होनी चाहिये, हम ज़ैल में कुछ अस्बाब बयान करते हैं जिस की वज्ह से येह समझने में मदद मिलेगी कि औ़रत को एक से ज़ियादा मर्द रखने की इजाज़त क्यूं नहीं है।

- मर्दों का एक से ज़ियादा निकाह़ करना औ़रतों की बढ़ती हुई ता'दाद के मस्अले को ह़ल करता है।
- फ़ित़रती त़ौर पर मर्द के अन्दर तअ़द्दुदे अज़्वाज का मैलान मौजूद है जब कि औ़रतों के अन्दर फ़ित़रतन येह बात नहीं है।
- इस्लाम इस बात को बहुत अहम्मिय्यत देता है कि बच्चे के मां और बाप दोनों की पहचान वाज़ेह़ हो, जब मर्द की एक से ज़ियादा बीवियां हों तो इस शादी में बच्चे के मां और बाप दोनों की पहचान बा

आसानी हो सकती है लेकिन अगर औ़रत ने एक से ज़ियादा ख़ावन्दों से शादी की हो तो इस सूरत में सिर्फ़ मां का पता तो यक़ीनी तौ़र पर लग सकता है लेकिन बाप का पता लगाना यक़ीनी तौ़र पर बहुत मुश्किल है, फिर इस के लिये मेडीकल टेस्ट करवाने की ह़ाजत पड़ेगी कि किस के नुत़्फ़े से बच्चा पैदा हुवा है, टेस्ट भी हमेशा सह़ीह़ नहीं होते येह बात तजरिबे से साबित हो चुकी है, जिस बाप को येह यक़ीन नहीं होगा कि येह बच्चा मेरा है तो वोह उस की तरबिय्यत और नानो नफ़क़ा के बारे में ला परवाह हो जाएगा और माहिरीने नफ़्सिय्यात बताते हैं कि येह सूरते ह़ाल बच्चे के लिये ज़ेह्नी तक्लीफ़ और ना ख़ुश गवार बचपन का सबब बन सकती है ।

सुवाल इस्लाम में ज़िना की सज़ा इतनी सख़्त क्यूं है ?

जवाब इस्लाम में सज़ाओं की एक मुआ़शरती वज्ह है ताकि दूसरों को इस त़रह़ का जुर्म करने से रोका जाए, जिस सन्जीदा नोइय्यत का जुर्म होता है उस के ह़िसाब से उस की सज़ा रखी गई है, आज कल कुछ लोग ज़िना की सज़ा की मुख़ालफ़त इस लिये करते हैं कि उन्हें लगता है कि इस में तवाज़ुन नहीं है या सज़ा बहुत सख़्त है, बुन्यादी मस्अला येह है कि लोगों के ज़ेह्नों में मुख़्तलिफ़ मे'यार हैं जिस की बुन्याद पर मुख़्तलिफ़ जराइम के नुक़्सानात को नापा जाता है ।

इस्लाम में ज़िना सख़्त जुर्म शुमार होता है क्यूंकि येह ख़ानदान की उन बुन्यादों को खोखला कर देता है जिस पर एक ख़ानदान की ता'मीर होती है, मर्द व औ़रत के नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात ख़ानदान को ढा देते हैं और मुआ़शरती निज़ाम को तोड़ फोड़ कर रख देते हैं, ख़ानदानों का टूट फूट जाना, आने वाली नस्लों की ज़ेह्नी और जिस्मानी सिह़ह़त को बुरी त़रह़ असर अन्दाज़ करता है जो कि मुतअस्सिरीन को गुनाह भरे मोड़ पर ला कर खड़ा कर देता है, जिस में हर त़रफ़ ख़्वाहिशाते नफ़्स,

शहवत और लड़ाई झगड़ा होता है। इस लिये येह लाज़िम है कि हर वोह तरीक़ा अपनाया जाए जिस के ज़रीए से ख़ानदान को बचाया जा सके, येही वज्ह है कि इस्लाम ख़ानदानों के तहफ़्फ़ुज़ का दाई है और हर जुर्म जिस की वज्ह से येह ख़ानदानी ता'मीर टूटती हुई नज़र आती है उस पर सख़्त सज़ाएं देने का इस्लाम ने हुक्म दिया है, येह सज़ाएं मर्द व औ़रत के लिये यक्सां हैं।

सुवाल इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ औ़रत को मर्द के मुक़ाबले में आधा हिस्सा क्यूं मिलता है ?

जवाब इस्लाम ने विरासत के उस निज़ाम को ख़त्म किया जिस में सारे का सारा तर्का बड़े बेटे को मिलता था, क़ुरआने पाक के हुक्म के मुताबिक़ औ़रत को ख़ुद ब ख़ुद अपने बाप, ख़ावन्द, अपने बेटे और अपने उस भाई से जिस की कोई औलाद न हो या सिर्फ़ बेटियां ही हों, विरासत में हिस्सा मिलता है।

क़ुरआने पाक में विरासत के अन्दर हिस्सा पाने वाले ह़क़दारों की बड़ी वज़ाहत के साथ तफ़्सील बयान की गई है, सूरए निसा की आयत नम्बर 11-12 और 178 में क़रीबी रिश्तेदारों के विरासत में हुक़ूक़ बयान कर दिये गए हैं, अल्लाह तआ़ला ने बच्चों, मां बाप और मीयां बीवी के विरासत में हुक़ूक़ को ख़ूब वाज़ेह कर दिया है और उस को लोगों की सवाब दीद और जज़्बात की नज़्र होने से महफ़ूज़ फ़रमा दिया है, बा'ज़ क़रीबी रिश्तेदारों के मौजूद न होने की वज्ह से दूर वाले रिश्तेदार भी हिस्सा पाते हैं। विरासत की तक़्सीम में हमारे ख़ालिक़ के बे ऐ़ब होने और इल्मो हिक्मत का नज़्ज़ारा नज़र आता है कि एक ऐसा मुतवाज़िन निज़ामे विरासत क़ाइम किया कि जिस में हर शख़्स को उस की ज़िम्मेदारियों के हिसाब से मुख़्तलिफ़ हालात में उस का हिस्सा मिलता है।

बहुत सूरतों में औ़रत को मर्द से आधा हिस्सा मिलता है, बहर कैफ़ हमेशा ऐसा नहीं होता, बा'ज़ सूरतों में औ़रतों को मर्द के बराबर भी हिस्सा मिलता है और बा'ज़ सूरतों में औ़रत को मर्द से ज़ियादा विरासत भी मिलती है और जब मर्द को ज़ियादा हिस्सा दिया जाता है तो वोह भी ख़ूब समझ में आने वाला और अ़क्लन नक़्लन हर ए'तिबार से दुरुस्त है, इस्लाम में औ़रत पर मआ़शी तौ़र पर कोई ज़िम्मेदारियां ख़ानदान के लिये नहीं डाली गईं अगर्चे वोह मालदार ही क्यूं न हो या उस का अपना कोई आमदनी का ज़रीआ़ हो, मआ़शी ज़िम्मेदारियों का बोझ सिर्फ़ और सिर्फ़ मर्द के कन्धों पर डाला गया है, जब औ़रत ग़ैर शादी शुदा होती है तो क़ानूनन उस के नानो नफ़क़ा और अख़राजात बाप या भाई की ज़िम्मेदारी होती है, जब उस की शादी हो जाए तो फिर येह ज़िम्मेदारी उस के ख़ावन्द पर या बालिग़ बेटे पर पड़ती है, इस्लाम ने मर्द पर अपने ख़ानदान की हर त़रह़ की मआ़शी ज़रूरत की ज़िम्मेदारी डाली है।

लिहाज़ा विरासत के हिस्सों में फ़र्क़ का मत़लब हरगिज़ येह नहीं है कि एक जिन्स को दूसरी जिन्स पर तरजीह़ दी गई है, येह फ़र्क़ सिर्फ़ इस बात की नुमाइन्दगी करता है कि घर के अफ़राद में ज़ेह्नी, नफ़्सियाती और जिस्मानी फ़र्क़ की वज्ह से उन की ज़िम्मेदारियां अलग अलग हैं और उन की ज़िम्मेदारियों के हि़साब से सब को सही़ह़ और मुतवाज़िन हिस्से दिये गए हैं।

अल ग़रज़ औ़रत का घर में येह किरदार है कि वोह घर को संभाले और घर के अन्दर जो ज़रूरतें हैं इन को पूरा करे लिहाज़ा उस को मआ़शी ज़िम्मेदारियों के बोझ से आज़ाद कर दिया गया है, उस को विरासत में हिस्सा मिलता है लेकिन वोह सारे का सारा उस का अपना है, वोह चाहे तो इस्ति'माल करे, चाहे तो संभाल कर रख ले और जो चाहे उस माल के साथ करे, किसी दूसरे शख़्स को उस का इख़्तियार नहीं है

कि वोह उस के हिस्से पर किसी क़िस्म का दा'वा करे और उस के मद्दे मुक़ाबिल जो मर्द को मिलता है वोह उस के माल का हिस्सा बन जाता है जिस में से उस ने अपने बाल बच्चों पर, घर की ख़वातीन पर और अपनी ज़रूरतों पर ख़र्च करना है लिहाज़ा उस के हिस्से में जो आया वोह तसल्सुल के साथ कम होता रहता है।

फ़र्ज़ करो कोई शख़्स फ़ौत हो गया और उस ने एक बेटा और एक बेटी पीछे छोड़े, बेटा जब मेह्र अदा करेगा और अपनी बीवी का नानो नफ़क़ा देगा तो उस की विरासत का हिस्सा इस्ति'माल होगा बल्कि जब तक उस की बहन की शादी नहीं हो जाती वोह अपनी बहन पर भी ख़र्च करेगा, मज़ीद पैसे के लिये उसे काम करना पड़ेगा, बहर हाल उस की बहन का हिस्सा वैसे ही महफ़ूज़ रहेगा और अगर वोह उस रक़म को किसी कारोबार में लगा दे तो शायद उस का हिस्सा और बढ़ जाए, जब उस की शादी होगी तो ख़ावन्द से मेह्र वुसूल करेगी और उस का ख़र्चा भी उस का ख़ावन्द उठाएगा और उस पर किसी क़िस्म की मआशी ज़िम्मेदारी भी बिल्कुल नहीं डाली गई, येह सब देखते हुवे एक मर्द शायद इस नतीजे पर पहुंचे कि इस्लाम ने औरत को मर्द पर तरजीह दी है और औरत को मर्द से ज़ियादा दौलत अता की है।

इस के इलावा मुसलमान को येह भी इख़्तियार है कि वोह अपनी जाईदाद का तीसरा हिस्सा अपनी सवाब दीद के मुताबिक़ किसी ऐसे शख़्स के नाम वसिय्यत कर जाए जिस का विरासत में हिस्सा मुक़र्रर नहीं है, वोह चाहे तो उस तीसरे हिस्से से किसी ग़रीब मर्द व औरत या किसी दूर के रिश्तेदार की मदद करने की वसिय्यत कर जाए और इन्सान येह भी कर सकता है कि इस तीसरे हिस्से को किसी कारे ख़ैर, नेकी के काम में लगाने की वसिय्यत कर जाए ताकि मरने के बा'द उसे सवाब मिलता रहे।

इस्लाम और दहशत गर्दी

सुवाल जिहाद क्या है ?

जवाब मग़रिबी मुआ़शरे में उ़मूमन बहुत ग़लत् फ़ेहमियां पाई जाती हैं, जितना शदीद रद्दे अ़मल लफ़्ज़े "जिहाद" पर सामने आता है शायद ही किसी और इस्त़िलाह़ पर आता हो।

अ़रबी लफ़्ज़ जिहाद के मा'ना उ़मूमी त़ौर पर मग़रिबी दुन्या में "मुक़द्दस जंग"(Holywar) के समझे जाते हैं ह़ालांकि इस का लुग़वी मा'ना है, "कोशिश करना और किसी काम में ख़ूब तगो दो करना", येह बात ग़लत् है कि लफ़्ज़े जिहाद हमेशा लड़ाई और जंग का मुतरादिफ़ है जब कि लफ़्ज़े जिहाद के मआ़नी का सिर्फ़ एक पहलू जंग है।

जिहाद से मुराद येह है कि अच्छा काम करने की कोशिश करते रहना और ज़ुल्म के ख़ातिमे के लिये जिद्दो जेह्द करना, अपने आप और मुआ़शरे को बुराइयों से बचाने के लिये तगो दो करना, येह जिद्दो जेह्द कभी रूहानी होती है, कभी मुआ़शरती होती है, कभी मआ़शी होती है और कभी सियासी होती है।

दर अस्ल जिहाद ऐसा अ़मल है जो ज़िन्दगी भर जारी रहता है और इस का दाइरा बहुत वसीअ़ है, लफ़्ज़े जिहाद सिर्फ़ हथयार उठा कर जंग लड़ने तक मह़दूद नहीं है बल्कि ह़क़ की त़रफ़ दा'वत, ह़क़ बात की शहादत व गवाही और मज़्बूत् दलाइल से ह़क़ की वज़ाह़त करना, येह सब जिहाद है जिस का मत़लब येह है कि अपनी रूह़ को पाको साफ़ करने की कोशिश करते रहना, अपने ईमान को मज़्बूत् करना, अच्छे कामों की त़रफ़ मैलान पर अपने नफ़्स को मजबूर करना और बुराइयों और नाजाइज़ ख़्वाहिशात से अपने आप को दूर रखना।

फिर जिहाद माल से भी होता है जिस का मत़लब है कि कई त़रह़ के अच्छे कामों में अपना माल ख़र्च करना, इस में सदक़ा व ख़ैरात और दीगर रफ़ाहे आ़म्मा के काम शामिल हैं। अपनी ज़ात के ज़रीए़ जिहाद करना, इस से मुराद येह है कि मुसलमान अच्छे काम करे, मसलन नेकी की दा'वत देना, बुराई से मन्अ़ करना और जाइज़ त़रीक़े से ज़ुल्म और बरबरिय्यत के ख़िलाफ़ हथयार उठाना वग़ैरा।

किसी ग़ैर मुल्क के तसल्लुत़, किसी हुक्मरान का लोगों की आज़ादी को छीन लेना, इन्साफ़ व अख़्लाक़ के उसूल और क़दरें मिटा देना और लोगों को ह़क़ कहने या ह़क़ के रास्ते से मन्अ़ करना येह वोह मज़ालिम हैं कि इस्लाम ने जिहाद के नाम पर इन से ह़िफ़ाज़त की ज़मानत अ़त़ा फ़रमाई है।

जिहाद का येह मत़लब भी है कि **अल्लाह** तआ़ला के बारे में अ़क़ाइद की तरवीजो इशाअ़त में कोशिश करना, सिर्फ़ उसी की इ़बादत की दा'वत देना, अच्छी क़दरें अपनाना, अख़्लाक़े ह़सना और नेक कामों की अच्छे अन्दाज़ में तरग़ीब व दा'वत देना, येह सब जिहाद है।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِیْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ۝۱۲۵ (پ۱۴، النحل:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से और उन से उस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की राह से बहका और वोह ख़ूब जानता है राह वालों को।*

जिहाद के नाम पर इस्लाम मुआ़शरे की इस्लाह़ और जहालत, तवह्हुमात, ग़ुर्बत, बीमारियां और नस्ल परस्ती के ख़ातिमे की दा'वत देता है, जिहाद का एक बड़ा हदफ़ येह भी है कि मुआ़शरे के कमज़ोर और पिसे हुवे अफ़राद की ताक़तवर और असरो रुसूख़ वाले अफ़राद से ह़िफ़ाज़त की जाए, इस्लाम ज़ुल्म की शदीद मज़म्मत करता है अगर्चे उन लोगों पर ही क्यूं न हो जो कि दीने इस्लाम की मुख़ालफ़त करते हैं।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا یَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ (پ٦، المائدہ:٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम को किसी क़ौम की अ़दावत इस पर न उभारे कि इन्साफ़ न करो।

अल्लाह तआ़ला ने अहले ईमान को उन लोगों के बारे में हुक्म फ़रमाया जिन्हों ने मुसलमानों को मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होने से रोक दिया था :

وَلَا یَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ (پ٦، المائدہ:٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें किसी क़ौम की अ़दावत कि उन्हों ने तुम को मस्जिदे ह़राम से रोका था ज़ियादती करने पर न उभारे।

बा'ज़ अफ़राद या किसी क़ौम की दुश्मनी मुसलमानों को इस चीज़ पर न उभारे कि वोह उन पर ज़ुल्म करें या उन के हुक़ूक़ पामाल करें।

जिहाद की अक़्साम में एक बड़ा जिहाद येह है कि ज़ालिम हुक्मरान के सामने कलिमए ह़क़ कहा जाए, अपने आप को गुनाहों से बचाना भी अ़ज़ीम जिहाद है और एक जिहाद येह भी है कि उस वक़्त हथयार उठा लें जब मुसलमानों पर या मुसलमान मुल्क पर ह़म्ला हो या ह़म्ला होने का इमकान हो और मुसलमान उस की ह़िफ़ाज़त करें लेकिन

येह आख़िरी क़िस्म का जिहाद जिस की जंग से ता'बीर की जाती है मुसलमानों पर उस वक़्त फ़र्ज़ होता है जब कि उस का ए'लान एक सह़ीह़ मुसलमान हुकूमत के हुक्मरान की त़रफ़ से हो जो कि शरई शराइत़ के मुत़ाबिक़ मुसलमानों का ख़लीफ़ा माना जाता हो।

जिहाद का मत़लब बहुत वसीअ़ है सिर्फ़ जंग नहीं है जैसा कि मग़रिब में समझा जाता है, जब ज़ुल्म किया जा रहा हो, आज़ादी छीनी जा रही हो और ह़क़ तलफ़ किये जा रहे हों नीज़ मुज़ाकरात और पुर अम्न कोशिशें नाकाम हो जाएं तो उन के मसाइल का आख़िरी ह़ल जंग है और इस को हर अ़क़्ल मन्द समझ सकता है, जिहाद का मत़लब येह हरगिज़ नहीं कि लोगों पर ज़बरदस्ती कर के उन्हें मुसलमान बनाया जाए या उन की जाईदादों पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए या अपनी शानो शौकत और त़ाक़त दिखाने के लिये लोगों से जंग की जाए, जिहाद का बुन्यादी मक़्सद येह है कि अपनी और दूसरों की जानो माल, इ़ज़्ज़त व आबरू, आज़ादी और जाईदाद वग़ैरा की ज़ालिमों से ह़िफ़ाज़त की जाए और ए'लाए कलिमतुल ह़क़ के रास्ते में जो रुकावटें हों उन को दूर किया जाए।

सुवाल क्या इस्लाम जंग व क़िताल करने वाला दीन है ?

जवाब इस्लाम में त़ाक़त का इस्ति'माल ख़ास सूरतों में जाइज़ है, ख़ास कर जब कि मुसलमान क़ौम को किसी ऐसी त़ाक़त से ख़त़रा लाह़िक़ हो जो मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने पर तुली हुई हो, ऐसे वक़्त में त़ाक़त का इस्ति'माल फ़ित़री भी है और मन्त़िक़ी भी या'नी अ़क़्ल भी इस को क़बूल करती है, मज़ीद येह कि हर कोई जंग का ए'लान भी नहीं कर सकता, येह सिर्फ़ मुसलमानों के मुमालिक का जो शरई शराइत़ के मुत़ाबिक़ ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया गया हो उस का ह़क़ है और येह काम भी बड़े मुनज़्ज़म और मुहज़्ज़ब त़रीक़े से होता है, इस्लाम

में ज़िन्दगी की बहुत क़द्र है, ख़ास कर इन्सानी ज़िन्दगी के तहफ़्फ़ुज़ पर इस्लाम ने बहुत ज़ोर दिया है, **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ (پ۸، انعام:۱۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिस जान की **अल्लाह** ने हुरमत रखी उसे नाहक़ न मारो येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अ़क़्ल हो ।*

मज़ीद इरशाद होता है :

مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا (پ٦، المائدة:٣٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद के तो गोया उस ने सब लोगों को क़त्ल किया ।*

सिर्फ़ एक जान की ऐसी क़द्र है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक जान को ज़ालिमाना तौ़र पर ज़ाएअ़ करने को पूरी इन्सानिय्यत के क़त्ल के बराबर क़रार देता है ।

इस बात को समझना ज़रूरी है कि इस्लाम में जंग की इजाज़त ख़ास सूरत में और सख़्त ह़ाजत के वक़्त पर है और इस की इजाज़त सिर्फ़ उसी वक़्त है जब कि सारे पुर अम्न त़रीक़े नाकाम हो जाएं ।

आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी कभार सिर्फ़ अपने मक़्सद को ज़िन्दा रखने के लिये जंग की और रुकावट और ख़त़रा दूर हुवा तो आप ने फ़ौरन अम्न और सिफ़ारती रास्ता इख़्तियार फ़रमाया, जंग की ह़ालत में भी इस्लाम ने मुसलमान फ़ौज पर येह लाज़िम क़रार दे दिया है कि वोह मैदाने जंग में भी दुश्मनों के साथ मुन्सिफ़ाना रवय्या रखें, इस्लाम ने लड़ने वालों और आ़म लोग जो दुश्मन मुल्क के

बाशिन्दे हैं उन के दरमियान एक वाज़ेह़ और साफ़ ख़त़ खींच दिया है, सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मुसलमान फ़ौज को हुक्म दिया है कि "किसी बूढ़े, बच्चे और औ़रत को क़त्ल मत करो।"(1)

और इरशाद फ़रमाया : "राहिबों को उन के इबादत ख़ानों में क़त्ल न करो।"(2)

एक बार एक औ़रत की लाश को सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मैदाने जंग में देखा तो नाराज़ी का इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया : येह औ़रत क्यूं क़त्ल की गई ? और सरकार ने उस तक्लीफ़ देह अ़मल की मज़म्मत की।(3)

और दुश्मन जो जंग के दौरान क़ैद कर लिये गए उन के हुक़ूक़ की लिस्ट बहुत लम्बी है : मसलन उन को मारा पीटा न जाए, किसी ज़ख़्मी क़ैदी को क़त्ल न किया जाए, किसी लाश को चीरा या फाड़ा न जाए, दुश्मनों की लाशों को बिग़ैर किसी ह़ीलो हुज्जत के वापस किया जाए।(4)

मुन्दरिजए बाला ह़क़ाइक़ से येह बात रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो गई कि इस्लाम ज़ुल्म, ना इन्साफ़ी और बरबरिय्यत की हरगिज़ इजाज़त नहीं देता बल्कि अख़्लाक़े ह़सना, इन्साफ़, बरदाश्त और अम्न की दा'वत देता है।

1……ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی قتل النساء، ٣/٧٤، حديث: ٢٦٧٢ و المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب قتل أبی رافع، ٣/١٤١

2……مسند امام احمد، مسند عبداللّٰه بن العباس، ١/٦٤٣، حديث: ٢٧٢٨

3……ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی قتل النساء، ٣/٧٣، حديث: ٢٦٦٨، ٢٦٦٩

4……الزرقانی علی المواهب، غزوة بدرالكبرىٰ، ٢/٣٢٤ و مسند احمد، ١/٦٤٣، حديث: ٢٧٢٨

जंगो जिदाल के दाग़ से बहुत दूर रहते हुवे इस्लाम दस्तूरे ह़यात है और येह दीन क़ौमों, नस्लों और क़बीलों की ह़ुदूद से बहुत आगे है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۳﴾

(پ۲۶، الحجرات:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ लोगो हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया और तुम्हें शाख़ें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है ।*

इन्सानिय्यत बे चैन है और दहशत गर्दी के केन्सर में फंस चुकी है, कुछ अफ़राद और ह़ुकूमतें इस दहशत गर्दी को मज़बूत़ (promote) कर रहे हैं, इन ह़ालात और अन्धेरों में इस्लाम की रोशनी काम आएगी और इस्लाम ही में मुस्तक़्बिल के अम्न की उम्मीद की जा सकती है ।

सुवाल क्या मुसलमान दहशत गर्द हैं ?

जवाब बद क़िस्मती से बा'ज़ लोगों ने इस्लाम को दहशत गर्दी का मुतरादिफ़ समझ लिया है, दहशत गर्दी से बहुत दूर इस्लाम अम्न पसन्द दीन है, इस के क़वानीन मुसलमानों को अम्न पसन्द रहने, अम्न की तरग़ीब देने और दुन्या भर में इन्साफ़ को क़ाइम करने की ता'लीम देते हैं, इस्लाम दहशत गर्दी को बिल्कुल पसन्द नहीं करता जैसा कि आज कल ग़लत़ त़ौर पर समझा जा रहा है, अपने सियासी या मज़हबी मक़ासिद को ह़ासिल करने के लिये जहाज़ों को इग़वा करना, लोगों को

यरग़माल बना लेना, लोगों को मारना पीटना और बे क़ुसूर लोगों को क़त्ल करना येह इस्लाम का त़रीक़ा नहीं है कि अपने मक़ासिद को इन ज़राएअ़ से ह़ासिल किया जाए, न येह मस्अलों का ह़ल है और न ही येह इस्लाम फैलाने का त़रीक़ा है।

सुवाल दर अस्ल येह होना चाहिये कि क्या इस्लाम दहशत गर्दी की तरग़ीब देता है ? जवाब येह है कि बिल्कुल नहीं, इस्लाम मुकम्मल त़ौर पर हर त़रह़ की दहशत गर्दी को मन्अ़ करता है, येह बात ज़ेह्न में रहे कि हर मज़हब में कुछ गुमराह अफ़राद होते हैं, यक जानिब न होते हुवे और इन्साफ़ का दामन थामे हुवे येह देखना चाहिये कि किसी मज़हब की ता'लीमात क्या हैं ? क्यूंकि ता'लीमात ही मे'यार हैं जिन के ज़रीए़ से येह परखा जाता है कि उस मज़हब के मानने वाले बा'ज़ अफ़राद के आ'माल दुरुस्त हैं या ग़लत़ हैं।

येह बिल्कुल ना इन्साफ़ी है कि इस्लाम को चन्द ग़लत़ काम करने वाले गुमराह और जाहिल लोगों के अ़मल से जांचा जाए, दर ह़क़ीक़त इस्लाम जिस बात की ता'लीम देता है, वोह एक और चीज़ है और बा'ज़ मुसलमानों के आज के दौर में ग़लत़ आ'माल दूसरी चीज़ हैं, इस्लाम के साथ इन्साफ़ उसी सूरत में किया जा सकता है कि हम इस्लाम की ह़क़ीक़ी ता'लीमात को मानें जो कि वाज़ेह़ त़ौर पर क़ुरआने मजीद और अह़ादीसे मुबारका में बयान कर दी गई हैं।

इस्लाम अम्न वाला दीन है जिस में इन्सान अपनी ख़्वाहिशात को **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा में फ़ना कर देता है, इस्लाम अम्न की तरग़ीब देता है लेकिन साथ ही ज़ुल्म व बरबरिय्यत के ख़िलाफ़ लड़ने की भी दा'वत देता है, ज़ुल्म के ख़िलाफ़ लड़ाई में कभी हथयारों की भी ज़रूरत पड़ती है और कभी त़ाक़त का इस्ति'माल अम्न क़ाइम रखने के लिये भी होता है।

इस में कोई शक नहीं कि इस्लाम ख़ास ह़ालात में जंग की इजाज़त देता है, कोई मज़हब या तहज़ीब इतना भी न करे तो उस का वुजूद मिट जाता है लेकिन इस्लाम इस बात की ताईद नहीं करता कि बे क़ुसूर लोगों, औ़रतों, बूढों और बच्चों पर ह़म्ला किया जाए, इस्लाम इस बात की भी इजाज़त नहीं देता कि मुसलमान जहां चाहें जो करें, जिस को चाहें क़त्ल करें या सज़ाएं दें, सज़ाएं देना येह क़ानून का और क़ानून के मुत़ाबिक़ मुन्तख़ब शुदा जज या क़ाज़ी का ह़क़ है।

सुवाल इस्लाम को अम्न पसन्द दीन कैसे कहा जा सकता है? जब कि इस्लाम तल्वार के ज़रीए़ फैला है!

जवाब ग़ैर मुस्लिमों में येह एक बड़ी ग़लत़ फ़ह्मी पाई जाती है कि इस्लाम के मानने वाले करोड़ों की ता'दाद में इस वक़्त दुन्या में न होते अगर इस्लाम त़ाक़त व तल्वार की बिना पर न फैलाया जाता, मुन्दरिजए ज़ैल सुबूत इस की ख़ूब वज़ाह़त कर देंगे कि इस्लाम के फैलाव का त़ाक़त व तल्वार से दूर दूर का कोई वासित़ा नहीं है बल्कि इस्लाम ह़क़ की त़ाक़त और अ़क़्ली दलाइल व बराहीन के ज़रीए़ से बड़ी तेज़ी के साथ दुन्या में फैल गया, इस्लाम ने इन्सानों को हमेशा मज़्हबी आज़ादी दी है, क़ुरआने पाक में मज़हबी आज़ादी को बड़ी वज़ाह़त से बयान किया गया है :

لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ﳜ قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ (پ۳، البقرہ:۲۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ ज़बर दस्ती नहीं दीन में बेशक ख़ूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से।

अगर इस्लाम तल्वार से फैला तो बेशक येह ह़क़, सच और समझ में आने वाले दलाइल की तल्वार थी, सिर्फ़ इसी त़रह़ की तल्वार से लोगों के दिल और दिमाग़ फ़त्ह़ किये जा सकते हैं, क़ुरआने मजीद इस बारे में इरशाद फ़रमाता है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से और उन से उस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो ।*

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ (پ١٤، النحل:١٢٥)

ह़क़ीक़त ख़ुद बोलती है

इन्डोनेशिया ऐसा मुल्क है जिस में मुसलमानों की सब से बड़ी ता'दाद बसती है और मलेशिया में भी अक्सरिय्यत मुसलमानों की है।

लेकिन कभी कोई मुसलमान फ़ौज इन दो मुल्कों में दाख़िल नहीं हुई, येह तारीख़ की बहुत बड़ी ह़क़ीक़त है कि इन्डोनेशिया किसी जंग की वज्ह से इस्लाम में दाख़िल नहीं हुवा बल्कि इस्लाम के अख़्लाक़े ह़सना से लबरेज़ पैग़ाम ने उन लोगों का दिल इस्लाम की त़रफ़ मोड़ा, बा वुजूद इस के कि इस्लामी हुकूमत जब वहां ख़त्म हो गई तो फिर भी वहां के बाशिन्दे मुसलमान ही रहे बल्कि वोह लोग इस्लाम का पैग़ाम दूसरों तक पहुंचाते रहे और ज़ुल्मो बरबरिय्यत और गुनाहों के ख़िलाफ़ लड़ते रहे, यहां इस चीज़ की ख़ूब वज़ाह़त हो जाती है कि इस्लाम का असर इन्सानों पर उस की ता'लीमात और अख़्लाक़े ह़सना की वज्ह से हुवा, किरदार की येह सूरत उस के बिल्कुल मुतज़ाद है जिस किरदार को मग़रिब के लोगों ने पेश किया, उन्हों ने लोगों को ग़ुलाम बनाया, उन की जाईदादों पर क़ब्ज़ा किया, उन्हें वत़न और घर छोड़ने पर मजबूर किया और जब येह ग़ासिबाना क़ब्ज़ा करने वाले मग़रिब के लोग वहां से निकले तो लोगों को उन की ना इन्साफ़ी, तक्लीफ़ें, ज़ुल्मो बरबरिय्यत और नुक़्सान याद रहे, वोह लोगों के दिल न जीत पाए।

मुसलमानों ने स्पेन (अन्दलुस) पर आठ सो साल हुकूमत की, इस दौरान ईसाइयों और यहूदियों को अपने मज़हब के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की पूरी आज़ादी थी और येह बात तारीख़ के अवराक़ में महफ़ूज़ है जिस का कोई भी इन्कार नहीं कर सकता।

ईसाई और यहूदी मिडल ईस्ट (मशरिक़े वुस्ता) में मुसलमानों के मुमालिक में रह रहे हैं, मिस्र, मराकुश, फ़िलस्तीन, लुबनान, शाम और उर्दुन में ईसाइयों और यहूदियों की एक ख़ासी ता'दाद आबाद है।

अफ़्रीक़ा की ईस्ट कोस्ट (मशरिक़ी साहिले समन्दर) पर इस्लाम फैला लेकिन इस अ़लाक़े में कभी मुसलमानों की कोई फ़ौज दाख़िल नहीं हुई।

आज के दौर में सब से ज़ियादा फैलने वाला दीन अमेरीका, यूरोप और अफ़्रीक़ा में इस्लाम है, आज उन मुल्कों में मुसलमानों के हाथ में कौन सी तल्वार है? येह वोही सच की तल्वार है जिस ने हमेशा दिल पर वार कर के दिल की दुन्या को बदला है, आज भी इसी की बरकत से इस्लाम फैल रहा है।

इस्लामी क़ानून अक़ल्लियतों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करता है, येही वज्ह है कि ग़ैर मुस्लिमों की इबादत गाहें मुसलमान मुल्कों में बड़े अम्न और आज़ादी के साथ अपना काम कर रही हैं।

इस्लामी क़ानून इस बात की भी इजाज़त देता है कि ग़ैर मुस्लिम अपने पर्सनल मज़हबी मुआ़मलों में अपनी कोर्ट क़ाइम कर सकते हैं, मसलन फ़ेमेली लॉ के मुआ़मलात जिस को वोह ख़ुद अपने मज़हब की ता'लीमात के मुताबिक़ डीज़ाइन करते हैं, इस्लामी मुमालिक के अन्दर सब शहरियों के जानो माल की बहुत बड़ी क़द्र है, चाहे वोह मुसलमान

हों या गै़र मुस्लिम, लिहाज़ा येह बात रोजे़ रोशन की त़रह़ वाजे़ह़ हो गई कि इस्लाम तल्वार और त़ाक़त के ज़ोर से नहीं फैला ।

अगर इस्लाम तल्वार से फैला होता तो हिन्दुस्तान में मुसलमानों ने तक़रीबन हज़ार साल तक हुकूमत की तो इतने लम्बे अ़र्से में तो वहां कोई भी गै़र मुस्लिम न बचता लेकिन वहां अब भी गै़र मुस्लिमों की अक्सरिय्यत है और मुसलमान अक़ल्लियत में हैं ।

अमेरीका और केनेडा में तक़रीबन नौ मिलयन मुसलमान हैं ! उन पर कौन सी तल्वार चली है ?

सुवाल कु़रआन कहता है कि मुसलमान जहां कहीं गै़र मुस्लिम को पाएं उसे क़त्ल कर दें इस का मतलब येह है कि इस्लाम क़त्लो ग़ारत, खू़न बहाना और बरबरिय्यत की तरगी़ब देता है ?

जवाब कु़रआने पाक की कुछ आयात ऐसी हैं कि जिन का ह़वाला ग़लत़ त़ौर पर दिया जाता है या सियाक़ व सिबाक़ की वज़ाह़त किये बिगै़र उन को पेश किया जाता है और येह कह दिया जाता है कि इस्लाम मुसलमानों को क़त्लो ग़ारत की ता'लीम देता है और इस बात पर उकसाता है कि हर वोह शख़्स जो दाइरए इस्लाम में नहीं है वोह जहां भी मिले उसे क़त्ल कर डालो ।

वोह आयत जिस में इस बात का ज़िक्र है कि मुशरिकीन जहां भी मिलें उन को क़त्ल कर दो, इस का सह़ीह़ मा'ना और मह़ल समझना बहुत ज़रूरी है और पूरी सूरत का मुत़ालआ़ करना ना गुज़ीर है ।

वाक़िआ़ येह है कि मुसलमानों में और मुशरिकीने मक्का के दरमियान अम्न का मुआ़हदा हो चुका था, मुशरिकीन ने इस मुआ़हदे को तोड़ दिया, उन्हें चार महीने का वक़्त दिया गया कि वोह इस मुआ़हदे की

तृरफ़ वापस लौट आएं वरना उन के ख़िलाफ़ जंग की जाएगी, पूरी आयत येह है :

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَ خُذُوْهُمْ وَ احْصُرُوْهُمْ وَ اقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍۚ فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِیْلَهُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۝۵

(پ۱۰، التوبۃ:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब हुरमत वाले महीने निकल जाएं तो मुशरिकों को मारो जहां पाओ और उन्हें पकड़ो और क़ैद करो और हर जगह उन की ताक में बैठो फिर अगर वोह तौबा करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो उन की राह छोड़ दो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ।

इस आयत में उन मुसलमानों को हुक्म दिया गया है जिन्हों ने मुशरिकीन से मुआ़हदा किया था और मुशरिकीन ने उस मुआ़हदे को तोड़ दिया, कोई भी खुले ज़ेहन से इस मुआ़मले पर ग़ौर करे और इस आयत के तारीख़ी पस मन्ज़र को सामने रखे तो वोह ज़रूर इस बात से इत्तिफ़ाक़ करेगा कि येह आयत इस बात की शहादत के तौर पर पेश नहीं की जा सकती कि इस्लाम क़त्लो ग़ारत, ख़ून बहाने और बरबरिय्यत की तरग़ीब देता है और जो लोग दाइरए इस्लाम में दाख़िल नहीं हैं उन के क़त्ले आ़म का हुक्म देता है ।

इस से अगली आयत इस ए'तिराज़ का जवाब देती है, अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَ اِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى یَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब अगर कोई मुशरिक तुम से पनाह मांगे तो उसे पनाह दो कि वोह अल्लाह का

مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝ (پ۱۰، التوبہ:٦)

कलाम सुने फिर उसे उस की अम्न की जगह पहुंचा दो येह इस लिये कि वोह नादान लोग हैं ।

कुरआने पाक सिर्फ़ इस बात की हिदायत नहीं देता कि जो मुशरिक पनाह मांगे उस को पनाह दो बल्कि उस की हिफ़ाज़त की भी ज़मानत देता है, आज के दौर में कौन सा ऐसा मिलेट्री कमान्डर है जो अपनी फ़ौज को इस बात का हुक्म दे : "न सिर्फ़ पनाह मांगने वालों को पनाह दो बल्कि उन को हिफ़ाज़त के साथ महफ़ूज़ जगह पर पहुंचा भी दो ।" जब कि इस बात का हुक्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में फ़रमाया है ।

इस्लाम का पैग़ाम आफ़ाक़ी है

सुवाल क्या येह दुरुस्त है कि इस्लाम सिर्फ़ अहले अ़रब का दीन है ?

जवाब येह सोच सिर्फ़ इस एक ह़क़ीक़त से ग़लत़ साबित हो जाती है कि दुन्या में अ़रब मुसलमानों की ता'दाद कुल मुसलमान आबादी का पन्दरह से बीस फ़ीसद है, इन्डियन मुसलमान अ़रब मुसलमानों से ज़ियादा हैं और इन्डोनेशिया में मुसलमान इन्डिया से भी ज़ियादा हैं, येह ग़लत़ फ़हमी शायद इसी वज्ह से होती है कि मुसलमानों की पहली कई नस्लें अक्सर अ़रब थीं, कुरआने मजीद अ़रबी में है और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस भी अ़रबी है ।

तारीख़ इस बात की गवाही देती है कि आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और पहले के मुसलमानों ने इस्लाम को तमाम क़ौमों, तमाम नस्लों और तमाम इन्सानों

तक पहुंचाने की भरपूर कोशिश फ़रमाई, इस्लाम के इब्तिदाई अय्याम ही में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कई सहाबा मुख़्तलिफ़ मुल्कों, ज़बानों और तहज़ीबों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले थे, इन में से ह़ज़रते बिलाले ह़बशी एक अफ़्रीक़ी गुलाम थे, ह़ज़रते सुहैब का तअ़ल्लुक़ यूरोप या'नी "रूम" से था, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम यहूदी आ़लिम थे और ह़ज़रते सलमान फ़ारिसी ईरान से थे। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم)

इस के इलावा येह जानना भी ज़रूरी है कि न तो सारे के सारे मुसलमान अ़रबी हैं और न ही सब के सब अ़रब मुसलमान हैं, एक अ़रबी शख़्स मुसलमान, ईसाई, यहूदी या दहरिय्या कुछ भी हो सकता है, बा'ज़ लोग तुर्कियों और ईरानियों को भी अ़रब समझ लेते हैं ह़ालांकि वोह बिल्कुल अ़रब नहीं हैं, उन की ज़बानें अलग हैं, उन की तहज़ीबें, आ़दातो अत़्वार अ़रबों से बिल्कुल जुदा हैं।

इस्लाम की सच्चाई तमाम इन्सानों के लिये है, इन का तअ़ल्लुक़ किसी भी रंग व नस्ल, क़ौम, क़बीले, तहज़ीब या ज़बान से हो, आप नाइजीरिया से बोसनिया तक और मलेशिया से अफ़ग़ानिस्तान तक नज़र दौड़ाएं तो येह इस बात का काफ़ी सुबूत होगा कि इस्लाम एक अ़बक़री (Universal) दीन है और येह पैग़ामे हिदायत और पैग़ामे अम्न सारी इन्सानिय्यत के लिये है, इस का ज़िक्र करना भी फ़ाइदे मन्द होगा कि मुसलमानों की एक अच्छी ख़ासी ता'दाद अमरीकन और यूरोपियन है जिन की ज़बानें और तहज़ीबें मुख़्तलिफ़ हैं, वोह दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो रहे हैं ह़ालांकि अ़रबों का कुछ भी उन के अन्दर नहीं है, क़ुरआन वाज़ेह़ त़ौर पर इरशाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ (پ۲۲، سبا:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ महबूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते ।*

सुवाल सब अदयान अपने मानने वालों को अच्छे आ'माल करने का हुक्म देते हैं तो इन्सान मुसलमान ही बन कर अच्छे अ़मल क्यूं करे या मुसलमान होना ही क्यूं ज़रूरी है ?

जवाब क़ुरआने करीम में **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन इरशाद फ़रमाता है :

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (پ۶، المائدہ:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया ।*

मज़ीद इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ (پ۳، اٰل عمران:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** के यहां इस्लाम ही दीन है ।*

फिर फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۸۵﴾ (پ۳، اٰل عمران:۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वोह हरगिज़ उस से क़ुबूल न किया जाएगा और वोह आख़िरत में ज़ियांकारों (नुक़्सान उठाने वालों में) से है ।*

इस्लाम **अल्लाह** तआ़ला का आख़िरी पैग़ाम है, इस में इन्सानिय्यत के लिये कामिल हिदायत मौजूद है, इस्लाम उन ग़लत़ियों की इस्लाह़ करता है जो पिछले ज़मानों में अदयान के अन्दर दाख़िल हो गईं, उन का तअ़ल्लुक़ अ़क़ाइद से हो या आ'माल से, जैसा कि किसी भी मुल्क में जब एक नया क़ानून बनता है तो वोह पहले क़ानून को मन्सूख़ करता है और पिछले क़वानीन पर तरजीह़ पाता है, इस्लाम ने आ कर सब अदयान को मन्सूख़ कर दिया, अब दीन सिर्फ़ इस्लाम है, लिहाज़ा अच्छे आ'माल की क़बूलिय्यत का दारो मदार इस्लाम को इख़्तियार करने पर है क्यूंकि इस की ता'लीमात न बदलीं और न मन्सूख़ हुईं।

बेशक सारे अदयान ख़ास कर जो आस्मानी अदयान हैं (मसलन ईसाइय्यत, यहूदिय्यत और दीने इस्लाम) अच्छे अख़्लाक़, दियानत दारी, अम्न वग़ैरा की ता'लीम देते हैं लेकिन इस्लाम की ख़ुसूसिय्यत येह है कि इस्लाम इस से बहुत आगे है कि वोह सिर्फ़ लोगों को दियानतदार और खरा रहने की ता'लीम दे बल्कि इस्लाम बीमारी की तशख़ीस करता है और फिर उस का इ़लाज भी बताता है।

इस्लाम इन्सान के मसाइल का अ़मली ह़ल पेश करता है, इनफ़िरादी और इजतिमाई बुराई को ख़त्म करता है, इस्लाम ख़ालिके़ काइनात की त़रफ़ से इन्सानिय्यत के लिये हिदायत है और ख़ालिक़ ही बेहतर जानता है कि उस की मख़्लूक़ के लिये क्या बेहतर है, इसी लिये इस्लाम को इन्सानों का फ़ित़री दीन माना गया है।

ह़र्फ़े आख़िर

हम अपने क़ारिईन से दरख़्वास्त करते हैं कि वोह अपने आप से येह सुवाल पूछें कि इस्लाम के ख़िलाफ़ मन्फ़ी प्रोपेगेन्डा और ग़लत़ मा'लूमात फैलाने के पीछे कौन सा जज़्बा और ऐजन्डा छुपा हुवा है ? अगर इस्लाम भी किसी आ़म मज़हब की त़रह़ झूटा मज़हब होता, समझ और अ़क़्ल से दूर होता तो क्या इतने सारे लोगों को ज़रूरत पड़ती कि वोह इस्लाम के बारे में झूटी और ग़लत़ बातें ईजाद कर के फैलाएं !

ह़क़ीक़त येह है कि इस्लाम वोह सच है जिस की बुन्यादें बहुत मज़बूत़ हैं, इन मज़बूत़ बुन्यादों पर खड़ा हुवा मुसलमान बिग़ैर किसी शको शुबा के **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद को मानता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी मानता है।

आख़िर में येह अ़र्ज़ भी करेंगे कि दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत जानने के लिये हमें यहां वहां से मा'लूमात लेने के बजाए क़ुरआनो ह़दीस का मुत़ालआ़ करना चाहिये और मुख़्लिस व बा अ़मल नेक मुसलमानों से इस दीन की मा'लूमात ह़ासिल करनी चाहियें, मीडिया या बे अ़मल जाहिल और फ़ासिक़ मुसलमान से नहीं।

وَمَا عَلَیْنَاۤ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ

مآخذ ومراجع

کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ و سال طبع
كنز الإيمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ
الدر المنثور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
روح البيان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ
مصنف عبد الرزاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
صحيح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
صحيح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی عرب شریف ۱۴۱۹ھ
سنن ابن ماجه	امام ابو عبد الله محمد بن یزید ابن ماجہ متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
سنن أبی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۴ھ
المستدرک	ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ
كنز العمال	علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
النووی على المسلم	امام محی الدین ابو زکریا یحییٰ بن شرف نووی متوفی ۶۷۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۱ھ
فتح البارى	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ

عمدة القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
منح الروض الأزهر	شیخ علی بن سلطان المعروف بملا علی قاری متوفی ۱۰۱۴ھ	باب المدینہ کراچی
الفتاوی الرضویة	اعلٰی حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
الشمائل المحمدیه	امام محمد بن عیسٰی الترمذی متوفی ۲۷۹ھ	داراحیاء التراث بیروت
المواهب اللدنية	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی متوفی ۹۲۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۶ھ
شرح المواهب	محمد زرقانی بن عبدالباقی بن یوسف متوفی ۱۱۲۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ

जन्नत की दुआ

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने तीन मरतबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जन्नत का सुवाल किया तो जन्नत दुआ करती है कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस को जन्नत में दाख़िल कर दे और जिस शख़्स ने तीन मरतबा दोज़ख़ से पनाह मांगी तो दोज़ख़ दुआ करती है कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस को दोज़ख़ से पनाह में रख।

ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة الجنة ونعیمها، ۲۵۷/۴، حدیث:۲۵۸۱

शो'बए इस्लाही कुतुब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की तरफ़ से पेशकर्दा कुतुबो रसाइल

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़्रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-631-690-9
0126166

MC 1286

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net